जैन धर्म की प्राचीनता व उसकी मुख्य शाखाएँ

जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है जैसा कि शास्त्रों, अभिलेख व भूखनन से प्राप्त अवशेषों से व परीक्षण–प्रयोग से स्पष्ट होता है। लेकिन आज के युग में यह पूछा जा सकता है कि जैन धर्म की उत्पत्ति कब से हुई है? इसका उत्तर यही होगा कि जैन धर्म अनादिकाल से व प्राचीनतम् है। जैन विचारधारा के अनुसार इस कल्प काल में अर्थात् तीसरे आरे के अन्तिम कुलकर राजा नाभिराजा के पुत्र ऋषभदेव भगवान प्रथम तीर्थंकर हैं। उन्होंने फाल्गुन कृष्णा ।। को केवल ज्ञान प्राप्त कर धर्म प्ररूपणा की थी। यही जैन धर्म विश्व प्रसिद्ध है। लेकिन वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान के पूर्व भी अनंत चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला हो चुकी है। जिससे कल्पना की जा सकती है कि जैन धर्म कितना प्राचीन हो सकता है।

ऋषभदेव भगवान मानव जाति के प्रथम उद्धारक थे, जिन्होंने समाज की संरचना कर सामाजिक व्यवस्था दी। भगवान ऋषभदेव को वैदिक धर्म में अवतार माना है। भगवान ऋषभदेव की स्तुति की गयी है। यह जैन धर्म स्वतंत्र धर्म है, पृथक इकाई है, किसी की शाखा नहीं है।

सर्वप्रथम वैदिक धर्म के शास्त्रों को देखें जिनमें भगवान ऋषभदेव का उल्लेख है :–

1. असूत पूर्वः वृषभौ ज्यायनिमा अरयः शुरूघः सन्ति पूर्वो।।
   दिवो न पाता विदथस्प धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदि बोदधाथे।।

   – ऋग्वेद 5–38

   इसके अतिरिक्त ऋग्वेद 213412, 213816, 415813 में ऋषभ का नाम उल्लेखित है।

2. ऊँ नमो अर्हन्तो ऋषभौ पवित्र प्रूरूहतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं
   परम् साहसं स्तुतं वारं शत्रुंजयं तं पयुरिंद्रमाहुरिति स्वाहा

   – सामवेद अध्याय 25 मंत्र 19

3. अहोमुचं वृषभं यज्ञियानं विराजन्तं प्रथम मध्वराणाम्
   अपां न पातिमश्वितां हुवे श्रिय इन्द्रियेण इन्द्रियं दत्त भोजः

   – अथर्व वेद कारिका 1914214

   अथर्व वेद में ऋषि भगवान ने ऋषभदेव भगवान का आह्वान करने के लिए मानवगण को प्रेरणा दी।

4. यजुर्वेद अध्याय 20 मंत्र 46 में भी ऋषभदेव का उल्लेख है।

इस प्रकार चारों वेदों में भगवान ऋषभदेव का उल्लेख स्पष्ट है।

इसी प्रकार पुराणों में भी यह उल्लेख मिलता है कि ऋषभदेव नाम के परम् पुरुष हुए हैं, जिनके पिता नाभिराजा थे व माता मरूदेवी थी। इसके लिये :–

1. वायु पुराण पूर्वार्ध अध्याय 5–33 देखें।
2. ब्रह्माण्ड पुराण अनुषंगपाद पूर्वा श्लोक 60 देखें।
3. वराह पुराण अध्याय 74 देखें।
4. कुंभ पुराण अध्याय 41 श्लोक 37 को देखें।
5. स्कंध पुराण माहेश्वर खण्डे कौमार खण्ड 'अ' 37 को देखें।
6. शिवपुराण के 4–47–48 को देखें।
7. प्रभास पुराण – 49 को देखें।
8. इसके साथ–साथ महाभारत के शान्ति पर्व में भी भगवान ऋषभदेव को महायोगी व अर्हंत् माना है।
9. इसके अतिरिक्त भी भगवत् पुराण 5–6 – 14–659 में ऋषभदेव भगवान का जन्म रजोगुणी जनों को कैवल्य की शिक्षा देने के लिये हुआ था, और यह भी कहा है कि जिन्होंने विषय भोगों की अभिलाषा करने के कारण अपने वास्तविक ध्येय से भूले बिखरे मानवों को करूणावश अभय व आत्म–लोक का उपदेश दिया।
10. भगवान बुद्ध ने भी जैन तीर्थंकर के 23वें तीर्थंकर के चारों यामों को पूर्णतया स्वीकार किया है, कृपया देखें –

    (चार तीर्थंकर (पं. सुखलाल) पार्श्वनाथ का चातुर्मास धर्म पृ. 20/31)

    जैन तीर्थंकरों के बारे में किसने व क्या कहा – इसको भी देखा जाना चाहिए।

जैन दर्शन के 23वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के बारे में **श्री डॉ. हर्मन जेकोबी** ने भगवान पार्श्वनाथ को ऐतिहासिक पुरुष कहा।

भगवान पार्श्वनाथ का समय काल ईस्वी पूर्व 9 शताब्दी माना जाता है अनेक लेखकों का भी मत यहीं है पार्श्वनाथ का व्रत का प्रभाव वैदिक संस्कृति पर भी पड़ा।

अरिष्ट नेमिनाथ भगवान जो 22वें तीर्थंकर है उनका नाम भी **ऋग्वेद** में चार बार प्रयुक्त हुआ है।

ऋग्वेद – 1/14/89/6 –, 1/24/180/10,

3/4/53/17 –, 10/12/178/1

अरिष्ट नेमि महाराज कृष्ण के चचेरे भाई थे।

ऋग्वेदकार ने अरिष्ट नेमि को तार्क्ष्य अरिष्ट नेमि लिखा है, तार्क्ष्य शब्द का प्रयोग भी अरिष्ट नेमि के लिये है।

प्रभास पुराण में भी अरिष्टनेमि की स्तुति की गयी है।

यजुर्वेद में भी अरिष्ट नेमि का नाम आया है।

(अध्याय 9 मंत्र 25 पृ. 43)

इस प्रकार कई अन्य उदाहरण हैं।

इक्कीसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी और उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लीनाथ जी का नाम वैदिक धर्म में नहीं मिलता।

अठारहवें तीर्थंकर श्री अरनाथ जी का वर्णन अंगुत्तर निकाय में आता है जहाँ पर महात्मा से पूर्व सात तीर्थंकर हो गये और सातवें तीर्थंकर का नाम 'अरक' था। उस समय मनुष्य की आयु 60 हजार वर्ष होती थी।

आयु की विवेचना करें तो –

भगवान अरनाथ की आयु 84 हजार वर्ष थी, उसके बाद होने वाले तीर्थंकर मल्लिनाथ की आयु 55 हजार वर्ष थी। इस तरह दोनों के मध्य ही आयु आती है।

16वें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ जी हैं। शांतिनाथ जी अपने पूर्व भव में मेघरथ थे, तब कबूतर की रक्षा करने की कहानी अन्य ग्रन्थों में भी मिलती हैं। इस प्रकार से जैन परंपरा के अनुसार ही मनुष्य मरते दम तक जीव की रक्षा करता हैं। **सोरेन्शन** ने महाभारत के विशेष नामों का कोष बनाया, इस कोष में सुपार्श्व, चन्द्र, सुमति, के नाम जो जैन तीर्थंकरों के हैं, आये हैं। महाभारतकार ने इन तीनों को असुर बताया है। वैदिक धर्म की मान्यतानुसार जैन धर्म को असुरों का धर्म कहा है, उस समय असुरलोक में अर्हंत धर्म के उपासक थे। विष्णु पुराण (3/17/18), पद्म पुराण (अध्याय 13 श्लोक 170–413), मत्स्य पुराण (24/43/49), देवी भागवत (4/13/54–57) व महाभारत में असुरो को अर्हंत या जैन धर्म का अनुयायी माना गया है।

महाभारत में विष्णु व शिव के सहस्त्र नाम बताये हैं। नामों की सूची में श्रेयांश, अनंत, धर्म, शांति और संभव के नाम भी विष्णु के आये हैं जो जैन धर्म के तीर्थंकर हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन तीर्थंकरों के प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के कारण ही इनको वैदिक धर्म में विष्णु के नाम से जाना है।

इन सब महापुरुषों को असुर कहा गया है – क्योंकि वे वेद विरोधी थे। वेद विरोधी होने के कारण उनको श्रमण–परंपरा में होना चाहिए, ये स्पष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ जी के बारे में भी महाभारत में शिव व अजित को एक ही चिन्हित किया गया है और बोध गाथा में भी अजित सेन का नाम आता है। ये अजित 91 कल्प के पूर्व प्रत्येक बुद्ध हो गये हैं।

इस प्रकार से प्रथम तीर्थंकर से 24वें तीर्थंकर तक का वर्णन वैदिक धर्म व बौद्ध धर्म में आता है और उनको महापुरुष माना है, प्रभुत्व व्यक्तित्व वाला माना है और उनकी स्तुति की है।

इतिहास के आधार पर देखा जाये तो विभिन्न विद्वानों के विचार जानना आवश्यक हैं। जो कि इस प्रकार है :–

1. प्रसिद्ध इतिहासकार एवं वाड़म के ख्याति नाम विद्वान **डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल** ने स्वीकार किया है कि भारत का नाम, जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से ही पड़ा।
2. मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त मुद्रा जो भारत सरकार के केन्द्रीय संग्रहालय में सुरक्षित है उसका अध्ययन करने पर पाया कि यह जैन पुरातत्व की एक निधि है कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानमग्न ऋषभदेव ही है, इसमें त्रिशूल, जो रत्नत्रय का प्रतीक है जिसका अर्थ सम्यगदर्शन, सम्यगचारित्र, सम्यगज्ञान है। इसके पास भरत को राजसी ठाठ में हाथ जोड़े नत मस्तक बैठे दिखाया गया है।
3. **श्री पी.आर. देशमुख ने अपनी पुस्तक ''इट्स सिविलाइजेशन एण्ड हिन्दू कल्चर''** में लिखा है ''जैनों के पहले तीर्थंकर सिंधु सभ्यता से ही थे।''
4. **जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान हर्मन जेकोबी** ने ऐतिहासिक शोध करके यह सिद्ध किया है कि ऋषभदेव भगवान जैन धर्म के संस्थापक और प्रथम तीर्थंकर हैं।
5. **प्रो. स्टीवेन्सन के अनुसार** – जैन धर्म व वैदिक धर्म के अनुयायी दोनों ही ऋषभदेव को संस्थापक मानते हैं।

वेदों में उक्त प्रकार से अनेक तीर्थंकरों का उल्लेख आता है जिनकी पुष्टि **डॉ. राधाकृष्णन, डॉ. अलब्रेट बेबर, प्रो. विरूपाक्ष वाडियर, डॉ. विमलाचरण लाहा** द्वारा की गयी है तथा प्रो. विरूपाक्ष वाडियार जैन तीर्थंकरों का नाम उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि **ऋग्वेद आदि ग्रन्थों की ख्याति भी ऋषभ के ज्ञान से ही हुई है।**

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने **पादरी रेवरेण्ड एब्बे जे.ए.** सन् 1817 में डुबाई द्वारा लिखित पुस्तक में जैन धर्म के बारे में कहा, **निःसन्देह जैन धर्म ही सारे संसार में एक सच्चा धर्म है और यही सभी मनुष्यों का आदि धर्म है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** लिखते है **ग्रन्थों व सामाजिक व्याख्यानों से पता चलता है कि जैन धर्म अनादि है। जैन धर्म प्राचीनता में प्रथम है। इसके अनेक प्रमाण हैं।**

बर्मा के मुख्य न्यायाधीश मा. यूचान तुन ऑग ने जापान के शिमिज् नगर में आयोजित विश्व धर्म परिषद दिनांक 16 दिसम्बर 1956 को आयोजित सम्मेलन में अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा कि जैन धर्म संसार के ज्ञात सभी धर्मों में से प्राचीन है, जिसका घर भारत है।

इन सभी से यह स्पष्ट होता है कि जैन धर्म सबसे प्राचीन (अनादिकालीन) है।

जैन धर्म की मुख्य शाखाएँ

अपनी–अपनी मान्यताओं के आधार पर पूजा पद्धति में भेद होने के कारण जैन धर्म दो भागों में विभक्त हुआ।

1. श्वेताम्बर, 2. दिगम्बर

श्वेताम्बर – श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार श्वेत वस्त्र धारण कर पूजा करते हैं, फल–फूल, केसर, चन्दन, चढ़ाकर अपनी भावनाओ के साथ पूजा करते हैं।

दिगम्बर – श्वेत वस्त्र भी मान्य नहीं है और केवली आहार नहीं लेते।

श्वेताम्बर व दिगम्बर में कुल 84 अन्तर है, लेकिन मुख्य रूप से निम्न भेद हैं :–

1. श्वेताम्बर केवली को आहार लेना स्वीकार करते हैं जब कि दिगम्बर नहीं।
2. श्वेताम्बर मुनि वस्त्र धारण करते है, जबकि दिगम्बर मुनि निर्वस्त्र रहते हैं।
3. श्वेताम्बर सभी को (पुरुष–स्त्री) को मोक्ष में जाना मानते हैं, लेकिन दिगम्बर केवल पुरुष को मानते है।
4. श्वेताम्बर की मान्यता के अनुसार महावीर भगवान के बाद में 12 वर्ष का दुष्काल पड़ने पर 32 आगम सुरक्षित रहे और 13 खण्डित हो गये उनको बाद में बनाये, जबकि दिगम्बर ऐसा नहीं मानते, ये 12 आगम ही बचने की बात स्वीकार करते हैं।
5. श्वेताम्बर 12 अंग और 33 उपागम कुल मिलाकर 45 सूत्र बतलाते हैं। जबकि दिगम्बर 12 अंग ही मानते हैं, यह सही है कि नामों में अन्तर नहीं है।
6. श्वेताम्बर तीर्थंकरों को पाठशाला में जाना बताते है, जबकि दिगम्बर गुरु के बिना दीक्षा लेना ही मानते हैं।
7. श्वेताम्बर का मानना है कि तीर्थंकरों के दीक्षाके समय इन्द्र ने कपड़ा ओड़ाया, लेकिन दिगम्बर नहीं मानते हैं।
8. श्वेताम्बर का मानना है कि बिना गणधर के महावीर भगवान की कुछ वाणी (प्रथम देशना) व्यर्थ गयी जब कि दिगम्बर ऐसा नहीं मानते।
9. श्वेताम्बर का मानना है कि भगवान महावीर का गर्भ ब्राह्मणी का था जब कि दिगम्बर ऐसा नहीं मानते
10. श्वेताम्बर केवल 2 तीर्थंकर को अविवाहित मानते हैं जब कि दिगम्बर 5 को मानते हैं।
11. श्वेताम्बर केवल्यज्ञानी की पूजा करने की मान्यता रखते हैं जब कि दिगम्बर नहीं मानते वरन केवल प्रणाम करने को मानते हैं।

श्वेताम्बर समुदाय कई गच्छों में विभक्त हुआ– जैसे 1. चैत्यवासी, 2. वृहद्गच्छ, 3. खरतरगच्छ, 4. तपागच्छ, 5. आचलगच्छ। ये सभी गच्छ मूर्ति पूजक हैं।

1. **चैत्यवासी** – ये श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों समुदाय में है। ये चैत्यों में अर्थात उपाश्रय (मठ) में स्थायी रूप से निवास करते हैं। वे श्वेताम्बर में यति कहलाते है। दिगम्बर में भट्टारक कहलाते हैं और वे नग्न रहते थे, लेकिन मुस्लिम शासन के दुर्व्यवहार के कारण वस्त्र धारण कर रहने लगे।

2. **वृहद्गच्छ** – संवत् 994 में उद्योतन सूरिजी ने तेली ग्राम (सिरोही जिला का तेलपुर) के वृहद् वट वृक्ष की छांया में सर्वदेवसूरि को सूरिपद दिया। इसके पूर्व में प्रचलित गच्छ निर्ग्रन्थ गच्छ था उसको तब से वृहद्गच्छ कहा गया। (सिरोही कोटड़ा में प्राप्त शिलालेख सन् 1086 के अनुसार)

3. **आँचलगच्छ** – संवत् 1225 सुविहतगच्छ का नाम ही आँचलगच्छ में परिवर्तित हुआ। कहा जाता है कि श्री कुमारपाल के संबंध जनश्रुति के अनुसार आचार्य आर्य रक्षित के श्रावक मंत्रीवर कपर्टी द्वारा अपने आँचल से भूमि साफ करके श्री हेमचन्दसूरि को वन्दन करने को विधि संगत बतायी, जिसके कारण आँचलगच्छ नाम पड़ा।

   खरतरगच्छ – वृहदगच्छ ही खरतरगच्छ हुआ। संवत् 1073 में पाटन के राजा श्री दुर्लभराज के दरबार में आचार्य जिनेश्वरसूरि ने पंचासरा चैत्य पार्श्वनाथ के प्रमुख अधिष्ठाता श्री सूराचार्य को शास्त्रार्थ में परास्त कर खरतर विरूद पद प्राप्त किया। तब से ये खरतरगच्छ कहलाये। कुछ विद्धान खरतरगच्छ की उत्पत्ति संवत् 1204 से आचार्य श्री जिनदत्तसूरि से मानते हैं, क्योंकि वे काफी सच्चे व बोलने में तीक्ष्ण थे, लेकिन यह सही नहीं है।

4. **तपागच्छ** – संवत् 1282 में आचार्य श्री जगच्चन्द्रसूरि ने जीवनभर आंयबलिक तप करने के कारण मेवाड़ के महाराणा रावल जैत्रसिंह ने ''तपा'' विरूद की पदवी दी। तब से बड़गच्छ ही तपागच्छ कहलाया। यह निर्ग्रन्थगच्छ की ही एक शाखा है।

उक्त सभी गच्छ मूर्तिपूजक हैं। मूर्तिपूजक के अतिरिक्त अमूर्तिपूजक भी हैं, जो निम्नानुसार है :–

1. **स्थानकवासी** (बाईसपन्थी, बारहपन्थी) सिरोही जिले के अरटवाड़ा ––– में ओसवाल वंश के दफ्तरी गौत्र के श्री लोकाशाह पुत्र हेमाशाह की प्रेरणा से संवत् 1531 में भाण आदि 44 व्यक्तियों ने मूर्ति पूजा का विरोध किया और दीक्षा ग्रहण की। इसके पूर्व संवत् 1508 में मूर्ति के उत्थापन का कार्य प्रारम्भ कर विरोध प्रकट किया। कालान्तर में इसके अनुयायी ढूंढ़ाण प्रदेश में अधिक विचरण करने के कारण इनको ढूंढिया भी कहा जाता रहा है और इनके निमित्त बने स्थानकों में रहने के कारण स्थानक वासी कहलाने लगे और बाद में एक साथ 22 आचार्य बने इसलिये बाइसपन्थी कहा जाने लगा। पूर्व में मुँहपति बाँधने का रिवाज नहीं था। संवत् 1708 में लवजी मुनि ने मुँहपति बाँधने की प्रथा चलाई।

2. **तेरापंथी** – संवत् की 16वीं सदी में दिगम्बर में तारक स्वामी ने मूर्ति पूजा का विरोध किया। तारक स्वामी के अनुयायी तारक स्वामी द्वारा रचित ग्रन्थों की पूजा करते हैं। तेरह सिद्धान्तों को मानने के कारण तेरहपंथी कहलाये। श्वेताम्बर में स्थानक वासी के एक श्रमण श्री भीखण जी एक आचार्य एक आचार एवं दान दया को लेकर विरोध कर विद्रोह कर दिया और संवत् 1817 में उन्होंने तेरापंथ समुदाय की नींव डाली और इस समुदाय के प्रथम आचार्य रहे। उक्त सभी श्वेताम्बर समुदाय के अधिकांश ओसवाल है। वैसे जमाने के अनुसार आज दान दया की मान्यता धीरे–धीरे बदल गई है, क्योंकि आडम्बर में वृद्धि हुई है। दान को विसर्जन कहते है।

ओसवाल की उत्पत्ति :–

श्री पार्श्वनाथ भगवान के निर्वाण के पश्चात् अर्थात ईसा पूर्व 770 वर्ष उनके पाँच पट्टधर (गणधर) क्रमशः 1– शुभदत्त, 2– हरिदत्त, 3– आर्य समुद्र, 4– केशी और 5– रत्न प्रभ।

इनमें से कुछ गणधर पार्श्वनाथ परंपरा के रहे और कुछ महावीर भगवान के संघ में सम्मिलित हो गये और पार्श्वनाथ भगवान के गणधर श्री रत्नप्रभ सूरि ने (ईसा पूर्व 400 वर्ष) उपकेश पट्टनम् (औसियां) में महाजन वंश की स्थापना की और यही बाद में ओसवाल वंश कहलाया। भगवान महावीर के 52 वर्ष बाद रत्नचूड़ विद्याधर से दीक्षा लेकर आचार्य रत्नसूरी जी बने तथा औसिया नगरी में आपने 345000 लोगों को नवकार मंत्र की दीक्षा देकर ओसवाल बनाये। वे सारे विश्व में फैल गये व ओसवाल कहलाए।

इसके बाद में ओसवाल वंश विभिन्न गच्छ व समुदाय में विलय हो गया, जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, दिगम्बर समुदाय का वर्चस्व दक्षिण भारत में अधिक रहा।

दिगम्बर समुदाय की उत्पत्ति :–

विद्धानों का मत है कि महावीर भगवान के निर्वाण के पश्चात् (600 वर्ष बाद) लगभग संवत् 140 (सन् 84) में रथवीरपुर नगर के शिवभूति नामक श्रमण ने अपने गुरु आचार्य कृष्णाचार्य के साथ वैचारिक मतभेद में यह बतलाया कि नग्नत्व ही मोक्ष प्राप्त होने का साधन है। इसी परंपरा के अनुयायी दिगम्बर कहलाने लगे। आज भी मंगलाचरण में दिगम्बर कुन्दकुन्दाचार्य का नाम लेते हैं, यह सम्प्रदाय भगवान महावीर को नग्न साधना पद्धति का रक्षक कहलाता है।

❑❑❑

श्री शीतलनाथ जी का मंदिर, घंटाघर, उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर घंटाघर से राजमहल की ओर जाते समय मुख्य सड़क के दाहिनी ओर स्थित है। मेवाड़ के महाराणा कर्णसिंह के पुत्र श्रवण जी ने तेरहवीं शताब्दी में जैन धर्म स्वीकार किया और इनकी सन्तान जैन अनुयायी हो गयी। मेवाड़ के शासक सिसोदिया वंशज कहलाते हैं, इसी आधार पर ये जैन अनुयायी भी सिसोदिया गोत्र से जाने गये।

इसके बाद महाराणा कर्णसिंह के सबसे छोटे पुत्र सरवण जी ने जैन धर्म स्वीकार किया और सरवण जी के पुत्र सरोपत जी को महाराणा राहप जी ने पांच गाँव की जागीरी देकर महता की पदवी दी। उसके बाद इनके वंशज सिसोदिया महता कहलाने लगे।

सरोपत जी अकबर के समय चित्तौड़गढ़ पर हुए आक्रमण में शहीद हुए। उनके एक पुत्र मेघराज जो महाराणा उदयसिंह के साथ चित्तौड़गढ़ से निकल कर उदयपुर आ गये, उनकी संतान उदयपुर में मेहतों का टिंबा व मालदास की सेहरी में रहती है।

प्राचीन परंपरा के अनुसार जब महलों की नींव रखी जाती थी, उसी दिन उनके मंत्री जो मुख्य रूप से जैन होते थे, वे मंदिर की स्थापना भी किया करते थे।

उदयपुर के महाराणा उदयसिंह जी ने उदयपुर महल की नींव वि.सं. 1616 में रखी।

उसी दिन (मान्यता के आधार पर) मेहता परिवार के श्री मेघराज जी मेहता की ओर से शीतलनाथ जी के मंदिर की भी नींव रखी गयी। कहा जाता है कि मंदिर में बिराजित प्रतिमा मेहता परिवार अपने साथ चित्तौड़ से लाये थे और जब तक मंदिर में बिराजित नहीं हुई तब तक वे प्रतिमा को पेड़ पर बांध कर रखते थे और उसकी पूजा अर्चना किया करते थे।

महाराणा के महल के निर्माण के साथ–साथ मंदिर का निर्माण भी चलता रहा वि.सं. 1624 में मंदिर का निर्माण होना बताया जाता है। मंदिर के बाहर शिलालेख के आधार पर महाराणा अमरसिंह द्वितीय के आदेशात (आगे स्पष्ट नहीं है जमीन में दबा है)। इससे स्पष्ट है बावन जिनालय मंदिर इनके काल में बना हो। इस मंदिर में बिराजित प्रतिमा व उपाश्रय का विवरण निम्न प्रकार से हैं :–

निज मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ :–

1. मध्य में मूल नायक श्री शीतलनाथ जी की प्रतिमा विराजमान है। श्वेत पाषाण प्रतिमा 15'' ऊँची है व 7'' ऊँचे सर्व धातु के सिंहासन पर प्रतिष्ठित है। सिंहासन के सामने हाथी, घोड़े, देवी–देवता आदि उत्कीर्ण किए हुए हैं और नीचे की पंक्ति के मध्य में देवी तथा आसपास हाथ जोडे हुए 2 पुरुष बने हैं।

परिकर :

परिकर सर्वधातु का है उसकी ऊँचाई (सिंहासन को छोड़कर) 27'' है। यह चौबीस तीर्थी परिकर है, जिसमें मूलनायक जी सहित 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

सिंहासन के ऊपर यह लेख विद्यमान है :–

''संवत् 1693 वर्षे कार्तिक वदी 8 सोमवासरे परिकरः कारितः आसपुर वास्तव्य वृद्धि शाखाया जातीय पं. कान्हा सुत पं. केसर भार्या केसर दे तत्सुत परदमोदी स्व कुटुम्ब युतैः भट्टारक श्री विजयदेव सूरीश्वर तत्पट्टे प्रभाकर आचार्य श्री श्री श्री विजयसिंह सूरीश्वर निर्देशात् संकल संघस्य पं. श्रीमती चंदगणिसि वासक्षेपः। श्री सकल संघस्य कल्याणं भूयात्। सूत्रधार त्रिक मनसुतः श्रेयोस्तु''

2. प्रवेश करते हुए बाएँ (मूल नायक जी के दाहिनी तरफ) श्री ऋषभदेव जी की प्रतिमा विराजमान है। यह श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची सुन्दर प्रतिमा है। इस पर यह लेख अंकित है :–

''संवत् 1632 वर्षे माघ सुदि 10 बुधे श्री आदिनाथ बिंब कारितं श्री संघेन तपागच्छे प्रधिराज पूज्य श्री हीर विजय सूरि विजय राज्ये प्रतिष्ठितं श्री कार्यं श्री कल्याण (विक्रम गणिभि)''

प्रतिमा के चारों ओर सर्व धातु का भव्य परिकर है। सिंहासन सहित इसकी ऊँचाई 47'' हैं। उस पर नीचे यह लेख है :–

''महाराणा श्री जगतसिंह जी विजयि राज्ये संवत् 1701 वर्ष जेठ वदि 1 दिन भट्टारक श्री विजय सूरीश्वर पट्ट प्रभावक आचार्य श्री विजयसिंह सूरि निर्देशात् श्री उदयपुर वासि सा. समरथ तद्भार्या नाथी तत्पुत्र साईसा तत्पुत्र सा. चंद्र राज चंद्र भाणां तवाश्री ऋषभदेवस्य परिकरः करापितः ताष्वसा निदेशात वामधार धीर कुशल गणीना वासक्षेपः कृतः तथा बाई नाथी द्रव्याधधिक द्रव्य लग्न सा चंद्र भाण पुण्यार्थ तत्रवा सूत्रधार कंसारा हुंवड मानजी प्रभुरिदः परिकरः कृतः सकल संघ कल्याण मस्तु वरडिया गोत्र स चतुरा भार्या धारणा दंदे तत्पुत्र वीर जी शाह चंद्रभाण भार्या उसरादे तत्पुत्र टीला प्रभुस्वामी कल्याण मस्तु।।''

3. प्रवेश करते हुए दाहिनी तरफ (मूल नायक जी के बाएँ) श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची श्री सुपार्श्वनाथ जी की प्रतिमा है। इसका परिकर एवं सिंहासन सर्वधातु के बने हैं

व इसकी ऊँचाई 41'' है। परिकर पर यह लेख है :–

''संवत् 1703 वर्ष जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे षष्ठि तिथौ 2 रविवासरे पुष्य नक्षत्रे श्री सुपार्श्व बिम्ब परिकरः कारापित श्री उदय पुरे महाराणा श्री जगतसिंह जी राज्ये समस्त संघेन करा पितः तपा गच्छे जगद्गुरु श्री हीर विजय सूरीश्वर पट्टालंकृत भं श्री विजय सेन सूरीश्वर पाट प्रभाकर भट्टारक प्रभु श्री विजय यादव सूरीश्वर विजय राज्ये पाट दीप्ति कारक आचार्य सुविदिता आचार्य श्री पू. श्री विजयसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छे (सुत संभव ऊ सुत विक्रम् सारा दुग्गल एत)।''

4. दाहिनी ओर दीवार पर पीतल की 9'' ऊँची देवी की प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

उत्थापित चल धातु प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. चार चतुर्मुख प्रतिमाएँ (पृथक–पृथक) चारों दिशाओं में मुख किये हुए विराजमान है। मध्य में एक छोटा 4'' ऊँचा गोल स्तंभ है। 6'' वर्गाकार सर्वधातु की वेदी पर ये प्रतिमाएँ सुशोभित हैं। वेदी पर यह लेख है :– ''सगरास मन जी'' ''अक्षय वसध।''

2. सर्वधातु की चौबीस तीर्थंकरों की 13'' ऊँची बहुत सुन्दर तथा बड़ी प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1489 वर्षे ज्ये वदि 11 प्राग्वाट दा सूरा भा. पोमी सुत दा आशाकेन भा. रूपिणी सुत राउल मणि कलाला (पौत्रादि)? कुटुम्ब युतेन स्वमातृ शीला व सुत सांरग श्रेयो चतुर्विंशतिं पट्टः कः प. तपागच्छे नायक भट्टारक सोम सुन्दर सूरिभिः श्री रस्तु''

3. तांबे का गोलाकार ऋषि मंडल यंत्र जिसका व्यास 9'' है। साथ में लेख नहीं है।

4. सिद्ध चक्र यंत्र धातु का गोलाकार 4'' व्यास का है। यह श्री कालूलाल जैन द्वारा भेंट किया गया है।

निज मंदिर के बाहरी भाग में द्वार के बाएँ भाग में कार्निश पर (दाहिनी ओर से बाईं तरफ) :–

1–6. श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की क्रमशः 7'', 5'', 5'', 4'', 12'' और 13'' ऊँचाई की 6 प्रतिमाएँ है, जिस कोई लेख, लांछन नहीं हैं।

7. श्री सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण का 12'' वर्गाकार वेदी पर बना है। उस वेदी पर यह लेख है :–

''संवत् 1862 वर्षे शाके 1728 प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादशी 12 तिर्थे गुरुवासरे समस्त संघेन श्री सिद्ध चक्रं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय जिनेन्द्र सूरिभिः आदेशात् पं. हिमविजयेन''।

8. निम्न भाग में देवी की साधारण श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची मूर्ति है, जिस पर कोई लेख नहीं है।

9. निम्न भाग में ही 2 पादुकाएँ स्थित हैं, इन पर यह लेख है :–

'भट्टारक श्री विजयसिंह सूरि तत्शिष्य विजय सेन श्री पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता कल्याण मस्तु''

10. प्रवेश करते हुये बाई ओर दक्षिणी भित्ति की एक देवरी में 17'' ऊँची श्याम पाषाण की चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति है। इस पर कोई लेख नहीं है।

11. 9'' ऊँची एक पुरुष मूर्ति (जिनेश्वर भगवान् की नहीं) हाथ जोड़े हुए हैं।

12. 3'' ऊँची श्वेत पाषाण की खण्डित मूर्ति परिकर पर स्थापित है।

13. ऐसी ही एक पत्थर में 3'' ऊँची 4 मूर्तियाँ दीवार पर लगी हुई है।

निज मंदिर के द्वार के दाहिनी ओर : (प्रवेश करते हुए बाएँ से दाहिनी ओर)

1. श्री धर्मनाथ जी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है, जिस पर लेख है :–

''संवत् 1676 पोष सु. 2 (बाजीका?) श्री विजयसेन सूरि।।''

2. श्री वासुपूज्य जी की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत 1686 वैशाख सुदि 6 उदयपुर वास्तव्य''

3. श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिस पर लेख नहीं है।

4. मुनिसुव्रत जी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा पर ''श्रावण मुनिसुव्रत'' लेख है।

5. जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है, इस पर लांछन व लेख नहीं है।

6. श्वेत पाषाण की एक वेदी पर सात पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। इस वेदी पर यह लेख हैं :–

''संवत् 1778 वर्षे माघ सुदि 6 सोमे श्री उदयपुरे श्री भट्टादिनाथ पादुका भट्टारक श्री कुंवर विजय गणि , पादुका महोपाध्याय श्री विजय गणि पादुका भट्टारक त्रयी पादुका श्री विजय देव सूरि श्री कुंवर विजयगणि शिष्य प्रन्यास जय विजय शिष्य विजय ग. शिष्य महोपाध्याय श्री देवविजय गणि पादुके (नृपा) ? रूपानन्देन कारिता प्रतिष्ठिता श्री विजयदास सूरिभिः।।''

प्रवेश करते हुये दाहिनी दीवार पर 25'' की श्री भैरव जी की प्रतिमा है।

उत्तर पूर्व के कौने में एक आलिए में साधारण पत्थर की षट्कोण वेदी पर चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। इसके ऊपर लेख स्पष्ट नहीं है।

निज मंदिर 7.6 फीट x 5 फीट है।

बाहरी भाग एक बड़े गुम्बज के नीचे है। इसका नाप 12′ x 12′ है।

सभा मंडप

द्वार के बाईं ओर भैरव जी तथा दाहिनी ओर गजानन जी की 23'' ऊँची प्रतिमाएँ देवरियों में विराजमान हैं। इन पर कोई लेख नहीं हैं।

सभा मंडप का आकार 15.6′ x 15.6′ है। इसके बाहरी (पूर्व की ओर) कोनों पर दो श्वेत पाषाण की सुन्दर छतरियाँ हैं।

पहली छतरी में दाहिनी ओर समवसरण में सर्व धातु की चतुर्मुख प्रतिमा बिराजमान है। प्रतिमा की ऊँचाई वेदी सहित 31'' है और उस पर यह लेख है :–

''संवत् 1702 वर्षे आषाढ़ सुदि 11 दिने शनौ उदयपुर वास्तव्य ऊसवाल जातीय काटौड़ गोत्रे (माधापा)? भार्या फूलबाई तत्पुत्र सा जशवन्त भार्या जयवंत दे पुत्र स प्राणवदास मनोहरदास दीवारतन वेदी (धर्म सूरि)? कारिता।''

दूसरी छतरी में महावीर भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की चतुर्मुख प्रतिमा है यह समवसरण की नवीन रचना है। मध्य के स्तंभ पर लेख है – ''संवत् 2021 माघ सुदी 5 चाणोद नगरे श्री महावीर स्वामी चतुष्टय आ. वि. राम सूरिभि प्रतिष्ठितम्।'' प्रतिमा के नीचे चारों तरफ लेख है :–

''वीर सं. 2491 वर्ष माघ शुक्ल 5 चाणोद नगरे श्री संघ कारित प्रतिष्ठा महोत्सवे उदयपुर निवासी ओसवाल श्रेष्ठि साहिबलाल जी ता पुत्र वीरचन्द जी कारित चतुर्मुख श्री महावीर स्वामी जिन बिंब चतुष्टय तपागच्छ अग श्री विजय सुन्दर सुरीश्वर शिष्य आ. विजय रामचन्द्र सुरीश्वर प्रतिष्ठित।''

परिक्रमा

निज मंदिर तथा सभा मंडप के चारों ओर एक विशाल परिक्रमा है, जिसमें बावन जिनालय में जिनेश्वर भगवान् बिराजते हैं।

प्रवेश द्वार से बाईं ओर से जिनालयों का विवरण निम्न प्रकार है :–

1. प्रथम जिनालय में श्वेत पाषाण की सुन्दर तीन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित है। इन्हें बैंगलोर के सेठ बस्तीमल हरिचंद ने बनवाया हैं। इसके मध्य में मूलनायक आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

   ''ऊँ ह्रीं अर्हं नमः वीरात् 2488 संवत् 2018 फा. शु. 7 बैंग्लोर आदि चै. श्री बस्तीमल हीराजी अंजन श. राजदे अमर सर श्री फूलचंद हीराचंद एण्ड कम्पनी इत्यादि कुटुम्ब श्री आदिनाथ बिंब का प्र.आ.वि. वल्लभसूरीश्वर, (मुख्याटे) आ.वि. ललित सूरीश्वर पट्टधर आचार्य विजय पूर्णानंद सूरीश्वर पंन्यास ह्रींकार विजय गणिभिः।। सर्वेषां पूर्णानन्दो भूयात्।।''

   ख. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री महावीर स्वामी की 13'' ऊँची प्रतिमा विराजमान

है। इस पर यह लेख है :– ''ऊँ ह्री अर्ह नमः वीरात् 2488 संवत् 2018 फा. शु. 7 सो. बैंगलोर न. आदि चै. श्रे. बस्तीमल हीराजी भा. टमुदे (मदुरस्य अंजन)? शिवगंज ग्रावा श्री कस्तूर चंद (शेष लेख आच्छादित है)''।

ग. मूल नायक के बाएँ श्री अजितनाथ भगवान की 13'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :–

''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः वीरात् 2488 संवत् 2018 फा. शु. 7 सो. बैंग्लोर न. आदि चै. श्रे. बस्तीमल हीराजी अंजन श. म. राजदे भरत वा श्रे पन्ना जी फूलचंद हीराचंद एण्ड कम्पनी श्रेयोर्थ अजितनाथ बिंब का. प्र. आदि वल्लभसूरि पट्टे वि. ललित सूरि पट्टे आ. वि. पूर्णानंद सूरि पं. ह्रींकार विजय गणिभिः। सर्वेषां पूर्णानंदो भूयात्।।''

2. दूसरे जिनालय में श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. तीसरे जिनालय में भगवान् ऋषभदेव की श्वेत पाषाण निर्मित 13'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर केवल श्री पढ़ने में आता है।

4. चतुर्थ जिनालय में श्री नेमिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची भव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित हैं। प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है।

5. श्री महावीर स्वामी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 11'' ऊँची है इस पर लेख है :– ''महावीर स्वामी बिंब का. प्र. आ. वि. .....प्रागवाट जातीय श्री कालूलाल पत्नी शान्ताबाई, पुत्र प्रदीप, पुत्रवधू सरिता जैन, निवासी उदयपुर।''

6. श्री सुमतिनाथ जी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः वीरात् 2488 संवत् 2018 फा. शु. 7 सो बैंगलोर नं. आदि चै. श्रे. बस्तीमल ही. मदुरा भा. टमुदे भीमपाल वा. श्रे. श्री. सुमतिनाथ बिंब का प्र.आ.वि. ललित सूरि पट्टे आ. वि. पूर्णानंद...''

7. सप्तम जिनालय में श्री मुनिसुव्रत जी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा सुशोभित है। उसके ऊपर लेख है :– ''श्री मुनिसूरत बिंब''

8. श्री महावीर स्वामी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर लेख है :–

''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः वीरात् 2488 संवत् 2018 फा. शु. 7 सो. बैंग्लोर श्री आदि चै. श्री बस्तीमल ही भा. टमुदे अ. श. राज दे (आहिरवा)? श्रे. वि. पूर्णानंद सूरि पट्टे आ. वि. ललित सूरि पट्टे आ. वि. पूर्णानंद सूरि...''

9. नवम जिनालय में श्री संभवनाथ जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''ऊँ ह्री अर्हम् नमः वीरात् 2488 सं. 2018 फा. शु. 7 सो. बैंग्लोर नं. श्री आदि चै. श्रे. बस्तीमल ही. भा. टमुदे अ.श. राजदे... श्री संभवजिन बिंब का. प्र. आ. विजय सेन पं. ह्रींकार विजय गणिभिः।।''

10. दशम जिनालय में श्री पार्श्वनाथ भगवान् की 10'' ऊँची श्याम पाषाण प्रतिमा की है। इस पर लेख है :–

''पार्श्वनाथ प्रागमितम्''

11. परिक्रमा में सभा मंडप के दक्षिण की ओर एक बड़ी देवरी में ऋषभदेव भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1810 वर्षे वैशाख सुदि 2 सोमे श्री आदि नाथस्य बिंब प्रतिष्ठितं करापितं लघु शाखायां ऊसवंशे.'' इसी देवरी में भगवान ऋषभदेव जी की प्रतिमा के सामने एक श्वेत पाषाणीय हाथी पर यक्ष माणिभद्र जी विराजमान है। हाथी पर खुदाई का काम बड़ा सुन्दर है। झूल पर बाईं ओर (प्रवेश करते हुए) निम्न लेख खुदा है। हाथी की ऊँचाई 45'' व लंबाई 55'' है।

''श्री जिनाय नमः महाराणा श्री राजसिंह जी विजय राज्ये तपागच्छा अधिष्ठायक यक्ष श्री माणिभद्रस्य मूर्ति तप श्री विसद धर्मा (विजय धर्म्म?) सूरिभि प्रतिष्ठितं करापितं स्वसा गुलडेचा गोत्र साह जी चंद्रभाण सुत शंकरदास विकेन संवत् 1815 रा वैशाष सुदि 5 गुरौ।''

इस देवरी की बाहरी दीवार पर सम्मेद शिखर जी, केशरिया जी, नाकोड़ा पार्श्वनाथ व शत्रुञ्जय तीर्थ के पट्ट लगे हैं।

12. इसी देवरी के अंदर बारहवां जिनालय है, जिसमें श्री शांतिनाथ जी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमा पर निम्न लेख है :–

''श्री शांतिनाथ बिंब श्री प्रेमचंद गणिभिः''

13–14. उपर्युक्त इस बड़ी देवरी के आगे तेरहवें जिनालय से लेकर इक्कीसवे जिनालय तक देवरियाँ एक बरामदे में बनी हुई हैं। तेरहवें और चौदहवें जिनालय में जिनेश्वर भगवान् की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई भी लेख व लांछन नहीं है।

15. पन्द्रहवें जिनालय में श्री अजितनाथ भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। इस पर लेख नहीं है।

16. सोलहवें जिनालय में जो प्रतिमा विद्यमान हैं उनका चिह्न (लांछन) हरिन जैसा प्रतीत होता है। संभवतः यह भगवान शांतिनाथ जी की है प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर कोई लेख नहीं है।

17. श्री नेमिनाथ जी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा जिनालय में विराजमान है, जिस पर कोई लेख नहीं है।

18–21. इन जिनालयों में श्री जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की क्रमशः 13'', 15'', 11'' व 11'' ऊँची प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। किसी पर भी लांछन व लेख नहीं है।

दक्षिण–पश्चिम के कोने में पूर्वाभिमुख भैरव जी तथा गजानन जी की 11'' ऊँची प्रतिमाएँ भित्ति में विद्यमान है।

इसके पास एक द्वार के भीतर चार देवरियाँ हैं। इनमें निम्न प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं।

22. बाइसवें जिनालय में ऋषभदेव भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

23. तेइसवें जिनालय में पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा 11'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

24. भगवान ऋषभदेव जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर भी कोई लेख नहीं है।

25. पच्चीसवें जिनालय में श्री मल्लिनाथ जी की श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है, जिसकी केवल एक पंक्ति पठनीय हैं :–

''संवत् 1757 वर्षे जेष्ठ सुदि 10 गुरौ भाडत्या गोत्रे साह श्री....''

मंदिर के पृष्ठ भाग में (पश्चिमी दिशा में) महिला उपाश्रय है। यहाँ साध्वियाँ ठहरती हैं। इसका द्वार 25 वें तथा 26 वें जिनालय के मध्य में है। (26 से 29 वें जिनालयों का वर्णन सबसे बाद में दिया जायेगा)।

30. (तीसवें जिनालय से आगे शेष जिनालय बंद गलीनुमा बरामदे में है)। तीसवें जिनालय में श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11''ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1690 व. पो. 15 शनौ उकेश ज्ञा. श्री कल्याण..... श्री पार्श्वनाथ बिंब का. प्र. श्री विजयसेन सूरि.''

31. इकतीसवें जिनालय में श्री महावीर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''ऊँ ह्री अर्हम् नमः वीरात् सं. 2488 सं. 2018 फा. शु. 7 सो. बैंग्लोर – आदि चै. बस्तीमल हीराजी भा. टमुदे मदुरावाला अंजन श. म. राजदे अमरसर (सूरत) वा. श्रे. भूरमल सु. पूनमचन्द एण्ड कम्पनी वल्लभ सूरीश्वर पट्टे आ. वि. ललित सूरीश्वर पट्टे आ. विजय पूर्णानंद पंन्याश्र ह्रींकार विजय गणिभिः प्रतिष्ठितम्।।''

32. श्री पार्श्वनाथ भगवान् की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस पर कोई लेख नहीं है।

33. श्री ऋषभदेव की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है जिस पर निम्न लेख है :–

''ऊँ ह्री अर्हं नमः वीरात् 2488 सं. 2018 फा. शु. 7 सो. बैग्लोर न आदि चै. श्रे. बस्तीमल हीराजी भा. टमुदे (मदुरस्थ) अंजन श.मं. राजदे अमर सर सरत श्रे भूरमल सु पूनमचंद एण्ड कम्पनी आदि स्व कुटुंबैः श्री आदिनाथ का. प्र. आ. विजय वल्लभ सूरि पट्टे

आ. वि. ललित सूरि पट्टे आ.वि. पूर्णानंद सूरि पंन्यास ह्रीकार विजय गणिभिः।''

34. चौतीसवें जिनालय में भगवान् वासुपूज्य जी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1690 व. पो .15 श्री उदयपुर वा. उ.ज्ञा. वृद्धि शाषायां काठोर गोत्रे ....या. सूरत दे नाम्रा श्री वासुपूज्य बिंब का. प्र. भ. श्री...''

35. पैतीसवें जिनालय में पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। प्रतिमा के पीछे सुन्दर काँच का आभा मंडल है। नीचे यह लेख है :–

''श्री उदयपुर वा. उ. ज्ञा. उस्तवाल..''

36. छत्तीसवें जिनालय में शांतिनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर नीचे लेख है :–

''सं. 1690 पो. 15 सीरहिम भा. माना नाम्री सांतिनाथ बिंब कारितं प्रति. भ. श्री. विजयदेव सूरिभिः।'' इसके पास श्वेत प्रस्तर की 13'' x 13'' वेदी पर 2 पादुकाएँ हैं।

37. सैंतीसवें जिनालय में श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची चन्द्र प्रभु जी की प्रतिमा है, जिस पर लेख नहीं है।

38. जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाणी 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

39. पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर निम्न लेख है :–

''सं. 1690 पो. 15 श्री उदयपुर वा. उके ज्ञा. उस्तवाल गोत्रे... श्री पार्श्वनाथ बिम्ब..''

40. श्री शांतिनाथ जी की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''सोमजी सा. सा देव प्रमुख कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ बिंब कारितम्।।''

41. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

42. दक्षिण में स्थित मणिभद्र जी की गजारूढ प्रतिमा के सामने एक देवरी में श्वेत पाषाण के तीन छोटे गुम्बज हैं, जिनमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

मध्य में मुनिसुव्रत जी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा तथा प्रवेश करते हुए बायें (मूलनायक के दाहिनी ओर) श्री आदिनाथ भगवान की सर्वधातु की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर ''सा शा. समवशरणे श्री आदिनाथ बिंब'' लिखा है। दूसरी ओर (मूल नायक के बाएँ) सुमतिनाथ जी या अनंत नाथ जी? (नीचे लांछन एक पक्षी बना है।) की 11'' ऊँची है और सर्वधातु की बनी प्रतिमा है।

इस पर ''फ. मा. हा. सी. (क) भा. सोमा'' लिखा है।

43. श्री पार्श्वनाथ जी की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है।

44. श्री आदिनाथ जी की पीत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–
''वीर संवत् 2462 वर्षे वैशाख सुदि 9 रवौ लीलावती श्रे श्री आदि जिन बिंब प्रतपा''

45. श्री शीतलनाथ जी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
''संवत् 1699 चे. शु. 9 प्रा. वा. जवका नाम्रा श्री.. तपाश्री विजयसिंह सूरिभिः।।''

46. श्री महावीर स्वामी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–
''संवत् 169 (0) 1 पो. 15 उदयपुर वा. उके. ज्ञा. (1) गौये महावीर बिंब का. प्रतिष्ठितम्।''

47. श्री विमलनाथ जी श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–
''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः वीरात् 2488 व. सं. 2018 फा. शु. 7 सो बैग्लोर नं. आदि चै. श्री बस्तीमल हीराजी भा. टमुदे (मदुरस्थ) अंजन श. म. राजदे आ. वि. पूर्णानंद सूरीश्वर प्र. ह्रींकार विजय गणिभिः।''

48. श्री मुनि सुव्रत जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः ..... पं. ह्रींकार विजय गणिभिः। आचंद्रार्क सर्वेषां शुभं भूयात्।।

49. भगवान् चन्द्र प्रभु की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
(जाया मालवि) वेला चंद्र प्रभ बिंब करापिंत प्रति. त.भ. श्री विजयदेव सूरिभिः।।''

50. श्री शांतिनाथ जी की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
''संवत् 1690 व. पा. श्री शांतिनाथ बिंब विजादेवसी''

51. श्री शांतिनाथ भगवान् की ही श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। नीचे यह लेख है :–
''सवत् 1699 व. मां. श्री शांतिनाथ बिंब का प्रतिष्ठितं तपागच्छ विजयसिंह सूरिभिः।''

52. अन्तिम जिनालय में तीन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। मध्य में श्री पाश्वनार्थ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। तथा उसके बाएँ जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा, जिसके दोनों ओर देवता खड़े हैं। दाहिनी ओर मूर्ति का स्थान रिक्त है।

इनमें से किसी के नीचे लेख नहीं है।

26 से 29 तक के जिनालय में स्थापित प्रतिमाएँ :–

26. छब्बीसवें जिनालय में भगवान मुनिसुव्रत जी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख हैं :–

''ऊँ ह्रीं अर्हम् नमः वीरात् 2488 सं. 2018 फा. शु. 10 सोमे बैग्लोर न आदि चै. श्रे. बस्ती मल हीरा जी (मदुरा) भा. टमुदे अजब श. म. राजदे... सुव्रत स्वामी बिंब का. प्र. आ. वि. ललित सूरि पट्टे आ. वि. पूर्णानंद सूरि पं. हीकार विजय गणिभिः।''

27. जिनेश्वर भगवान की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस पर लांछन व लेख नहीं है।

28. जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर निम्नलिखित लेख है :–

''सवं 1690 व. पा. 15 श्री उद... समत..?''

29. उनतीसवें जिनालय में आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

26 से 29 तक के जिनालय में प्रतिष्ठित सर्व धातु की चल प्रतिमाएँ :–

1. विमलनाथ भगवान की 13'' चौबीसी प्रतिमा पर पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1517 वर्ष फागुण शु. 11 शनौ सीपुरा वासि प्राग्वाट ज्ञा. (?) भार्या गजरी पुत्र सा देल्हाकेन भा. रूमिणी पुत्र गरू आदि कुंटुंब युतेन श्रेयासे विमलनाथ व मूलनायक बिंब लग्न चतुर्विंशति पटः का. प्र. तपागच्छे श्री राजशेखरसूरि पट्टे (बलभी)? सागर सूरिभिः।।''

2. वासुपूज्य भगवान की 11'' प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1342 वर्षे फागुण सुदि 10 बुधे श्री चैत्र? गच्छीय धर्वाट् वंश नाहर गोत्रे साहा. पा. सुत सा विजयसिंह व भ्रातृ घरसीह श्रेयार्थ वासुपूज्य बिंब का. प्र. श्री गुण चन्द्र...'' इस मूर्ति का नीचे का भाग भग्न है।

3. श्री अनंतनाथ जी की 9'' ऊँची प्रतिमा के ऊपर का भाग खण्डित है। इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1694 वर्षे वैशा. संघ जी सुतया श्री अनंतनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं...''

4. श्री अजितनाथ भगवान की पंचतीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1491 वर्षे माघ सुदि 5 बुधे ऊसवंशे (वाणे वासा म्रा)? भा. लीला दे पुत्र उमाकेन सपरिवारेण स्व पुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंब का. प्र. चैत्र गच्छे श्री सोमदेव सूरिभिः।''

5. श्री धर्मनाथ जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख अंकित है :–

''संवत् 1521 वर्षे ज्येष्ठ वदि 9 ऊसवाल (?) गोत्रे साहाना पु. बीजहा भा. धीरज पुत्र खेढा भा. गार्गी पु. काका पा सा श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं चैत्र गच्छे श्री सोमदेव सूरिभिः।।''

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' की इस प्रतिमा का ऊपर का भाग खण्डित है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1534 वर्षे माघ वदि 12 साबुला गोत्रे सा. पाल्हा भा. रुद्रणादे (सुम्रा) (पुरता)? तेजो भा. तेजलदे पु. बलिराज विसललोना मणिकादि युतैः श्री पार्श्वनाथ बिंब का. प्र. श्री धर्म गोष ग. श्री पद्मशेखर सूरि पट्टे श्री पद्मसिह सूरिः।।''

7. श्री अजितनाथ जी की 7'' पंचतीर्थी प्रतिमा पर पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1513 वर्षे फागुण वदि 13 सुराणा गोत्रे स. सहदेव भार्या सुहाग देव्या आत्मपुण्यार्थ श्री अजितनाथ बिंब का. प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पदमापाद सूरिभिः।।''

8. श्री वासुपूज्य भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर निम्न लिखित लेख अंकित है :–

''संवत् 1527 वार्ष माघ सुदि 15 सुदिने श्री उपकेश गच्छे सं. ? आ गोत्रे सा. गिरराज भा. गउरादे पु. हाला भा कसली पु. श्री – ? – वासपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः।।''

9. श्री पार्श्वनाथ भगवान् की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं 1292 फागुन शुदि 10 शनौ श्रे. पूनादेव सुत वीर पदादि पार्श्व का. प्र. श्री... वर्द्धन सू:..''

10. श्री ऋषभदेव जी की 7'' ऊँची प्रतिमा (पंचतीर्थी) पर यह लेख है :–

''संवत् 1523 वार्ष माघ सु. 6 रवौ.स्वातिनक्षत्रे प्राग्वाट् श्रे. घेघाना जमल सुत श्रे. श्री सागण श्रेयो (भोमा)? भार्या वाषलदे पुत्र रलुता नाम्णा स्व श्रेयसे श्री आदिनाथं बिंब का. प्र. तपाश्री लक्ष्मी सागर सूरिः। आगि।।''

11. श्री पद्म प्रभु जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''पद्म प्रभु''

''सं. 1472 फा. व. 1 सुश्री मूलसंघ बल्वा गोत्र गुण भट्टारक श्री पद्मनन्दी सदा नमिचंद बडजात्या गोत्रे उगसर श्रे. सुत भा. सुहली सुय कर्णा भा. कामलदे झाला..''

12. श्री सुमतिनाथ जी की पंचतीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1032 वर्षे फा. सु. 8 सल उप. ज्ञा. इयद्रेव गौ. सा. गौणादि प्र. भ्रातृ माब्लाक्षे ढारत माला सा उ षू पू. भ्रातृ सहितेन आत्म श्रेयसे ? सुमतिनाथ बिंब का. प्रति. श्री (आवित्र गच्छे) श्री सोमकीर्ति सूरि पट्टे श्री (?) चंद्र सूरिभिः''

13. जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर कोई लांछन नहीं है। लेख भी बिल्कुल घिस गया है।

14. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1328 वार्ष वैशाष वु. 6 श्री (रवीन्दर) ? तपागच्छे श्री यशोभद्र सूरि सनात स.''

15. श्री नेमिनाथ जी की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1662 वर्षे माह वदि 4 लोढ़ा गोत्रे साना हर्ष मदें सु कचरा केन सुत वारदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंब कारितं प्र. तपागच्छे विजय सेन सूरीणां निदेशात् श्री सोम विजय गणिभिः।।''

16. श्री शांतिनाथ जी की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1494 ज्येष्ठ सुदि 4 बुध सोषुला गोत्रे सा. बीहिल पु. चांपा भा. चापलदे पुत्र भाणाकेन स्व पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंब का. प्र. श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शेखर सूरि पट्टे श्री.... चंद्र सूरिः''

17. श्री आदिनाथ भगवान् की 8'' ऊँची प्रतिमा के पीछे यह लेख है :–

''संवत् 1409 वर्षे फागुण वदि 2 बुधे हुमड़ ज्ञातीय जाभातृ.... श्रेय से 6 वीरमन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सर्वानंद सूरि संहितैः श्री सर्वदेव सूरिभिः।।''

18. आदिनाथ भगवान की एक अन्य 7'' ऊँची प्रतिमा पर केवल इतना लेख पढा जा सकता है :–

''उसवाल वीर पु. राजपाल..'' शेष भाग घिस गया है।

19. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1259 ज्येष्ठ सुदि 10 खौ श्री चांदसींह निज कुटुंब सहितेन पार्श्वनाथ का. प्रतिष्ठितं श्री देवलिप्त सूरिभिः।''

20. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1374 माघ वदि 10 गुरौ श्री माल वसंत सौ. प्रनपाल पार्श्व नाथ बिंब कारावितं श्री.. गच्छे प्रतिष्ठितं श्री शीलभद्र सूरिभिः।।''

21. श्री वासुपूज्य भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1420 वर्षे उपकेश ज्ञातीय सा षाषण भा. वीमसिरी तयोः श्रेयोर्थ आल्हा उदा देवा केन वासपूज्य वित्र पंचतीर्थी का. प्र. श्री नागेन्द्र गच्छ श्री (रत्नसंघ) सूरि पट्टे श्री देवप्रभ सूरिभिः।।''

22. श्री पार्श्वनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :–

''सं. 1388 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 12 श्रीमाल ज्ञातीय लूणसिंह....सुतराया धरणि मास्या श्री पार्श्व नाथ पंचतीर्थी कारिता।।''

23. श्री नमिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1492 वर्षे ज्येष्ठ वदि 11 प्राग्वाट सा. अरसी.भा. आल्हण दे सुत बाबाकेन भा. चाहण दे सुत बाल (सुहड़ा) ? राणा पांचादियुतेन प्रमुख डासा श्रेयसे श्री नमिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपाश्री सोम सुन्दर सूरिभिः।।'' प्रतिमा का बांया भाग खण्डित है।

24. श्री धर्मनाथ जी भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इसका ऊपर का भाग खंडित है। इस पर यह लेख है :– ''सं. 1466 वर्षे वे.वदि 13 पत्तनदास प्रा. दो. माणिक भा. टेवक्त सुत पासा केन ईहू सु. नाथा भीम पालादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री धर्मनाथ बिंब कारितं तपागच्छे श्री हेमविमल सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रे।।...''

25. श्री कुंथुनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1515 वर्षे जेष्ठसुदि 5 उकेश ज्ञा. (गोगा उरासा वीठा) ? भा. वारु पुत्र गंगा.. दाकेन पूर्वजनिमितं श्री कुंथुनाथ बिंब का. प्र. श्री चेत्रगच्छे श्री रामदेव सूरिभिः।।''

26. जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर लांछन नहीं हैं। ऊपर का भाग खण्डित है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1610 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 5 सोमे उकेस वंशे कांगरेचा गोत्रे सा. नाविद भार्या (गारवेड) पुत्र सा. समरथ श्री खरतर गच्छे श्री जिनकीर्ति सूरि श्री जिनसिंह सूरि प्रतिष्ठित श्रीः''

27. श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1468 वर्षे जेष्ठ वदि 13 उकेश वंशें नाहदीया गोत्रे सा. हिमाल पुत्र आवा भार्या मीमिणि पुत्र माणाकेन पितृ मातृ श्रेयार्थ श्री शांतिनाथ बिंब कारितं प्रति उपकेश गच्छे श्री दिवगुप्त सूरिभिः।।''

28. श्री चन्द्रप्रभु जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1408 वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय श्री नरदेव भार्या गांगी पुत्र श्रे कावटेन भा. कडू पुत्र वरणादि युतेन सुपितृ वापां श्रेयोर्थ श्री चंद्रप्रभ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः।।''

29. श्री शांतिनाथ जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1506 वर्षे ज्येष्ठ सु. 10 उप. चिपड़ गोत्रे सा सवा. भा. जेणे पुत्र रेजकेन मातृ पितृणां आत्म श्रे श्री शांतिनाथ बिंब कारितं उपके. कु. प्रति. श्री कक्क सूरिभिः।।''

30. श्री सुविधिनाथ जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत 1529 वर्षे (?) सु. 8 उसवाल ज्ञा. वाट्टि सा. मूल भा. लूणादि द्वि सुहागादि पु. सा. भाणर भा. नीला पुत्र रणधीर गाठमीर (हाथीया) श्रेयार्थ श्री सुवध नाथ वि. का...''

31. श्री कुंथुनाथ जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इसके पीछे यह लेख है :–

''सं. 1429 प्राग्वाट केल्हामी सुत सूराकेन भा. मीणु भा चांपा सुत साठा मेढा पद्मा दि कुटुंबयुतेन स्व. श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंब का. प्र. तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरिभिः।।''

32. श्री मुनिसुव्रत की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1404 वार्ष माघ सुदि 2 (श्वेत ग्रासि) वड़ जातीय श्रे. वजासीगा भा. सुमति मातृ श्रेयोर्थ श्री मुनि सुव्रत बिंब.... सूरिभिः।।''

33. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1566 वर्षे प.व. 6 गुरौ प्रा. ससा. लीला भा. रुखमणि पु. गांगाकेन भा. पाबू पू लाला लोला लावादि कुंटुब युतेन पार्श्वनाथ बिंब का. प्र. तपाश्री सोम सुन्दर सूरि

सन्ताने श्री कमल कलश सूरिपट्टे श्री नंद कल्याण सूरिभिः।।श्रीः।।''

34. श्री कुंथुनाथ जी की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1536 वर्षे फा. सु. 3 दिने त्रिदलीय गोत्रे सा. सीरग भात्र भास. पु. सीश्वरेण भा. सुहगदे पुत्र सात्र मांडा मेरा पर बनादि युतेन श्री कुंथुनाथ बिंब का. प्र. खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद सूरिभिः।।री।।''

35. श्री शीतलनाथ भगवान की पंचतीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1536 वर्षे मिगसर सुदि 10 बुध वारे संडेर गच्छे अ. तलेहरा गोत्रे. सा. धाना पु. कालू पूजा भा. सलकू पु. टोहा भा. वरजू पु. सु श्रे निमित्त श्री शीतलनाथ बिंब का. श्री जितेन्द्र सूरि पट्टे श्री सान्ति सूरिभिः।।''

36. श्री कुंथुनाथ जी की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख हैं :–

''सं. 1506 मा. सु. 8 दिन श्री उपकेश ज्ञातौ ली (सी) ? गोत्रे सा. सदादत्त भा. सुहवादे पु. सालीगेन पित्रोः निमित्तं श्री कुंथुनाथ बिंब का. प्र. श्री सदासूरि सिहैः''

37. महावीर स्वामी की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1307 माघ सुदि 15 श्री नाग गच्छे श्री आनंद सूरि मनाकि वि पटे श्री भाव वहणा श्री वलाकेन श्री बलाकेन श्री महावीर बिंब कारितं मिति शुभम्।।''

38. आदिनाथ भगवान् की पंचतीर्थी प्रतिमा 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1437 वैशाख वदि 1 प्रसामि श्री केश गच्छे श्री मन्नार्थ संतान उपकेश ज्ञातीय सोमा भा सूमलदे पु. सोनाकेन पितृ मातृ श्रे. आदिनाथ बिंब का. प्र. श्री साव दिव सूरिभिः।।''

39. श्री संभवनाथ जी की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1484 वर्षे माह सुदि 5 बुधे श्री नागेन्द्र ग. उपकेश ज्ञा. सा. श्री साल्हा. भा. माल्हा पु. घाघा भा. सोमी पितृ मात् श्रे. श्री संभवनाथ बिंब आ. प्र. श्री पद्मावं सूरिभिः।। श्रीः।।''

40. पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1322 वर्षे फागुण सुदि 1 श्रे. पौमाह पुत्र पार्श्वनाथ बिंब कारितां श्री वादी सूरिभिः।।''

41. श्री चंद्र प्रभु स्वामी की पंचतीर्थी 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1481 वर्षे वैशाष सुदि 3 शनौ प्राग्वाट ज्ञा. श्री काला भा. कल्हण दे सुत सरवणेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र प्रभु स्वामि पंचतीर्थी बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तम दाहड़ गच्छे? श्री उदय प्रभ सूरिभिः ।।श्रीः।।''

42. श्री नमिनाथ जी 6'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :–

''सं. 1480 वर्षे माह सुरि 10 बुध उप. ज्ञा. श्रे कड़य भा. कुसमादे पुत्र सबहाकेन पित्रोः श्रे श्री नमिनाथ बिंब का. प्र. भट्टारक रत्न सूरि पं. भ. श्री दाण चंद्र सूरि पं. श्री धर्म सूरिः।।''

43. श्री मुनिसुव्रत जी की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1480 वर्षे वैशाष वदि 5 गुरै श्री प्राग्वाट ज्ञा. श्रे. भीमसी भार्या सारू पु. श्री दोसाकेन पुत्र धीकेन (?) मुनि सुव्रत स्वामि बिंब श्री अंचल नायक श्री व्रद्य कीर्ति सूरि गुरुणाम् उपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन''

44. श्री वासुपूज्य भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. ....श्रीमालीय कूरसीह भा. सदाव पुत्र. ....श्री वासुपूज्य बिंब सूरिभिः।।''

45. श्री वासुपूज्य भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1422 वर्षे वैशाष सुदि 11 प्राग्वाट ज्ञातीय काछली वास्तव्य श्रेष्ठि तेछुणा भा. वाहणि सुत सेगाकेन पितृ मातृ श्रे. श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र. श्री रत्न प्रभू सूरिभिः।।''

46. संभवतः धर्मनाथ जी 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''.....धर्मनाथ (?) बिंब कारितम्''

47. श्री आदिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1404 वैशाष वदि 4 रवौ श्री माल ज्ञातीय पितामह उदयसिंह पितृ लबनसिंह श्रेयसे सुत षाषाकेन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुणसागर सूरि शिष्य गुण प्रभ सूरिभिः।।''

48. श्री शांतिनाथ जी की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1405 वर्षे वैशाष सुदि 11 सोमे श्री माल ज्ञातीय ताया सुत गांगा केन श्री शांतिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रत्न सागर सूरिभिः।।''

49. नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा 5'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1099 माघ प्राग्वाट श्री डाडासा भा. पाबू नमिनाथ बिंब का. प्रतिष्ठितं श्री भावदेव सूरिभिः।।''

50. आदिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत 1393 फागुण सुदि 5 श्री सावडार गाँव घाण्ड उपके ज्ञा. श्रे स्वरूप भा. हीरल पु. रूपा भा. पाशदेश्रेयसे श्री (आदिनाथ)? बिंब कारितं प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरिभिः।।''

51. आदिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1389 .... आदिनाथ कारितः श्री गुणचंद्र सागर सूरिभिः।।''

52. श्री पार्श्वनाथ भगवान 5'' ऊँची पंचतीर्थी पर यह लेख है :–

''सं. 1078 ? खंडा की वनि गो आगापित''

लेख बिल्कुल अस्पष्ट है। यह मूर्ति बहुत प्राचीन प्रतीत होती है। इसमें खुदाई का काम बहुत सुंदर है सर्पो की नीचे की रेखाएँ तक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं।

53. श्री आदिनाथ जी की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1228....सुत माल्ह केन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्त सूरिभिः।।''

54. वासुपूज्य भगवान की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमाः पर यह लेख है :–

''सं. 1495 वर्ष ज्येष्ठ सु. 14 उपकेश ज्ञातीय लेरमार गोत्रे सा. चेहड़ सुत सा. उदाकेन भा. सीलरे सुत सा. सानहिगर सादे निज श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री वरट गच्छ गाया वदि।।''

55. श्री जिनेश्वर भगवान 5'' ऊँची प्रतिमा पर लांछन नहीं है और लेख घिस गया है।

56. श्री शीतलनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी पर लेख है :–

''संवत् 1513 वर्षे वै. सुदि 6 गुरौ उपकेश माहिराज पुत्र ज्ञा. काल्हा सुत कलसिंह पु. घनासा शीतलनाथ बिंब का प्र. धर्म्म ...(क ग) .. श्री साधु...''

57. जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

लेख ''....बिंब कारितं प्रतिष्ठितं ...श्री रामचन्द्र सूरिभिः।।''

58. जिनेश्वर भगवान् की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''कारित प्र. वे. श्री दिनीन्द्र सूरीणामुपदेशिना''

59. श्री नेमिनाथ जी की अति सुन्दर 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1402 वर्षे वैशाष वदि 5 उपकेश ज्ञा. रवित्र गोत्रे सा. लूणा भा. तेजलदे पुत्र कालू रूल्हा भा. परवणा पु. केल्हा द्वापा आल्हा तेजा सीमाकेन श्री नेमिनाथ बिंब काराप्त व निज पुण्यार्थ आत्म श्रे उपकेश गच्छे कुकृ दाचार्य सू. श्री सिंद्ध सूरिः।।''

60. वासुपूज्य भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1423 फागुण सुदि 9 भोम श्रीमाल जा. जोहण भा. माल्हण दे सुत आल्हा पाल्हा पितृ मात्रोः द्वाभ्यां श्रियांस श्री वासुपूज्य बिंब कारितं श्री उदयचंद्र सूरीणामुदेशात्।।''

61. पार्श्वनाथ जी की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1457 पु. आषाढ सुदि 5 गुरौ प्रा. ज्ञा. घवहावड भा. माषलादे पु. त्रिभूणा केन पित्रोः श्रे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं साधु पू. प. श्री धर्म तिलक सुरिभिः।।''

62. पार्श्वनाथ जी की 6'' ऊँची प्रतिमा पर लेख नहीं है।

63. शीतलनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1549 वर्षे आषाढ सुदि 2 उसवाल ज्ञा. वाकनोल गोत्रे सा. षेठा पु. सहसमल भा. सुहिताल दे पुत्र ठाकुर सिवकर सुतेन आत्म श्रेयसे मातृपितृ पुण्यार्थ शीतलनाथ बिंब का.प्र....''

64. आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1453 वर्ष वी. शा. सुदि 2 हु व. ज्ञा. श्रणदेव भा. चापतदेवि पुत्र हापाकेन हापा भा. हल्लपु मु. पतितसुव वीला हुवड रा. श्री सर्वानंद सूरि पं. श्री मिहदत्त सूरिभिः।।श्री।।''

65. वासुपूज्य भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1491 वर्ष वैशाष वदि 12 रवौ उपकेश ज्ञाती भा कुंती कऊरदे पुत्र मढा भा. चापल दे... श्री वासुपूज्य बिंब का. उपकेश गच्छे मेदुरीय श्री दिवगुप्त सूरिभिः।।''

66. आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1597 वर्ष विशाष वदि 11 सोम श्री... पुत्र सहितेन स्वा. श्री आदिनाथ बिंब का. प्र. श्री वीर सूरिभिः।।''

67. श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1505 वर्षे वैशाख सुदि 6 सोमे (भोमे) श्री संडेर गच्छे उप ज्ञा. वासुता गोत्रे सा. गोगण पु. षेहा पुत्र उलाकेन भा. गोगी पुत्र वामा कुना सहितेन पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंब का. प्र. श्री कीर्ति सूरिः।।''

68. सुविधिनाथ जी की 6'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1515 वर्षे वैशाष वदि 5 सोमे गिरिपुर वास्तव्य हुंवड ज्ञाति मंत्रासर गोत्रे देदी कतर भा. वाउजाला भा. हीसु. सु. आसाकेन भा. रूपा. सुतेन स्व. श्रे. सुविधि नाथ बिंब कारितं वृत्तपागच्छे श्री रत्नसिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितम्।।''

69. धर्मनाथ जी की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1511 वर्षे माघ वदि 6 गुरु दिने उप. ज्ञा. वालदरागोत्रे सा. वारा भा. सगुणास जेठा भा. जेसमा देव्या सहितया स श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारा. प्र. श्री....रामसेनीया श्री मल्यचंद्र सूरिभिः।।''

70. श्री अजितनाथ जी की 5'' ऊँची प्रतिमा का ऊपरी भाग खण्डित है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1525 वर्षे चैत्र वदि 10 गुरौ बडजातीया वर रज गोत्रे श्वेत कर्मन भा. मातृ सुत 4 ना कान्हा श्रियार्थ श्री अजितनाथ बिंब प्रतिष्ठितं श्रीः।।''

71. जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''1292 आषाढ सुदि 8...साहेण पु. गांगाष्या पितृ स श्रेयार्थ कारितं प्रतिष्ठिथं श्री देवगुप्त सूरिभि।।

72–73. जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची व 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख व लांछन नहीं है।

74. श्री विमलनाथ जी की 4'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :–

''श्री विमलनाथ बिंब सं. 1783 सा. तेजनी कारितम्''

75. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 6'' ऊँची है, लेख पढ़ने में नहीं आता।

76. श्री ऋषभदेव जी की प्रतिमा 7'' ऊँची है, नीचे लांछन (वृषभ) बना है तथा अस्पष्ट लेख है :–

''सं. 1786 वर्षे सा. वरलनग जी भार्या जसपाद प्रतमा पताप''

77. शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1491 वर्षे वैशाषं सुदि 6 गुरे चरणा भा. पूनादे सुत हीरा केन भा. हीरादे पुत्र ....श्री स्यांति नाथ बिंब श्री सोम सुन्दर सूरिभिः त्रिसुवसु...''

78–79. जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची व 7'' ऊँची प्रतिमाएँ है। इन पर लेख नहीं हैं।

80. श्री पार्श्वनाथ जी की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''1220 स.ले.''

81. श्री पार्श्वनाथ भगवान् की 4'' ऊँची प्रतिमा खंडित है। इसका लेख घिस गया है।

82. श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1148 मा. सु. 10 (शीपदाम नाराय)?''

83. मुनिसुव्रत जी की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''श्री मुनि सुव्रत स्वामि बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरिभिः।।'' यह भी प्रतिमा खण्डित है।

84. जिनेश्वर भगवान् की (संभवतः सुपार्श्वनाथ जी की) खंडित प्रतिमा 4'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''पुत्र हुवाकेन श्री (सुपार्श्व बिंब) प्रतिष्ठितम्''

85. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा खंडित है। इसका लेख नष्ट हो गया है।

86. अरनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1503 वर्षे ज्येष्ठ वदि 11 तन श्री अरूनाथ (अरिनाथ) बिंब आ.प्र. श्री धर्म्मचंद सूरि पट्टे श्री मलयचंद्र सूरिभिः।।''

87. आदिनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1329 वैशाख वदि 9 श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्र. सूरि क''

88. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर लेख बिल्कुल घिस गया है।

89. पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा एक शिखर के अंदर विद्यमान है। यह शिखर दोनों ओर से खुलता है। प्रतिमा शिखर सहित 4'' ऊँची है।

90. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा पर लाल प्रस्तर लगा है। पीछे ''मूल संघ'' लिखा है।

91–92. जिनेश्वर भगवान् की 2'' तथा 2'' ऊँची दो मूर्तियां हैं, जिन पर लेख नहीं है।

93. चतुर्मुख प्रतिमाएँ एक शिखर के अंदर स्थित हैं। केवल तीन प्रतिमा है। एक भग्न हो गई है। शिखर सहित प्रतिमाओं की ऊँचाई 4'' है। वेदी पर यह लेख है :–

''संवत् 1694 का चंद्र काष्ठा संघ उकेश''

94. जिनेश्वर भगवान की पंचतीर्थी 5'' ऊँची प्रतिमा पर पृष्ठ भाग में केवल ''गच्छे'' पढ़ने में आता है। शेष लेख घिस गया है।

95. पार्श्वनाथ भगवान् की 4'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1423 फागु. सु. 8 सोम प्रा. वहादर पाना आनण दे पु. निज पालेन पित्रोः श्रिये श्री पार्श्वनाथं बिंब का. प्र. शीलचंद्र''

96. आदिनाथ भगवान् की 4'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 13 (12 ? 45 वैशाख सुदि...''

97. महावीर स्वामी की प्रतिमा 4'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1391 दावड़ा रघगा श्री पादा का जासनध भा. कसमीदे श्री महावीर बिबं का. प्रति. श्री रत्नाकर सूरि पट्टे श्री सोम तिलक सूरिः।।''

98. आदिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''सं. 1473 वर्षे ज्येष्ठ सुदि 5 शुक्रवारे वावेल गोत्र नरदत्त पु. आल्हा पाल्हा मातृ पितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंब कारापितं श्री धर्मचंद''

99. जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :–

(1601) ? वर्षे वैशाख वदि 1 लिखा है :–

100. श्री चंद्रप्रभ स्वामी की 5'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1415 विषवट गोत्र शान्ति श्रण भा. भद्रा (?) श्री पु. गोवांटन आत्म पूर्वज निमित्तं चंद्रप्रभ बिंब का. प्र. धर्म घोष गच्छे सर्वानंद सूरिभिः।।''

101. दुर्गा देवी की खड्ग त्रिशूल तथा नरमुंड धारी प्रतिमा 4'' ऊँची है।

102. पार्श्वनाथ भगवान की गोल पाट पर 3'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख नहीं है।

103. अरनाथ भगवान की पत्रे पर आकृति 2'' की है जिस पर ''श्री अरनाथ'' लिखा है।

104. जिनेश्वर भगवान की पत्रे पर आकृति 2'' की है।

105. पंचतीर्थी पत्राकृति 2'' की है, जिस पर लेख है :–
''सवाव्रत''

106. पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची मूर्ति (प्रतिमा) है। इस पर लेख है, जो अस्पष्ट है :–
(मूली सींघ श्री रामकाप्रिय सामान जी) ?

107. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :– ''सं. 1783 तेजसा का''

108. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :– सं. 1661 वर्षे श्री... वादि भूषण?

109. श्री ऋषभदेव जी 3'' ऊँची प्रतिमा पर लेख अस्पष्ट है।

110. शांतिनाथ भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा पर लेख अस्पष्ट है, केवल ''1087'' पढ़ने में आता है।

111. श्री महावीर भगवान् की 4'' ऊँची प्रतिमा पर भी लेख स्पष्ट नहीं है।

112–113. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची 2 मूर्तियों पर ''1783 सा. तेजा'' पढ़ने में आता है।

114. श्री सुपार्श्वनाथ जी की 3'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
''सुपार्श्वनाथ तपागच्छे तेजसा निर्मितम्''

115. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा पर यह लेख है :–
''नवल दिकेन'' ऐसा कुछ अस्पष्ट लेख है।

116. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची एक अन्य प्रतिमा पर यह लेख है :–
''1783 तेजसा'' लिखा है।

117. जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा पर लेख है :–
''संवत् 1725 वर्षे चेत्र सुदि 1''

118. वासुपूज्य भगवान जी की 3'' ऊँची प्रतिमा है इस पर लेख है :–
''तपा गच्छा तेजसा'' पढ़ने में आता है।

119. जिनेश्वर भगवान् की 3'' ऊँची प्रतिमा पर भी ''तपागच्छ तेजसा'' लेख है।

120. चंद्र प्रभु भगवान की 3'' ऊँची प्रतिमा पर लेख स्पष्ट नहीं है।
उक्त प्रतिमाओं में से तीन प्रतिमाएँ राजसमन्द जिनालय में भेजी गयी।

देरासर में स्थित चल पाषाण प्रतिमाएँ :–

1. जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की एक खण्डित प्रतिमा पर ''प्रतिष्ठितं मूले'' ही पढ़ने में आता है।
2. जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है, जिस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्वेत पाषाण पर दो चरण पादुकाएँ 5'' तथा 3'' लम्बी खुदी है। इन पर कोई लेख नहीं हैं।

परिक्रमा :

मंदिर के चारों ओर परिक्रमा है, जो एक बरामदे के रूप में है। बरामदे की चौड़ाई 5.5 फीट है। इस परिक्रमा में 38 स्तंभ है। मंदिर में काँच की जड़ाई की गयी है। दीवारों पर विभिन्न जैन तीर्थों के चित्र अंकित किये हुए है।

उपाश्रय :

मंदिर का मुख्य द्वार पूर्व में है। इस द्वार के अतिरिक्त एक छोटा द्वार उत्तर में जिनालयों के बीच में होकर एक उपाश्रय में पहुंचाता है। यह उपाश्रय बहुत बड़ा है। इसी में मंदिर की पेढ़ी भी है। इस उपाश्रय में तपागच्छ की सबसे बड़ी गद्दी है, जिनके पूज्य श्री अणनाथ जी थे। यह उपाश्रय सं. 1725 में माह सुदि 10 को तैयार हुआ था और वृद्धि शाखाय वरदीचन्द पुत्र कल्याणदास आदि एक खम्भे पर खुदा हुआ पढ़ने में आता है। उपाश्रय में 28 स्तंभ है। इनमें से कुछ पर रंगीन चित्रकारी बेल बूटे आदि बने है। छत पर भी चित्रांग बने है। गद्दी के चारों ओर तोरण बने हुए हैं। उपाश्रय के ऊपर दूसरी मंजिल में भी रंगीन चित्रकारी का सुन्दर काम किया गया है। ऊपर यतियों के लिए आवासगृह बना है। यहाँ पर दक्षिणमुखी मणिभद्र जी की नारियल के काछला की प्रतिमा है, जहाँ अखण्ड ज्योत होती है।

इसका एक द्वार उत्तर दिशा में गणेश घाटी मार्ग पर है। यह मंदिर उदयपुर का सबसे बड़ा और सुन्दरतम मंदिर है। इस मंदिर की देख–रेख ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री चन्द्र पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
जगदीश रोड, उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर शहर में घंटाघर से राजमहल की ओर जाते समय, कसारों की ओल के पास बाईं तरफ स्थित है। इस मंदिर में स्थापित प्रतिमा पार्श्वनाथ भगवान की है, जिसका लांछन सर्प स्पष्ट दिखता है। इस प्रतिमा पर चन्द्रमा जैसी नीली झाई (परछाई) पड़ती है, इसलिये सम्भवतया चन्द्र पार्श्वनाथ भगवान कहते है। इस तीर्थ का पार्श्वनाथ प्रभु के 108 तीर्थों में नाम है।

उदयपुर की स्थापना सं. 1616 में हुई जब कि प्रतिष्ठित प्रतिमा सं. 1325 की है। इसका अभिप्रायः यह है कि उदयपुर बसने के पहले यहाँ पर कोई कस्बा/ग्राम रहा होगा और मंदिर प्राचीनतम है या सम्भवतया प्रतिमा की अंजनशाला अन्यंत्र हुई हो। प्राचीनकाल में साधन कम होने से, यह सम्भावना सही प्रतीत नहीं होती। यह अवश्य मानना होगा यह प्रतिमा बहुत प्राचीन एवं चमत्कारिक है। इस मंदिर में चरण पादुकाएँ संवत् 1608 के स्थापित हैं। सम्भवतया यहाँ पूर्व में कस्बा रहा होगा, कहा जाता है कि यहाँ पिछोली नाम का कस्बा था।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूल नायक श्री चन्द्र पार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 39'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पार्श्व में पंच तीर्थी परिकर है। प्रतिमा पर लेख है :– ''वि. सम्मत् 1325 वर्षे आषाद सुद 8 सोमे श्री वृहद् गच्छे सा. श्री पार्श्वनाथ प्रतिष्ठित कारित प्रतिष्ठित्'' लेख बहुत ही घिसा हुआ, अस्पष्ट है।
2. मूलनायक के दाहिनी तरफ परिकर के नीचे श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा खण्डित है।
3. इसके आगे आदिनाथ भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। चिह्न अस्पष्ट है, लेकिन आदिनाथ जी की प्रतीत होती है। लेख इस प्रकार हैः– ''संवत् 1742 में पोरवाल गौत्रे सा. हिनोत तत्पुत्र देदा दाना बिबं कारापितं ––––––अस्पष्ट है।

4. इसके आगे थोड़ा नीचे की ओर आदिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। लेख यह है कि ''आदिनाथ बिंब''।

5. मूलनायक के बाईं ओर परिकर के नीचे श्याम पाषाण की घिसी हुई पार्श्वनाथ भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

6. इसके आगे सुपार्श्वनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। लांछन स्वास्तिक दिखने में आता है। इसके पास ही श्वेत पाषाण में चरण पादुका स्थापित है, जिस पर लिखा केवल संवत् 1608 पढ़ने में आता है, आगे अस्पष्ट है।

इस मंदिर में निम्न उत्थापित प्रतिमाएँ है, जिनको सीमेंट से स्थापित कराई है, जिसके कारण किसी प्रकार के लेख को पढ़ा नहीं जा सकता। इन प्रतिमाओं का विवरण निम्न प्रकार है।

मूलनायक के बाईं ओर

1. पंच धातु की पंच तीर्थी 5'' ऊँची प्रतिमा है।
2. जिनेश्वर भगवान की (पीतल की) 4'' ऊँची प्रतिमा है।

मूल नायक के दाहिनी ओर

1. पंच तीर्थी प्रतिमा, जिसकी ऊँचाई 5'' है।
2. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है।

यंत्र निम्न प्रकार है :–

1. सिद्ध चक्र यंत्र गोलाकार 6'' व्यास का है व दूसरा सिद्धचक्र यंत्र 4'' वर्गाकार का है।
2. अष्ट मंगल यंत्र (या ऋषि मंडल यंत्र) 6'' x 3'' है। उक्त दोनों यंत्र भी सीमेंट से स्थापित किये हैं, जिससे उस पर उत्कीर्ण लेख को नहीं पढ़ा जा सकता। सम्पूर्ण मंदिर में चीनी की टाईल्स लगी हुई है। मंदिर में तीर्थंकरों के भित्ति चित्र बने हुए है और प्राचीन चित्रकारी की हुई है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर (उत्तरी दीवार) पर एक आलिए में मणिभद्र जी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की है, लेख इस प्रकार है ––– ''स्वास्ति श्री संवत् 1989 विजयादेश सूरि श्री ––– मणिभ्रद मणिभ्रद मूर्ति ।।'' स्वास्ति श्री उदयपुर नगरें श्री चन्द्र पार्श्वनाथ जी महाराज मंदिर महाराणा श्री भूपालसिंह जी विजय राज्ये ओ. वृ. लोढ़ा गौत्रीय सा. केसरी चन्द्र जी पु. सिरदारमलजी द्वि. जोरावरमल जी पु. चुन्नीलाल जी पौत्र राजमल जी मोखमसिंह जी रोशनलाल हस्तिमल भंवरलाल आदि परिवारेण श्री संघ श्रैयार्थ श्री मणी भद्र जी प्रतिमा कारापिता भट्टा. श्री अनूपचन्दं प्रतिष्ठिता वि.सं. 1991 का द्वितीय वै.शु. 15''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर (दक्षिण दीवार) एक आलिए में पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

।। श्री ।। 24 ।।

''श्री शुभ संवत् 1989 माघ शुक्ला 13 बुधवासरे श्री चन्द्र पार्श्वनाथ जी मंदिर श्री पद्मावती देव्या प्रतिमूर्ति उदयपुर वास्तव्य वृ.लो. गच्छीयं ऋ. गुलाब चन्द्र अनूपचन्द्राभ्यां स्व श्रेयार्थ प्रतिष्ठित संस्थापित च श्री सधस्य शान्ति कारक भवतु।''

दूसरी मंजिल में पश्चिम की ओर एक देवरीनुमा आलिए में

1. गौतम स्वामी की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है, जिस पर लेख '' गौतम स्वामी प्र.'' लिखा है।
2. जिन कुशल सूरि की श्वेत पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा, जिस पर लेख है :– ''संवत् 2011 वै.शु. 5 श्री जिनकुशनसूरिस्वें प्रतिष्ठित''

मंदिर में काला भैरव, गौरा भैरव, अम्बिका देवी, लक्ष्मी देवी के भित्ति चित्र है। इस मंदिर की देख–रेख खाब्या परिवार द्वारा की जाती है।

❑❑❑

प्राचीन इतिहास के अनुसार 2,200 वर्ष पूर्व
राजा सम्प्रति (सम्राट अशोक के पौत्र) द्वारा
1,25,00,000 प्रतिमाएँ बनवाई
1,25,000 जैन मंदिर बनवाए व
36,000 मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (कसौटी का)
जगदीश रोड, उदयपुर

यह मंदिर राजमहल की ओर जाते समय मुख्य सड़क पर स्थित है। यह मंदिर खमेसरा परिवार द्वारा बनवाया गया है। यह शिखरबंद मंदिर बहुत प्राचीन है।

ऐसा कहा जाता है कि कुछ मंदिर जैसे– जगदीश मंदिर, बाफनों का मंदिर, कसौटी का मंदिर, विष्णु जी का मंदिर (धाय मंदिर) आदि एक ही समय में महल के लिये लाए गए पत्थरों में से बचे हुए पत्थरों से बने है। ये मंदिर महाराणा जगतसिंह जी (1684–1709) के समय में निर्मित हुए थे।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाओं पर

1. श्री शांतिनाथ भगवान सं. 1704
2. श्री चरण पादुका (श्री गुणसागर जी) सं. 1702
3. श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा सं. 1709

उत्कीर्ण पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि, इस मंदिर का निर्माण इसी समय होकर मूर्तियों की प्रतिष्ठा हुई होगी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ है–

1. मूलनायक–कसौटी के पत्थर की बनी 17'' ऊँची पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है। प्रतिमा के मस्तक पर सर्प के 7 फण हैं। कुछ स्थानों पर पबासन खंडित हो गया है और कुछ लेख भी है, लेकिन घिस जाने से अस्पष्ट है, उन्हें पढ़ा नहीं जा सकता। मूलनायक के नीचे की ओर 11'' ऊँची पद्मावती माता की प्रतिमा बनी हुई है उनके मस्तक पर छोटे जिनेश्वर भगवान बिराजित है।
2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्वेत पाषाण की जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची है। कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है।

3. इसके पास ही 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की एक प्रतिमा है। प्रतिमा के नीचे हरिण जैसा लांछन है, जो शांतिनाथ भगवान का है।

4. मूल नायक के बाईं ओर जिनेश्वर भगवान की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। लांछन व लेख पढ़ने में नहीं आता।

5. इसी के पास ही श्याम वर्ण की वासुपूज्य भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। लेख स्पष्ट नहीं है, सिर्फ **''वासुपूज्य''** पढ़ने में आता है। पबासन काफी पुराना, घिसा हुआ है। जिससे इसकी प्राचीनता का पता लगता है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. एक यंत्र तांबे का बना है, जिसका आकार 16'' x 16'' है, जिसके मध्य भाग में ऊँ लिखा है, तथा यह मंत्र उत्कीर्ण है :–

   ''साधकस्य सर्व कार्य सिद्धि भवतु'' आगे इस यंत्र पर लेख है

   ''वि.सं. 1999 वर्षे आषाढ़ सु. 2 खौ पुष्य मालियावत मेहता राह् चन्द्रेण सपुत्र सेवन्तीलाल श्रे. इदं यंत्रं की प्रतिष्ठित श्री विजय मोहन सूरीश्वर लिखितं लेखनकला निपुणेन लेखक गोवर्धनदा सेन गुर्जर पत्र ने''

   इसके चारों ओर 24 तीर्थंकरों के नाम अंकित करते हुए नमस्कार लिखा है। इसके आगे विद्या देवियों को नमस्कार किया हुआ है, बीच में संख्या अंकित है।

2. पंच धातु की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। जिस पर लेख है ''सं. 1553 वर्षे पौष वदि 02 बुधे सुराणा गौत्रे सां. सखा पुत्र मेघा पुत्र सा. सूर्य भानु सा. मेधाकेन पितृ पुन्यार्थ श्री आदिनाथ बिम्ब कारितं श्री धर्मघोष गच्छे प्रतिष्ठितं म. श्री नंदीवर्धन सूरिभिः''

3. पंच धातु की पंच तीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा है, इस पर लेख है :–

   ''सं. 1558 वर्षे वै.व. 7 बुधे डूँगरपुर वास्तय श्री हुमड़ जातीय धीरज छा. सदा भा. सहबदे सु. हर्षोषदे प्र. कुटुम्बयुतेन श्री सुमतिनाथ विबं प्र. रदन पा. पक्षे म. श्री नन्दीसागर सूरिभि– श्री''

4. पंच धातु का अष्टमंगल यंत्र है, जिसका आकार 6'' x 4'' है।

5. चांदी का सिद्ध चक्र यंत्र है, जिसका व्यास 6'' का है। लेख है :–

   ''वीर समंत 2406 वैशाख सु 7 वि.सं. 2006 सोमवार आचार्य श्री विजय हर्ष सूरिणां श्री सिद्ध चक्र प्रतिष्ठितं गिरनार पर्वतः वीरचन्द सिरोया उदयपुर मेवाड़ देशनिवासिना करापितम्।''

बाहरी सभा मंडप में बाईं ओर एक आलिए में :–

1. मध्य में आदिनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। यह प्रतिमा नाक के यहाँ से खण्डित है।
2. मूल नायक (ऋषभदेव) के दाहिनी ओर महावीर स्वामी की 7'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1709 वर्षे माह शु. 1 अंकित है। इसके नीचे लेख अस्पष्ट है।
3. बाईं ओर पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा 5'' ऊँची है। लांछन सर्प घिस गया है।

इसके आगे के आलिए में :

1. श्याम वर्ण की पार्श्व यक्ष की 13'' ऊँची प्रतिमा है।
2. श्वेत पाषाण की देवी की 7'' ऊँची प्रतिमा है।

   इन दोनों प्रतिमाओं पर कोई लेख नहीं है।

इसके आगे के आलिए में :

1. मध्य में जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण 9'' ऊँची प्रतिमा है।

   (2–3) मूलनायक के दाहिनी तथा बाईं ओर जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

इसके आगे के आलिए में :

(1–2) श्वेत पाषाण का परिकर का टुकडा है, जिसमें दो जिन प्रतिमाएँ 9'' ऊँची है।

3–4 परिकर के दोनों ओर 3'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

इसी आलिए में दक्षिण की ओर एक श्वेत पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है। सम्भवतया यह गौतम स्वामी की प्रतिमा है।

बाहरी सभा मंडप में निज मंदिर के बाहर दाहिनी ओर एक काँच के आलिए में शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है।

पबासन पर लिखा हुआ अस्पष्ट है केवल यह पढ़ने में आता है –'' आषाढ़ मासे तिथो बिंब प्रतिष्ठिंत'' लांछन हरिण का है''। इसके दोनों ओर लेख है –

''सं. 1704 वैशाख मासे राणा श्री जगतसिंह जी विजयराज्ये श्री धन्ना तद् भार्या सुकमा तयो पुत्र श्री विकास मालोत संजो श्री त.पु. विसनदास सदा लखा तत्पुत्र श्री गांगा श्री शांतिनाथ प्रतिमां कारापित प्रतिष्ठित। श्री विजयगच्छे कल्याण सागर सूरिभि तत्पट्टे आचार्य सुमतिसागर सूरिभि। श्री जगतसिंघ राणा उदयपुर– श्री कल्याण सागर सूरिभि

प्रतिष्ठायता श्री रूखमा तत्पुत्र''

इसके आगे के आलिए में श्वेत पाषाण की 12'' वर्गाकार चरण पादुका है।

इस पर लेख है :–

''सं. 1702 वर्षे श्राविका सवना तत्पुत्री जधीष श्री पूज्य गुण सागर सूरिणा पादुका करापिता प्रतिष्ठिता विजय गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीभि':'

इसके आगे के आलिए में पद्मावती माता के मस्तक पर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची श्याम पाषाण की है।

आगे उत्तरी दीवार में एक आलिए में श्वेत पाषाण की एक चतुर्भुज प्रतिमा 17'' ऊँची है, जो इस मंदिर के क्षेत्रपाल जी (भैरवजी) की है– बाईं ओर श्वान वाहन है।

निज मंदिर का आकार 6' X 4.6' है। फर्श पर चीनी की टाइल्स् लगी हुई है, दीवार पर काँच जड़े हुए हैं।

बाहरी सभा मंडप का आकार 35' X 18' है। इसमें कुल 18 स्तंभ है। दीवारों पर चीनी की टाइल्स लगी हुई है। काँच का कार्य तथा चित्रकारी की हुई है।

उत्तरी–दक्षिणी दीवार पर नाकोड़ा पार्श्वनाथ, शंखेश्वर पार्श्वनाथ आदि के पट्ट लगे हुए है।

इस मंदिर में यदा–कदा सर्प के दर्शन होते रहते है।

इस मंदिर में निम्न गौत्र के परिवार की बैठक है :–

1. खमेसरा	2. सरूपरिया	3. नाहर	4. बोल्या
5. डांगी	6. मट्टा	7. शिशोदिया	8. बम्ब

इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपाश्रय ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

रात्री भोजन करो।
नरक में जाने की तैयारी करो।।

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (बापनों का मंदिर) जगदीश रोड, उदयपुर

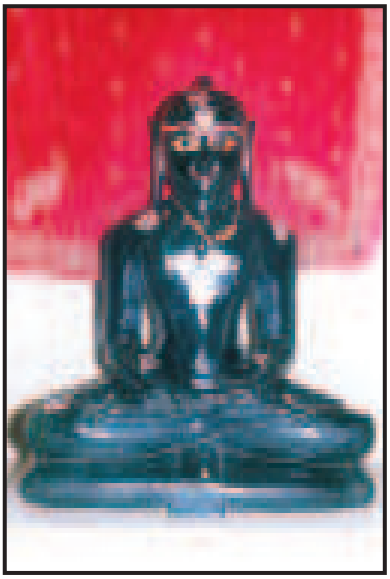

यह मंदिर घंटाघर से राजमहल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर स्थित है। यह प्राचीन मंदिरों में से एक है। यह शिखरबंद मंदिर बापना परिवार ने बनवाया है, इसलिए यह बापना मंदिर भी कहलाता है। मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर एक शिलालेख लिखा हुआ है, सम्भवतया यह शिलालेख प्रतिमा पर उत्कीर्ण समय के आधार पर लिखा होगा।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा वर्ष 1709 के माघ मास में सम्पन्न हुई अर्थात् इस मंदिर का निर्माण हुए 350 वर्ष हो गये है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव जी की 31'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट है, तथा पबासन पर लेख अस्पष्ट है, जो निम्न प्रकार है :–

   ''संवत् 1709 वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे ....राणा श्री राजसिंह जी विजय राज्ये....श्रीमान् विजयसिंह जी भार्या.....परिवार संयुतेन...''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर पार्श्वनाथ भगवान की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। मस्तक पर सर्प का छत्र है। इसके नीचे निम्न लेख है :–

   ''सवत् 1709 वर्षे माघ शु. पक्षे त्रियोदशी तिथौ सोमवासरे मेदपाट देशे उदयपुर नगरे राणा श्री राजसिंह जी विजय राज्ये उशवंशे बापना गौत्रे सा. भभूता बजरंगदे पुत्र देदा राजा रासा देदा भार्या गंगादे पु. प्रताप दा पु. पदारथ भा. अपूरवदे सिंगारदे पुत्र करण जी वर्द्धमान सा. विजयसिंह करण जी भा. कमलादे पु. चापसी वर्धमान भार्या अमृतदे पु. सूर्यमल्ल नाथू विजय सिंघ भा. सूर्य दे पु. तिरलोकसी अनजी न्यामातसा पीया भा. भावदे. पुत्र सा. राजा भा. रूण दे अजायबदे पुत्र रामजी रूपजी सोमजी समस्त परिवार युतेन प्रतिष्ठितम् विजय गच्छे श्री कल्याण सागर सूरिभिः तत्पट्ट श्री सुमति सागर सूरिभिः।''

3. पार्श्वनाथ भगवान के पास श्वेत पाषाण की गौतम स्वामी की 11'' ऊँची उत्थापित

प्रतिमा है। इस पर लेख है ''श्री गौतम स्वामी मूर्तिः करापिता राम कुवरसिंह जी ने सं. 1992 का वैशाख शुक्ला 10 विजय शान्ति सूरिभि. प्र.।''

4. मूलनायक के बाईं ओर सीमन्धर स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है लांछन ऋषभ है। लेख इस प्रकार है :–

''संवत 1735 वर्षे वैशाख शु. सप्तभ्यां गुरुवासरे पुष्य नक्षत्रे देऊ उदयपुर श्री राणा राजसिंह राज्ये वास्तुन्म उपकेश वंशे बापणा गोत्रे स. भभु भा. बजरंग दे पुत्र देढ़ा भा. गंगादे पु.सां. पदारथ भा. सिगांरदे कु. सां. विजय सिंघ भार्या सुषमा सूर्य दे द्वि विनयदे, पुत्रा श्रेय प्र. पु. तिलोक सी भा. भावल दे पु. नेमाचन्द कपूरचन्द पो. द्वि, पु. कुंभ जी भा. कस्तूरी दे नृ.पु. सिंघजी भा.....दे.. पुत्र अमीचद श्री सीमन्दर बिंब कारितं श्री विजय गच्छे श्री पूज्य श्री कल्याण सागर सुरिभिः तत्पट्टे श्री पूज्य सुमितसागर।''

निज मंदिर में उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ निम्न हैं :–

1. चौबीसी प्रतिमा 11'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

''शिवराज संताने सं. भीखा पुत्र श्री विक्रम संवत् 1563 वर्षे चैत्र विद 11 गुरौ श्री उसवंशें दूगड गोत्रे सा. धणपति भा. नवली पु. नरसंघ भा. पु. परवत सहसण सकुटुम्ब युतेन श्री अनन्तनाथ बिंब कारापिंत प्र. श्री सूरिभि श्री बड़ाघदर पर वास्तव्यं''

2. पंच धातु की चौबीसी 10'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है :–

''सं. 1551 वर्षे जेठ सु. 13 शुके श्री कारण्ट गच्छे श्री ऊषवंशे रातड़िया गौत्रे भ. मरिया मं. 3 उर्जनेन भा. सगऊसूरत दे मं. पु. मासिगर आपा शिखा देना दीता युतेन पृथ भा. साऊसी निभी श्री कु. पुज्य प्रमुखे चौबीशंति का पट्ट का. प्र. श्री नभसूरिभि''

3. धातु का सिद्ध चक्र यंत्र गोलाकार 6'' व्यास का है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर निम्न प्रतिमाएँ एक कारनिस पर स्थापित है :–

1. आदेश्वर भगवान की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट नहीं है, लेकिन लेख के अनुसार यह आदेश्वर भगवान की प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1709 वर्षे माघ मासे शु. पक्षे मेदपाट उदयपुर नगरे राणा श्री राजसिंह विजयराज्ये उषवंशे बापणा गोत्रे सा. मेघा भा. महिमा दे पं. रायचन्द्र भा. आघरा पु. सांगराम पुत्र रासरू श्रे. आदिनाथ बिंब का. प्र. श्री विजयगच्छे श्री पूज्य कल्याण सागर सूरिभिः आचार्य श्री सुमति सागर सूरिभिः।''

2. सुपार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्वास्तिक स्पष्ट है। लेख इस प्रकार है :– ''संवत् 1709 वर्षे माघ मासे शु. पक्षे कपूरदे ....।''

3. श्री चन्द्र प्रभु भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन चन्द्रमा स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।

4. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है, कोई लेख नहीं है।

5–6. पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची पाषाण की प्रतिमा है।

7–8. श्राविका की हाथ जोड़ कर खड़ी 2'' ऊँची पाषाण की प्रतिमा है।

9–10. पार्श्वनाथ भगवान की 2'' ऊँची प्रतिमा के मस्तक पर सर्प का फण है।

11. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लांछन व लेख नहीं है।

12. एक श्राविका की 5'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है, जिसकी गोद में बच्चा है। कोई लेख नहीं है।

13. जिनेश्वर भगवान की 12'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख व लांछन नहीं है।

14. शांतिनाथ भगवान की 10'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन हिरण दिखाई देता है।

15. जिनेश्वर भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर अस्पष्ट लेख है :– ''सं. 1709 वर्षे माघ मासे शुक्ले पक्षे 3 राणा श्री राजसिंह विजयराज्ये बापना गोत्रे सा. उदा भार्या कपूर दे सकर दे..... ।''

16. जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

17. किसी तीर्थंकर भगवान या गुरु की पादुका स्थापित है, जिसका आकार 8.6'' x 6.6'' है।

18. सिद्ध चक्र यंत्र 16'' व्यास श्वेत पाषाण का है। इस पर लेख है :– वि.सं. 1490 वै. श्री संगेन श्री सिद्ध–चक्र यंत्रं का.पं. श्री सोम सुन्दर सूरि।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक कारनिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. सीमन्धर स्वामी की प्रतिमा श्वेत पाषाण से निर्मित 27'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :–

   ''संवत् 1735 वैशाख शुक्ल पक्षे सप्रम्यां गुरुवारे पुष्य नक्षत्रे श्री उदयपुरे राणा जी श्री राजसिंह राज्ये वास्तव्य असवाल जाति बापणा सा. भा. बजरंग दे पु.सं. देदा भा. गंगादे पु. सं. पीथा भा. पाट नदी पु. सं. ऋषभदास भा. मनरूपदे श्री श्री सीमंधरस्य बिंब कारितं श्री विजयगच्छेदे भट्टारक श्री कल्याण सागर सूरि तत्पट्टे भ. श्री सुमति सागर सूरिभिः''

2. श्री चन्द्र प्रभु स्वामी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिस पर लेख है'' संवत् 1545 का वैशाख शु. 3 राजसिंघ राज्ये श्री जीवनलाल जी।''

3. श्री वासु पूज्य स्वामी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख में केवल ''वासु पूज्य बिंब'' लिखा है।

4. पद्मावती देवी की 3'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

5. जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची पाषाण की प्रतिमा है। कोई लांछन व लेख नहीं है।

6. जिनेश्वर भगवान की 17'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लांछन व लेख नहीं है।

7. आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :–

   ''संवत् 1709 वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे 13 तिथे मेदपाट उदयपुर नगरें श्री राजसिंह राज्ये उशवंशे सा. समरूदास भार्या आदिनाथ बिंब का. प्र.।''

8 चन्द्र प्रभु स्वामी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 21'' ऊँची है। लांछन चन्द्रमा का स्पष्ट है। लेख इस प्रकार है :– ''सं. 1709 वर्षे ..... मेदपाट उदयपुर नगरे श्री राजसिंह राज्ये उशवंशे बापना गोत्रे देदा भा. गंगा पु. पदारथ पीथा भा सुवरदे श्री चन्द्र प्रभोः बिंब का. प्र. श्री सुमतिसागर सूरिभिः।''

9. शीतलनाथ भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सवत् 1709 वर्षे सूदी 12 माघ मासे उदयपुर श्री हेमा श्री शीतलनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितम्''

10. चरण पादुका लाल पाषाण की 12'' वर्गाकार है। लेख अस्पष्ट है सं. 1739 लिखा है।

सभा मंडप से बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में :–

1. श्री गजानन जी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

2. दाहिनी ओर एक आलिए में भैरव जी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

   बाहरी सभा मंडप के दक्षिण की ओर एक देवरी बनी हुई है। देवरी में दो अलग–अलग वेदी पर दो अलग–अलग चरणपादुका श्वेत पाषाण के (एक ही आकार की 14'' x 21'' की वेदी पर) स्थापित है। दोनों पर एक ही प्रकार का लेख है।

   ''श्री घर गौत्रिय राय बद्रीदास सुत राम कुमार श्री संघ श्रेयार्थ कारापितं उदयपुर प्रतने सं. 1991 का वैशाख शुक्ल 10 श्री प्र.यु.प्र. भ. 1008 श्री दादासाहिब श्री जिनकुशलसूरीजी चर्ण प्रतिष्ठितं पूज्यचार्य श्री विजय शान्तिसूरिजी कलिकतापुर वास्तव्य।''

उत्तर की ओर बनी हुई देवरी में :–

जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लांछन व लेख नहीं है।

सड़क से मंदिर आते समय दाहिनी ओर जो उपाश्रय कहलाता है, उसमें उत्तर व पश्चिम कोने में एक शिखरबंद देवरी बनी है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

1. पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक, जिन्हें गौडी पार्श्वनाथ जी कहते हैं) 29'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। मस्तक पर सर्प का छत्र है। लेख इस प्रकार है :– ''संवत् 1819 वर्षे जेठ सुदी 5 शुक्रे महाराणा अरिसिंघ राजे श्री उदयपुर वास्तव्य उपकेश वंशे बापणा गोत्रे मरकू खबचन्द भा. बजारसारयदे त. पुत्र मनोरदास जी भार्या बजाजनानुदे त. पुत्र नषा (नरषा) दोलतदास जी भार्या अघुमाणे द्वितीय भार्या, मातदे सहितेन गोड़ी पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं (ह्यपसिघ) विजयगच्छे श्री सुमितसागर सूरिभिः।''
2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री बाहु स्वामी की (बीस विरहमान) 21'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लेख यह है :– संवत् 1735 वर्षे वैशाख शुक्ले सप्त म्यां गुरुवासरे श्री उदयपुरे राज्य श्री राजसिंघ राज्ये वास्तव्य उपकेश वंशे बापणा गौत्रे सा भभू भार्या बजरंगदे पु. देदा भा. गंगा दे पु. पदारथ भा. सिंगारदेपु विजयसिंघ भा. सूर्यदे भा, विनयदे पु. तिलोक सिंघ सवासिंघजी का श्री बाहु बिंब कारितं श्री विजयगच्छे पूज्य श्री सुमतिसागर सूरि पट्टे पूज्य नय सागर सूरिभिः श्री शुभ मस्तु
3. मूलनायक के बाईं ओर (20 विहरमान) सुबाहु स्वामी की प्रतिमा श्याम पाषाण की 21'' ऊँची है। लेख इस प्रकार है :– ''संवत् 1735 वर्षे वऊँची वैशाख शु. 7 गुरुवासरे उदयपुरे श्री राणा राजसिंघ विजयराज्ये उपकेश वंशे बापणा गोत्रे सा. भभू भा, बजरंगदे पु, देदा भा. गंगादे पु. पदारथ भा. सिंगारदे पु. विजयसिंघ भार्या अर्थदे विनयदे पुत्र तिलोकसिंह भा. सका दे पु. रामचन्द्र कस्तूरचन्द्र सिघ जी कश्मीर दे पु. अमीचन्द्र श्री सुबाहु बिंब कारितं विजयगच्छे श्री सुमतिसागर सूरिभि तत्पट्टे श्री पूज्य विजय सागर सूरिभिः श्री सुबाहु बिंब प्रतिष्ठितं 11 श्री रस्तु 11'' **देवरी के दरवाजे के ऊपर गौडी पार्श्वनाथ की देवरी की प्रतिष्ठा सं. 1819 ज्येष्ठ सुदी 5 को हुई लिखा है।**

देवरी से बाहर निकलते समय बाईं ओर गजानन जी की 11'' ऊँची खड़ी प्रतिमा श्याम पाषाण की है और दाहिनी ओर श्याम पाषाण की भैरव जी की खड़ी प्रतिमा है।

उत्तरी दीवार पर शत्रुंजय महातीर्थ का पट्ट है, जिसको मोहनलाल पुत्र श्री रोशनलाल जी बोल्या ने उनकी पत्नी श्रीमती बसन्त कुंवर की स्मृति में बनवाया।

पश्चिमी दीवार में ऋषि मंडल यंत्र का चित्र बना हुआ है और पश्चिमी दीवार के दक्षिणी कोने में एक आलिए में भैरवजी की श्वेत पाषाण प्रतिमा है।

भैरव जी के दाहिनी ओर 9'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है और बाईं ओर श्याम पाषाण की 5'' ऊँची अंबिका देवी की प्रतिमा है। इस मंदिर की देख–रेख वर्तमान में श्री नवलसिंह जी बापणा द्वारा की जाती है। कोई श्रावक श्राविका पूजा के लिये नहीं आते हैं।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर :–

श्री ऋषभदेव जी महाराज संवत् 1709 का मार्ग शीर्ष शुक्ला 13 को प्रतिष्ठित किया गया लिखा है।

❑❑❑

तीर्थ स्थल न केवल अपने अतीत का ही
नहीं, वरन् ऐतिहासिक घटनाओं का भी
दिग्दर्शन कराते है।

श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर
कसारों की ओल, उदयपुर

यह मंदिर घंटाघर से कसारों की ओल के अंदर जाने के बाद अन्तिम किनारे के पहले सड़क के दाहिनी ओर स्थित है।

यह मंदिर अनोप जी बोल्या के पुत्र मोतीराम जी व मोजीराम जी, जो कि उस समय के महाराणा के प्रधान थे, उन्होंने बनवाया।

यह छोटा व शिखरबंद मंदिर है। यह मंदिर महाराणा अरिसिंह जी के समय में बना है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा (मूल नायक) 51'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके पबासन पर निम्न लेख है :–

''स्वस्ति श्री मनृपति विक्रमार्क समयात् संवत् अष्टादश विशंति 1820 वर्षे शाके षोडश पँचाशीती 1685 प्रवर्तमान मासोंत मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ 15 पूर्णिमाशा बुधवासरे श्री उदयपुर नगरे महाराजाधिराज महाराणा श्री अरिसिंहजी विजयराज्ये तदभिधान उदयपुर वास्तव्य उपकेश वंशे वृद्धि शाखायां बोल्या गोत्रे सा. श्री कान जी तस्य भार्या कनकादे तत्पुत्र साहा अनोपजी तद्भार्या अमृतादे तत्पुत्र साहा श्री मोतीरामजी, मोजीराम जी भार्या महिमादे तत्पुत्र एकलिंगदास सपरिवार युक्ता श्री आदिनाथ बिंब कारापितं पुन्य उपदेशात् विजयगच्छे भट्टा. उदयसूरि सा. पट्टे भ. रतनलाभ सूरिभि तत्पट्टे भ. श्री भावसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं शुभं तथा उदयपुर पौषधशाला कारापिता।'' इससे स्पष्ट है इसके साथ पौषधशाला की भी प्रतिष्ठा संपन्न हुई थी।

इस मंदिर में निम्न उत्थापित चल प्रतिमाएँ हैं :–

1. सिद्व चक्र यंत्र गोलाकार 11'' व्यास का है, यह पंच धातु का बना हुआ है।

इस पर लेख है :– ''सं. 1912 वर्षे मिति आसोज सुद 15 गुरुवासरे मेदपाट देशे उदयपुरे उपकेश वृद्धि शाखाया गोत्रे बोल्या साहजी श्री एकलिग पुत्र शाहजी श्री

भगवानदास जी तत्पुत्र एकलिंगदास जी तत्पुत्र श्री सिद्व चक्र यंत्रं करापितं श्री आनन्दसागर सूरि प्रतिष्ठितं''

2. पंच धातु की विमलनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 5'' ऊँची है, जिस पर लेख है संवत् 1506 विमलनाथ''

3. पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। लेख व लांछन स्पष्ट नहीं है।

4–5 धातु की 2'' ऊँची दो प्रतिमा हैं जिन पर लेख है प्रतिष्ठा पढने में आता है।

निज मंदिर के बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर आलिए में :–

गौ मुख यक्ष की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है और बाईं ओर आलिए में चक्रेश्वरी देवी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में श्री भैरव जी की प्रतिमा 13'' ऊँची है तथा दाहिनी ओर एक आलिए में 13'' ऊँची गजानन जी की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है। इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा की जाती है।

❑❑❑

नवीन तीर्थों का निर्माण के बजाय उजड़े
तीर्थों को पुनः सजीवन प्रदान कर
प्राचीन सभ्यता को जीवनदान देना है।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (बाबेलों की सहरी, मोहली चोहट्टा), उदयपुर

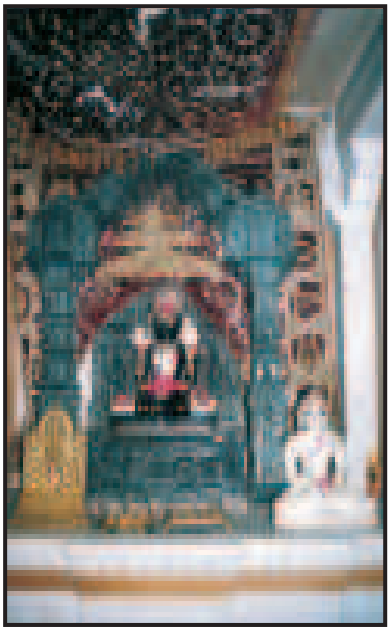

यह मंदिर उदयपुर शहर घंटाघर से जड़ियों की ओल, गुलाब बाग जाते समय मुख्य सड़क से मोहली चोहट्टा नामक मोहल्ले से बाबेलों की सहरी की एक पतली संकड़ी गली में स्थित है।

मंदिर में प्रवेश करते समय दरवाजे के ऊपर काँच से सुपार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर लिखा हुआ है।

यह शिखरबंद प्राचीन मंदिर है। मंदिर निर्माण काल के बारे में सही मूल्यांकन करना कठिन है, लेकिन कथानुसार यह मंदिर उदयपुर नगर बसने के पहले का बताया जाता है, यह भी कहा जाता है कि प्राचीन काल में पूजा करने वाले पुजारी के लिये एक सोने की मोहर भगवान के हाथ पर आ जाती थी। आपसी द्वेषतावश किसी ने परिकर के पास एक कील लगा दी, जिससे मोहर मिलना बंद हो गया।

प्रतिमा को देखने पर स्पष्ट होता है कि प्रतिमा संप्रति महाराजा के समय की है, जिसके आधार पर प्रतिमा करीब 2200 वर्ष पुरानी है। इस प्रकार इसी मंदिर के आदेश्वर भगवान की प्रतिमा भी संप्रति महाराज के समय की है। आदेश्वर भगवान की प्रतिमा व चन्द्र पार्श्वनाथ (जगदीश रोड) की प्रतिमा के पाषाण एवं कारीगरी में भी समानता है। चन्द्र पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर संवत् 1325 उत्कीर्ण है और वह संप्रति महाराजा के समय की बताई जाती है, अर्थात् दोनों ही प्राचीन प्रतिमाएँ है। इस प्रतिमा पर भी सं. 1325 उत्कीर्ण है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक सुपार्श्वनाथ जी की 15'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। परिकर भी अर्वाचीन और श्याम पाषाण का है जिसकी ऊँचाई 31'' है। प्रतिमा का एक तोरण द्वार बना है, जिसको दूसरा परिकर भी कहा जा सकता है। वह प्राचीन कलात्मक है, देवी देवता खुदे हुए है, जिसका आकार 43'' x 31'' है।

जैन तीर्थ सर्वसग्रह के अनुसार प्रतिमा पर उत्कीर्ण समय सं. 1699 बताया गया है जो स्पष्ट नहीं है। पुनः प्रतिष्ठित करायी गयी है, जिसका लेख इस परिकर के नीचे लिखा है – ''श्री सुपार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं आ. प्रेम जितेन्द्र विजयजी वि.सं. 2036 ज्येष्ठ कृष्ण 8 श्री रस्तु''

2. मूलनायक के बाईं ओर (नीचे) उत्थापित विमलनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2046 वैशाख सुद 5 बुधे विमलनाथ जिन बिंब तपा. आ, प्रद्योतनसूरि आ. जितेन्द्र सूरि वाकली निवासी–वागाजी लालाजी पुत्र पौत्र रूपचन्द्र लीलकुमार, राजेश कुमार शुभ''

3. मूल भगवान के दाहिनी ओर श्री कुंथुनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। पबासन पर श्वेत सीमेंट चढ़ा हुआ है कुछ नहीं पढ़ा जा सकता।

मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में :–

4. श्री शांतिनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे जो लेख पढ़ने में आता है, वह यह है।

   तत्पुत्र सा. लखमीचन्द्र शांतिनाथ बिंब जिनेन्द्र ————————

   खरतर पीपालिया गच्छे भ ————————–जिनचन्द्र सूरि (पीछे की ओर कुछ भाग सीमेंट में दब गया है)

5. **प्रवेश करते समय दाहिनी ओर आलिए में** श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन के आधार पर श्रेयांसनाथ भगवान की प्रतिमा सम्भावित है। इसके नीचे पढ़ने योग्य लेख निम्न है –

   ''संवत् 1820 वर्षे शाके 1685 प्रवर्तमाने ————————सुदि15 ————————''

   शेष भाग अस्पष्ट व सीमेंट में दब गया है।

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की चौबीसी जिसकी ऊँचाई 11'' है। इसके पीछे लेख है :– ''स्वस्ति श्री पार्श्वनाथ विक्रमार्क भावनगर निवासी बोरा हिम्मतलाल धर्मपत्नी लीलावती श्राविका मातानोबेन श्राविका तथा भ————————–पितृस्य मुनि मोतीविजयस्य श्रेयार्थ का. प्र. च. तपा. शासन सम्राट आचार्य श्री वि. नेमिसूरीश्वर जी पट्टे वि. विज्ञान सूरीश्वर जी पट्टे वि. कस्तूर सूरि, विजय धर्म धुरन्धर सूरिभि, चन्द्रोदय सूरि चक्र चन्द्र सूरि विजय नीति प्रभ सूरिभि————————महानगरे श्री संघेन कारितं श्री जिन बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव वी.स. 2501 वि.सं. 2031 नेमि सं. 27 वर्षे पोष कृष्ण 10 बुध वासरे ————————''

2. सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का गोलाकार है। कोई लेख नहीं है।

3. अष्ठमंगल यंत्र जिसका आकार 6'' x 4'' का है। इसके पीछे लेख है।

''श्रेष्ठीवर्य पुखराज गणेशलाल जी सोनीगर, जिगन्दी निवासी (राजस्थान) अपने मात् श्री चतुरबाई श्रेयार्थ श्री अष्ट मंगल पाटला कारापिता शुभम्।''

''स्वस्ति श्री वीर सं. 2503 वि.सं. 2033 नेमि सं. 28 वेषाख शुक्ला 10 गुरौ श्री बामन वाड जी महातीर्थ श्री अष्टमंगल तपा, आचार्य श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वरैः शुभमनस्तु श्री संघस्य।''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर सभा मंडप में कारनिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है– (बाएँ से दाहिने)

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। मस्तक पर सर्प का छत्र है।
2. जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।
3. पार्श्वनाथ भगवान की 10'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। मस्तक पर सर्प का छत्र है।
4. श्री अजितनाथ भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की है, जिसकी ऊँचाई 12.6'' है लांछन हाथी जैसा दिखता है, जिसके आधार पर अजितनाथ भगवान की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है संवत् 1808 वर्ष ..... आगे अस्पष्ट है।
5. महावीर स्वामी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन शेर जैसा दिखता है।
6. शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की है, जिसकी ऊँचाई 12.6'' है। लांछन दिखायी देता है।

उक्त 6 प्रतिमा के पबासन के नीचे गाढ़ा सफेद रंग इस प्रकार से लगाया है, जिससे लेख व लांछन दब गये है, देखे नहीं जा सकते।

सभा मंडप में निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर :–

1–3. जिनेश्वर भगवान की तीन प्रतिमाएँ श्याम पाषाण की 11'' ऊँची हैं।

4. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा श्याम पाषाण की 9'' ऊँची है। सर्प का छत्र मस्तक पर है।
5. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 11'' ऊँची है।
6. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा श्याम पाषाण की 9'' ऊँची है।

उक्त छह प्रतिमाओं के नीचे सफेद रंग लगाया गया है, जिससे लांछन व लेख दब गये है।

इस सभा मंडप में उत्तरी दीवार में एक सुन्दर केशरियाजी का चित्र लगा हुआ है।

सभा मंडप से बाहर निकलते समय बाईं ओर एक देवरी नुमा आलिए में (जिस पर काँच की जड़ाई है)।

श्री शान्तादेवी यक्षिणी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की मूर्ति है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री शान्ता देव्या मूर्तिः प्रतिष्ठतं तपा. आ. श्री प्रेम भुवन सूरीश्वर जी मुनि श्री जितेन्द्र विजय जी उदयपुर नगरे वि. संवत 2036 ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी।।''

इसी प्रकार दाहिनी ओर देवरीनुमा आलिए में (जिस पर काँच की जड़ाई है।) श्री मांतग यक्ष की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री मातंगयक्ष मूर्तिस्य प्रतिष्ठाता आ. श्री प्रेम भुवन सूरीश्वर जी मुनि श्री जितेन्द्र विजयजी उदयपुर नगरे वि. संवत 2036 ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी।''

बाहरी सभा मंडप के उत्तर की ओर एक कमरा है, जिसको **मंदिर का स्वरूप** दिया है। उसमें निम्न प्रतिमा स्थापित हैं :–

1. मध्य में मूलनायक श्री आदेश्वर भगवान की प्रतिमा 43'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। यह प्रतिमा प्राचीन है– प्रतिमा के पाषाण में नीली झांई की झलक है। लांछन नहीं है। बनावट के आधार पर संप्रति कालीन है। लेख 1325 का उत्कीर्ण है।

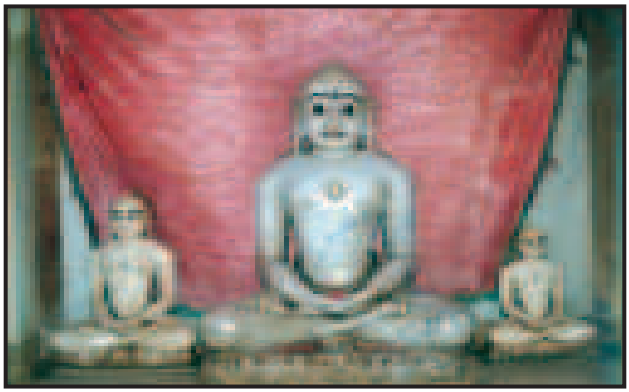

2. मूल नायक के दाहिनी ओर जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 25'' ऊँची है।

3. इसके पास ही इसी वेदी पर ''पश्चिमी दीवार की ओर श्री जिनचन्द्र सूरि की पादुका श्वेत पाषाण की है। जिसका आकार 8'' x 6'' है। इसके किनारे लेख है – ''संवत् 1819 वर्षे माघ सुदि 5 बुधवासरे खरतर पीपलिया गच्छे का. उ. हीर सा. सूरीश्वर।''

4. मूलनायक के बाईं ओर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है'' पार्श्वनथ बिंब।''

5. इसके पास ही पश्चिम मुखी 15'' ऊँची प्रतिमा धूस रंग (भूरी) की है। कोई लेख नहीं हैं। उक्त चारों प्रतिमाएँ अति प्राचीन है– संप्रति महाराजा के समय की प्रतीत होती हैं।

इस मंदिर से बाहर निकलते समय सीढ़ियों के पास एक भूमिगत कमरा (मंदिर) है, जिसमें भी दो प्रतिमाएँ विराजित हैं, जो अपूजनीय हैं।

बाहरी सभा मंडप के नीचे खुला सभा मंडप है जहाँ पर पश्चिमी दीवार पर बाहर जाने का एक दरवाजा है। दरवाजे से बाहर जाते समय दाहिनी ओर एक आलिए में भैरवजी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है। दरवाजे से बाहर जाते समय बाईं ओर एक आलिए में गजानन जी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची मूर्ति है। कोई लेख नहीं है। यह दरवाजा प्रायः बंद रहता है। दक्षिणी दीवार पर जिनेश्वर भगवान की एक खड़ी प्रतिमा है, जिस पर सफेद रंग पोता है।

इसी दक्षिणी दीवार पर निम्न पट्ट बने है :–

1. नमस्कार महामंत्र से सूली बनी सिंहासन।
2. शत्रुंजय महातीर्थ
3. सिद्ध चक्र यंत्र

पश्चिमी दीवार पर –

1. सती मदनरेखा का चित्र
2. चन्दनबाला के चरित्र के पट्ट लगे है।

उत्तरी दीवार पर निम्न पट्ट बने है :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान के 10 भव
2. श्री इलायची कुमार का चित्र।
3. मुनि श्री मुण सुकुमार का चित्र।

गर्भगृह (भूतल के नीचे) व प्रतिमा की प्राचीनता को देखते हुए मंदिर प्राचीन है।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ है, जिसका लेख पश्चिमी दीवार में लगा है, जो निम्न प्रकार है :– ''स्वस्ति श्री राजस्थान अन्तर्गत मेदपाट देशस्य श्री उदयपुर नगरे मध्ये बाबेलों की सहरी मध्य वीर सं. 2506 वि.सं. 2036 वर्षे ज्येष्ठ कृष्णा अष्टम्यां तिथौ शनिवासरे शुभ लग्ने जीर्णोद्धार कृत प्राचीन श्री जिन प्रासादे नूतन परिकर युक्त अति प्राचीन मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथ संप्रति कालीन श्री आदिनाथ प्रमुखै कौन विंशाति 19 जिन बिम्ब प्राचीन श्री अधिष्ठाता श्री मातंग यक्ष श्री शान्ता देवी प्रमुखा————————श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक श्री संघ उदयपुर कारीपितं प्रतिष्ठाता प. पूज्य सिद्धान्त महोदधिवर्य साहित्य निष्णांत प्रौढ़ प्रतापी आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय प्रेम सूरीश्वर पट्टालंकार प्रवचन प्रभावक प्रवचनकार न्याय विशारद आचार्य श्रीमद् विजय भुवनभानु सूरिणा सिद्धान्त शिष्य रत्न श्री प. पूज्य समर्थ प्रवचन कार त्याग तपोमूर्ति मुनिप्रवर जितेन्द्र विजय एवं पाटे मुनि श्री वीररत्न विजय————————।''

❑❑❑

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (दादा देवरी), **मोहली चोहट्टा, उदयपुर**

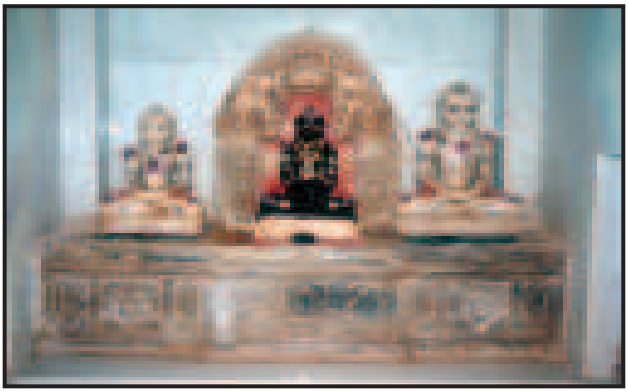

यह मंदिर उदयपुर शहर के घंटाघर से जडियों की ओल होते हुए गुलाब बाग की ओर जाने वाली सड़क के मुख्य किनारे पर बाईं ओर स्थित है।

इस मंदिर के निर्माण काल के बारे में कोई लेख नहीं है, लेकिन प्रतिमा पर उत्कीर्ण समय के आधार पर यह मंदिर करीब 360 वर्ष से ज्यादा पुराना है।

यह एक पुराना शिखरबंद मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि यह श्री नवलसिंह जी कोठारी परिवार के बुजुर्गों द्वारा बनवाया गया।

यह कोठारी परिवार मारवाड़ के मुन्दियाड़ ग्राम से आकर उदयपुर में बसा है। बताया जाता है कि यह परिवार बहुत धनी था। महाराणा भीमसिंह जी के समय मेवाड़ राज्य की आर्थिक स्थिति खराब होने से इनके बुजुर्गों ने सहायता दी, इसलिये इस परिवार को सेठ की पदवी भी दी गयी बताते है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव (आदिनाथ) भगवान की प्रतिमा 13'' ऊँची उच्च कोटी के श्याम पाषाण की है। परिकर श्वेत पाषाण का बना है और परिकर के दोनों ओर जिनेश्वर भगवान की खड़ी प्रतिमा हैं। प्रतिमा के मस्तक के ऊपर श्वेत पाषाण का छत्र बना हुआ है। कोई लेख नहीं है।
2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री शीतलनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण है। इस पर लांछन फूल (श्री वत्स) है और लेख का कुछ अंश ही पढ़ा जा सकता है :–

   ''संवत् 1689 वर्षे आशोढ़ वदि 6 शनीः उदयपुर वास्तव्य (ओमाकेन) शीतला तपागच्छे श्री विजय देवसूरि''
3. मूलनायक के बाईं ओर अभिनन्दन स्वामी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण है। लेख का निम्न अंश पढा जा सकता है।

''संवत् 1699 वर्षे वि.शु. 9 उदयपुर वास्तव्य लघु शाखाया गांग गोत्रे श्री अभिनन्दन बिंब करितम् श्री तपा. श्री विजय देव सूरि– जयसिंह सूरिभि''

तीनों प्रतिमाएँ एक ही वेदी पर स्थापित हैं।

4. निज मंदिर के बाईं ओर बने आलिए में श्री सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। इस के पृष्ठ भाग में लेख है .....''संवत् 1493 वर्षे वै.शु. 3 प्रागवाट सा मा.....सू. .....सपदा.....श्री सुमतिनाथ बिंब कारितम् प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुन्दर सूरिभि।''

5. इसी प्रकार निज मंदिर के दाहिनी ओर के आलिए में जिनेश्वर भगवान की 19'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख व लांछन नहीं है। यह प्रतिमा काफी प्राचीन है तथा मूर्तिकला के आधार पर यह महाराजा संप्रति के समय की प्रतीत होती है। जो करीब 2200 वर्ष पुरानी है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. सिद्ध चक्र यंत्र धातु का गोलाकार 5'' व्यास है।
2. ऋषभदेव भगवान की चरण पादुका करीब 2'' श्याम पाषाण की है।

सभा मंडप वर्गाकार बना हुआ है, जो गुम्बज के नीचे है। गुम्बज के अंदर चित्रकारी की हुई है, लेकिन धूमिल हो रही है। सभा मंडप में चारों ओर 3' ऊँची कार्निस बनी है लेकिन कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है।

मंदिर के चारों ओर परिक्रमा तथा बाहर बरामदा बना हुआ है। यह एक निज मंदिर है जिसकी देख–रेख श्री नवलसिंह जी कोठारी करते हैं। वर्तमान में जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है।

❑❑❑

श्री केसरियाजी का मंदिर, बदनोर की हवेली, उदयपुर

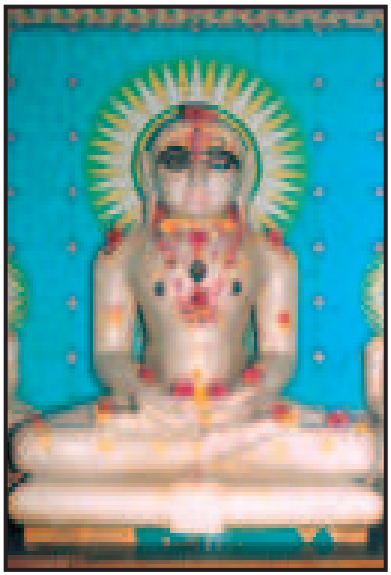

यह मंदिर उदयपुर शहर के घंटाघर से दक्षिण की ओर जड़ियों की ओल (सुभाष मार्ग) से बदनोर की हवेली तक व आगे जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे पर स्थित है।

यह मंदिर गुंबज बंद बना हुआ है और इसमें 42 देवरिया है। यह मंदिर कुशला जी खिंदावत द्वारा बनाया गया है। कुशला जी खिंदावत कहां के रहने वाले थे, जानकारी नहीं है, जैन श्वेताम्बर में यह गौत्र वर्तमान में उदयपुर में नहीं है। इस मंदिर की प्रतिमाओं का विवरण निम्न प्रकार से है :–

निज मंदिर में स्थापित प्रतिमाएँ :–

1. श्री केशरियानाथ भगवान् (मूलनायक) की भव्य विशाल चमत्कारी 51'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा हैं। इसके नीचे यह लेख है :–

''स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जय मंगलोदयः श्रीः अथश्रीः संवत्सरे स्मित् श्रीमन्नृपति विक्रमार्क समयातीत संवत् 1699 वर्षे शालिवाहन राज्यात् शाके 1564 प्रवर्तमाने उत्तर गोले माघ मासे शुक्ल पक्षे दसम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री रामगढ दुर्गे महाराजाधिराज महाराव श्री हट्टीसिंह जी विजय राजये उपकेश वंशे वृद्धि शाखायां गांग गोत्रे माल्हण तद् भार्या कस्तूर दे पुत्र संघ वि. श्री कान्हजितस्य वृद्धि भार्या दीपा
लघु भार्या सूषम दे पुत्र चिरंजीवी पुण्यपाल सहितेन श्री प्रासाद बिंब रिषभदेव बिंब करापितं प्रतिष्ठितं भट्टारिक श्री महिमासागर सूरि तत्पट्टे श्री कल्याण सागर सूरिभिः प्रतिष्ठित धर्माचार्य विजय मति श्रीः उदयसागर सूरिभिः। शुः सिः।।''

2. मूल नायक के दाहिनी ओर श्री चन्द्र प्रभु जी की श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची सुन्दर प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. मूल नायक जी के बाईं ओर श्री महावीर भगवान् की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि मंगल जयो दयः। अथ सुं संवत्सरे स्मिन् श्री नृप विक्रमार्क समयातीत सं. 1715 शाके 1580 प्रवर्तमाने मासोत्तमे मासे तस्मिन् मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दसम्यां 10 बुधवासरे श्री उदयपुर नगरे चित्तौडाधिपति राजाधिराज

महाराणा श्री राजसिंह जी विजय राज्ये पवित्र ऊसवाल... प्रगोत्रे दोसी श्री भीषु जी भार्या संतोष दे तत्पुत्र दोसी श्री कुशलसिंह भार्या कस्तूर दे तस्य पुत्री बाई मणिक श्री महावीर बिम्ब रचित श्री पीपलीआ गच्छे जिण धर्मसूरि तत्पट्टे जिन चंदसूरि तत्पट्टे जिण हर्षसूरि बिंब प्रतिष्ठतिम्''

4. प्रवेश करते हुए बाईं ओर – श्री मल्लिनाथ जी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

5. प्रवेश करते हुये दाहिनी ओर श्री चन्द्र प्रभु जी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1815 वैशाख सुदि 10 बुधे श्री ऊसवंशे गांग गोत्रे प्रभुदास भार्या श्री चन्द्र प्रभु बिंब कारितं श्री।।''

निज मंदिर में प्रतिष्ठित, उत्थापित प्रस्तर की व धातु की प्रतिमाएँ :–

1. श्वेत पाषाण की श्री शांतिनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1699 वर्षे माह सुदि 10 गुरुवारे ऊस वंशे....'' आगे का लेख नष्ट हो गया है।

2-3-4. पीतल की पार्श्वनाथ भगवान की 3 प्रतिमाएँ हैं। इन पर कोई लेख नहीं है तथा ऊँचाई क्रमशः 2'', 2'' तथा 3'' है।

4 (क). 3'' ऊँची प्रतिमा जिनेश्वर भगवान की है।

5. श्री शांतिनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है।

''संवत् 1819 रा मागसर सुद 10 ओसवाल गोत्रे सा. लीखमीदास जी भार्या अतरूप दे पुत्र नाथ जी अतरूप दे (पत्तपरणी) प्रतीष्ठते।।''

6–7. श्री कुंथुनाथ जी की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1498 वर्षे सुदि 2 दिने ऊसवाल जातीय सा. झांझण पुत्र सा. भुआ सुश्रावक भार्या रतनू तत्सुतेन सा. सोमाकेन पुत्र देवदत्त जगमाला दिसहितेन श्री कुंथुनाथ बिम्ब का प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः।''

9. श्री पार्श्वनाथ जी की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

10. श्री जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा पर भी लेख नहीं है।

11. श्री श्रेयांश नाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर निम्नलिखित लेख है :–

''संवत् 1418 वर्षे फागुण सुदि 11 शनौ श्री श्रीमाल जातीय (धर सोला) भा. पुत्र (नराला) पुत्र नामत्वादे भा. निमित्तं श्री श्रेयांश बिंब का प्रतिष्ठितं श्री (भवडारक) पूज्य श्री श्री हीर सूरिः''

12. श्री मुनिसुव्रत जी– की 5'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1819 रा मिगसर सुदि 10 ओसवाल ...गांग गोत्रे सा. लीखमीदासजी भार्या अतरूप दे पुत्र नाथ जी अतरू पदे (पत्तपरणी) प्रतीष्ठते।''

13. श्री कुंथुनाथ जी की पंचतीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :

''संवत् 1529 वर्षे वि. वं. 4 शुक्रे प्रा. जातीय पं चापसी भा. पोमादे सु. सांगाकेन देई सुत करणा सहजादि कुटुम्ब युतेन स्व. मातृ पितृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपस्वी श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः।।'' कांगली ग्राम वास्तव्य

14. श्री कुंथुनाथ जी की ही पंच तीर्थी 12'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1511 वर्षे आषाढ़ 10 उपकेष ज्ञातीय आदित्यनाग गोत्रे लघु शाखायां सा. (झाणा)? भा. भावश्री पु. सुवर्ण्यपात्न भा. सामश्री पुत्र सा. लखाकेन भा. अधकू पुत्र (सदरध) सूरचंद हरिचंद युतेन स्वश्रेय से श्री कुंथुनाथ बिम्ब कारितं उपकेश कुक्कचार्य सत् प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः ।।श्रीः।।''

15. तांबे का 8'' व्यास का गोल यंत्र है। इस पर कोई लेख नहीं है।

16. तांबे का 9'' वर्ग का यंत्र है। इसके ऊपर यह लेख है।

''भट्टारक श्री शान्ति सागर सूरिभिः''

17. श्री सिद्धचक यंत्र 6'' ऊँचा है उस पर कोई लेख नहीं है।

18. अष्टमंगल यंत्र 6'' x 3'' आयताकार है।

देवरियाँ

सभा मंडप तथा परिक्रमा भाग में चारों ओर देवरियाँ तथा कुछ आलिए हैं। उनमें तीर्थंकरों तथा बीस विहरमानों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित है। देवरियों के चारों ओर परिकर बना है। प्रत्येक ऊपरी भाग में जिनेश्वर भगवान् की 3 प्रतिमाएँ तथा दोनों तरफ हाथी सिंह आदि पत्थर में खुदे हुए हैं। इनका आकार सामान्यतया उसी प्रकार का है, जैसे 'चौबीस तीर्थी' या 'पंच तीर्थी' प्रतिमाओं का होता है।

देवरियों के ऊपर प्रतिमा जी का नाम रंगीन काँच के द्वारा लिखा गया है।

सभा मंडप तथा परिक्रमा में स्थित प्रतिमाएँ :–

प्रवेश द्वार के बाएँ से :–

1. श्री मणिभद्र जी की 19'' ऊँची साधारण पत्थर की प्रतिमा एक आलिए में बिराजमान है।

2. श्री ऋषभदेव भगवान् की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। यह एक देवरी में

विराजमान है। इस पर यह लेख है :–

''श्री राजसिंह जी विजय राज्ये।।''

''संवत् 1817 वर्षे नृप विक्रम कृते शाके 1682 प्रवर्तमाने माह मासे कृष्ण पक्षे 5 रविवासरे हस्त नक्षत्रे बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भट्टारक श्री जिन वर्द्धमान सूरिभिः तत्पट्टे श्री जिनधर्म सूरिभिः तत्पट्टे श्री जिनचंद सूरिभिः शिष्य महो उपाध्याय....''

आगे लेख चुनाई में दब गया है।

3. श्री महावीर स्वामी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा एक आलिए में प्रतिष्ठित है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1780 वर्षे वैशाष सुदि 8 बुधवासरे सर्वे कल्याण कारिक श्रीयुत....शरण श्री प्रभ संघ....गच्छे बुलानगरे..... श्री कुन्द कुन्दाचार्य....'' शेष लेख पूर्णतः अस्पष्ट है।

4. श्री अजितनाथ जी की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे 5 रविवासरे उदयपुर वास्तव्य संकर जीतस्य भार्या करमेती श्री अजितनाथ बिम्बं कारितं श्री बृहतखरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन धर्म सूरिभिः तत्पट्टे श्री जिनचंद सूरि शिष्य पू. श्री हीरसागर।'' इसके आगे की देवरी में आदिनाथ भगवान का चित्र लगा हुआ है।

5. बीस विहरमान श्री अनन्त वीर्य की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढ़ वास्तव्य उषवाल वृद्धि शाखायां श्री समस्त श्री संघसमुदायिन बीस विहरमान अष्टम जिन अनंतवीर्य बिंब कारित श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन वर्द्धमान सूरिभि तत्पट्टे श्री जिन धर्मसूरि तत्पट्टे भ. सवगरगेन रंजिता श्री जिनचंद सूरि शिष्य महोपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितम्''

इसके आगे नाकोड़ा भैरव जी व भोमिया जी महाराज के अलग–अलग चित्र लगे हुए है। दीपक की ज्योत होती है।

6. बीस विहर मान श्री विशाल प्रभु स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढे वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायिन बीस विहरमान दशम जिन श्री विशालप्रभ बिम्बं कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भ. जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे भ. श्री जिनधर्म सूरि तत्पट्टे संवेग रगेना रंजिता तपश्री जिनचन्द सूरिभि शिष्य महो उपाध्याय....''

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1421 वैशाख वदि 4 प.ना. श्री जमनुर सिंह''

8. श्री भुजंग स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां बाफणा गोत्रे साह श्री मनोहर दास जी तस्य भार्या मनरूप दे तत्पुत्र साह श्री दौलतराम, तस्य भार्या दाड़िम दे (श्रेयसे)? बीस विहरमान चौदस भुजंग स्वामी कारापितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे अगरक श्री जिन धर्म सूरिभिः।।''

9. सूर प्रभु स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढ वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायिन बीस विहरमान नवम जिन सूर प्रभ जिन बिंब कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भ. श्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्मसूरि तत्पट्टे संवेग रंगेना रंजिता श्री जिनचंद सूरि शिष्य महो उपाध्याय श्री हीर सागर प्रतिष्ठितम्''

10. श्री बाहुस्वामी जी की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर लेख इस प्रकार है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महानगर वास्तव्य समस्त श्री संर्धसमुदायेन बीस विहार मान तृतीय जिन बाहु स्वामी बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भ. श्री जिन चंद सूरि शिष्य महो उपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितम्।।''

11. श्री सीमन्धर स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाष सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां साह ऊसकरण जी तस्य भार्या उसमादे द्वितीय नाम वर्द्धमान बाई स्व. हित उपगार बीस विहर सीमंधर स्वामी बिंब कारितं श्री वृहत्खरतर गच्छे तपश्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्म्म सूरि तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र सूरि शिष्य श्री महोउपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितं। महाराणा श्री राजसिंह राज्ये।।''
श्रेयोस्तु।।

12. श्री वीरसेन स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर वास्तव्य उपकेश जातीय वृद्धि शाषायां श्री संघ समुदायेन बीस विहरमान तन्मध्ये सत्तरम जिन श्री वीरसेन प्रभु बिंब कारापितं बृहत्खरतर गच्छे (पय षष्णे) तपश्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिनधर्म सूरि तत्पट्टे संवेग रंगेन रजिता तपश्री जिनचंद सूरिभि (तदावेतासी) प्रथम शिष्य... श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितं। महाराणा श्री अरिसिंह...''

13. श्री पार्श्वनाथ जी की 31''ऊँची श्वेत पाषाण की भव्य प्रतिमा है। उस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर महागढे ऊसवाल वृद्धि शाखायां मेहता जी श्री योगीदास जी तस्य भार्या जगरूप दे तत्पुत्र मेता जी चांपा जी तदभार्या उषदे तत्पुत्र मेता जी जीवण दास तद्भार्या समादे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन धर्म सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरि शिष्य श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितम्।।श्री।।''

14. श्री चन्द्र बाहु स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख इस प्रकार है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढे वास्तव्य, ऊसवाल जातीय वृद्धि शाखायां बोलिया गोत्रे साह श्री अनोपजी तस्य भार्या अंगूर दे तस्य पुत्र साह मोतीचन्द केन वीस विहरमान तेरम जिन चंद्र बाहु कारितं श्री बृहत्तखरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन चन्द सूरि शिष्य महोपाध्याय.''

15. श्री बज्रधर जी की प्रतिमा भी श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर महागढे वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायेन एकादश विहरमान वज्र धर बिंब कारित' बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे जिन धर्म्म सूरि तत्पट्टे संवेग रंगेन रजिता श्री जिनचंद्र सूरिभिः शिष्य महोपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितं सेवश्री नारचन्द तत्पुत्र प्रसाद चंद भोजाई चंदनबाई कारापितं।।श्री।।''

16. श्री सुजात स्वामी जी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर महानगर वास्तव्य ऊसवाल जातीय वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायेन बीस वीहरमान पंचम जिन सुजात बिंब कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे श्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्म्म सूरि तत्पट्टे संवेग रंगेन रंजिता श्री जिन चंद सूरि''

17. श्री देवजस स्वामी की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा आलिए में विराजमान है। लेख इस प्रकार है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर वास्तव्य उपकेश वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायेन बीस विहरमान देवजस बिम्ब कारितं खरतर गच्छे संवेन रंगेग रंजिता श्री जिनचंद्र सूरि शिष्य म.उ. हीरसागर जी प्रति–''

18. संभवनाथ जी की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे माह मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे उदयपुर नगर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां दोसी लखु जी तस्य पुत्र दोसी श्री भीखु जी तस्य भार्या सन्तोष दे तस्य पुत्र दोसी कुशलसिंह तस्य पुत्र .... बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे...''

19. श्री ऋषभानन जी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''महाराणा श्री अरिसिंह विजै राज्ये।।''

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महानगर ऊसवाल वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायेन बीस विहरमान सप्तम जिन श्री ऋषभानन जिन बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भ. श्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्म सूरि तत्पट्टे संवेग रंगेन रंजिता श्री जिनचन्द्र सूरि शिष्य महो...''

20. युगमंधर स्वामी की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख इस प्रकार है :–

''महाराणा श्री राजसिंह विजय राज्ये''

संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर महानगर समस्त श्री संघ समुदायेन बीस वीहरमान द्वितीय श्री युगमधर बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे जिनचंद्र सूरिभिः शिष्य महो उपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितम्।।

21. श्री ईश्वर स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढे वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां (सनसर साह धाऊ जी) तस्य पुत्र साह मल्ल तस्य पुत्र गणेश जी वीस विहरमान पनरम (15) जिन ईश्वर जिन बिंब कारितं बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे जिन धर्म सूरि तत्पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिभि शिष्य महो उपाध्याय श्री हीर...''

22. श्री नेमिप्रभु (बीस विहरमान) जी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महागढ वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां जावर वास्तव्य बेदावत लाल जी तस्य पुत्र बेदावत जीवणदास तस्य पुत्र साजी रोमजी बीस वीहरमान सोलम जिन नेम प्रभु कारापिता बृहत्खरतर गच्छे पीपलीया गच्छे तपश्री जिन धर्म्म सूरि तत्पट्टे जिन चन्द सूरिभिः:''

23. श्री सुबाहु स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महानगरे श्री संघ समुदायेन बीस विहरमान चतुर्थ जिन सुबाहु बिंब कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे तपश्री जिन वर्द्धमान सूरि तत्पट्टे श्री जिन धर्म सूरि तत्पट्टे संवेग रंगेन रंजिता श्री जिनचंद सूरिभि शिष्य महोपाध्याय श्री हीर सागर जी प्रतिष्ठितम्।।''

24. श्री चन्द्रानन स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–
''संवत् 1817 वैशाख सुदि 10 बुधवासरे श्री उदयपुर महानगर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां श्री संघ समुदायेन बीस विहारमान बारमा श्री चंदानन प्रभ बिंब कारितं श्री बृहत्खरतर पीपलीया गच्छे भ. श्री जिन वर्द्धमानसागर तपश्री जिनचंद्र सूरिभि शिष्य महोपाध्याय...''

25. श्री शीतलनाथ भगवान (तीर्थंकरजी) की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके निम्न भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे रविवासरे श्री उदयपुर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि

शाखायां दोसी श्री भीखु जी तस्य भार्या सन्तोष दे तस्य पुत्र सामल दास जी तस्य भार्या सोनाग दे तस्य पुत्र ... सिंह जी तस्य भार्या अजम्बादे तस्य पुत्र तस्य भार्या चतुरंग दे तस्य पुत्र.....''

26. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। ऊपर सर्प के फणों का छत्र है। इस का लेख नष्ट हो गया है। केवल इतना भाग शेष है :–

''संवत् 1684 वर्षे पो. 14 शनौ

27. श्री महाप्रभ स्वामी की 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1817 वर्षे वैशाख सुदि 10 बुधवासरे उदयपुर गढ वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां समस्त श्री संघ समुदायेन बीस विहरमान अठारम जिन महाप्रभ स्वामी कारितं श्री बृहत्खर....''

28. प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर माता चक्रेश्वरी की 15'' ऊँची श्याम पाषाण प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

सभा मंडप

निज मंदिर के द्वार के बाहर सभा मंडप में आमने–सामने मुख किए हुए श्वेत पाषाण के दो हाथी है। इन पर आदिनाथ भगवान् की माताश्री मारूदेवी तथा पिताश्री नाभिराजा हाथ जोड़े हुए विराजमान् है। मूलनायक जी के पीछे दीवार पर केशरिया जी का चित्र लगा हुआ है। इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर महासभा करती है।

विशेष टिप्पणी :

कुछ स्थानों पर महाराणा अरिसिंह जी और कुछ स्थानों पर महाराणा राजसिंह जी का नाम उत्कीर्ण है। संवत्, तिथि व वार एक ही है, जो सम्भव नहीं है। महाराणा राजसिंह जी का संवत् 1817 चैत्र कृष्णा 13 को देहान्त हुआ।

❑❑❑

प्रार्थना-पूजा ईश्वर के द्वार की कुंजी है।

श्री शीतलनाथ जी का मंदिर (हुमड़ों का मंदिर)
जड़ियों की ओल, उदयपुर

यह मंदिर घंटाघर से जड़ियों की ओल जाने वाली मुख्य सड़क के बाईं ओर स्थित है। यह मंदिर सं. 1781 में गांधी परिवार द्वारा महाराणा संग्राम सिंह जी (द्वितीय) के समय में निर्मित हुआ व वैशाख शुक्ल 7 गुरुवार को शीतलनाथ व सम्भवनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा हुई। इसका शिलालेख निम्न प्रकार से (अस्पष्ट) है।

संवत् 1781 शाके 1657

संग्रामसिंह (द्वितीय) के शासन काल में पंचों की आज्ञा से धनराज गांधी, कला गांधी, श्री सामजी भार्या डची बाई संघवी, धनजी भार्या पाटमदेव शुतकुमार जी पुत्री मेल कुँवर, कु. अरघन जी भ्राता कानजी भार्या कपूरदे सूत किसन जी, मंगली पुत्री उसी, धनजी कानजी, मगनीबाई, धनीबाई, अनोपा गांधी, सामजी भ्राता गांधी मनजी भार्या बाई जामोती (अस्पष्ट) सुत गांधी देवद भार्या गुलाबदे पुत्री फतु सपरिवार सकुटुम्ब श्री शीतलनाथ चैताले श्री सम्भवनाथ बिंब स्थापित देवी श्री शारदा समरगामित वृद्ध तपागछे श्री धनरल सूरि पूज्य भट्टारक अमररत्न सूरि पूज्य भट्टारक श्री तेजरत्न सूरि आदि (अस्पष्ट) .....

की निश्रा में शीतलनाथ सम्भवनाथ बिंब करापितं

कारीगर गजधर देवी सुत, रूपा,

इसी प्रकार नोहरा व उपाश्रय जो मंदिर के उत्तर की ओर है, उसकी जमीन श्री चतुर्भुज जी नाहर की पत्नी से 100/– एक सौ रुपया में हुमडों के पंचों ने सं. 1880 में मगसर सुदी 3 को (49 X 36 वर्ग गज जमीन) खरीदी। मंदिर के केसर गृह के पास में एक दरवाजा है। जो नोहरे में जाता है। इसके बाईं ओर एक वेदी पर श्वेत पाषाण की चरण पादुका स्थापित है। लेख घिसा हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री शीतलनाथ जी (मूलनायक) की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर

यह लेख है :–

''मा.पा. शीतलनाथ''

प्रतिमा के पीछे सर्व धातु का चौबीस तीर्थंकर का परिकर 27'' ऊँचा है तथा चाँदी का छोटा छत्र है जो भगवान के मस्तक पर लगा हुआ है। प्रतिमा सर्वधातु के सिंहासन (जिसका आकार 5'' ऊँचा व 19'' चौड़ा है) पर सुशोभित है।

2. वासुपूज्य भगवान (मूलनायक के दाहिनी ओर) की 13'' ऊँची सर्वधातु की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''हुमड़ जाति वृद्ध शारवायां मधसरे गोत्रे दोषी श्री कानजी भार्या केसर श्री वासुपूज्य बिंब करापितं श्री वृद्ध तपागव्च्छे श्री पूज्य भट्टारक जय रत्न सूरि प्रतिष्ठितं सम्बत् 781 (?) वर्ष वेशाख 7 गुरे''

3. महावीर स्वामी (मूलनायक के बाई तरफ) की प्रतिमा सर्वधातु की 13'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''विशाख सूदि 11 व चापा सुत देवी महावीर कारितम् श्री रत्नसिंह सूरिभि''

4. मूलनायक के दाहिनी ओर (वेदी पर) सिद्धचक्र यंत्र श्वेत पाषाण का 13'' व्यास का गोलाकार है। चारों ओर अस्पष्ट लेख है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :–

1. सिद्ध चक्र यंत्र 11'' व्यास का गोलाकार है। चारों ओर यह लेख है। संवत् 1814 वर्षे आसोज व. 10 दिनेल ..... महाराजाधिराज महाराणा राजसिंह जी विजयराजे वृ.शा. बुधे गोत्रे..... केवल जी सुत वालजी सिंद्धचक्र यंत्रं करापितं .....विजय रत्न .....

2. सिद्ध चक्र यंत्र 8'' व्यास का गोलाकार है। कोई लेख नहीं है।

3. सिद्ध चक्र यंत्र 12'' व्यास का गोलाकार तांबे का है, जिस पर चारों ओर यह लेख है :–

''सवत् 1888 शाके 1748 चैत्र मासे शुक्ल पक्षे बुधवासरें .....नव रत्न सूरि''

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''सं. 1320 माघ सुदि. ..... यह प्रतिमा नाग के सिंहासन पर उत्थापित है। नाग की ऊँचाई 15'' है। इसके पीछे लेख है सं. 1914 वर्षे मगसिर व. 13 सोमे श्री उदयपुर शीतलनाथ चेत्यालये श्री पार्श्वनाथ बिंब नाग युतेन श्री संघ..... विमल वसही गांन्धी रतनपाल .....''

5. पार्श्वनाथ भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''सं. 2038 माघ शुक्ला 14 रवि सलुम्बर नगरे दोषी गोर्धनलाल''

6. जिनेश्वर भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''सं. 1454 (?) .....''

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–
''संवत् 1569 वैशाख वदि 11 .....आदिनाथ जिनालय .....''

8. श्री जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :–
''सं. 1523 वर्षे फाल्गुन शुद 3 ....''

9. श्री आदिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 5'' ऊँची है। इस पर लेख है :–
''श्री गुरुपदेशाद शिष्य.....''

10. श्री पद्मनाथजी की 7'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''सं. 1472 फा.वं. 7''

11. श्री महावीर स्वामी की 7'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''सं. 1369''

12. श्री शांतिनाथ जी की 8'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''सं. 1644 वे.शु.''

13. श्री आदिनाथ भगवान की चौबीस तीर्थी 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–
''सं. 1615 वर्षे माह वदि 6 ..... श्री आदिनाथ बिंब करापित प्रतिष्ठित श्री विजय वर्धन सूरि''

14. श्री पार्श्वनाथ की पंच तीर्थी 7'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1531 वर्षे फागुण सुदि 6 ..... श्री पार्श्वनाथ बिंब ..... महेन्द्र सूरि''

15. श्री आदिनाथ जी की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1506 वर्षे फागुन वदि 6 बुध श्री आदिनाथ बिंब करापित प्रतिष्ठितं''

16. श्री शांतिनाथ भगवान की चौबीस तीर्थी 11'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''सं. 1511 वर्षे माघ विद 5 डांगी गौत्रे श्री शान्ति जिन पट्ट करापितं प्रतिष्ठितं श्री विजय''

17. श्री आदिनाथ जी की पंच तीर्थी प्रतिमा 5'' ऊँची है। लेख है :–
''सं. 1490 चै. सुदि ....''

18. श्री महावीर स्वामी की 6'' ऊँची प्रतिमा है।

19. श्री मुनिसुव्रत स्वामी की पंचतीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1529 वर्षे वि.वं. 4 .....श्री मुनिसुव्रत बिंब ..... लक्ष्मीसागर सूरि।''

20. श्री कुंथुनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''सं. 1529 वर्षे वि.वि. 4 शुक्रे श्री कुंथु नाथ बिंब .....श्री लक्ष्मीसागर सूरि''

21. श्री मुनिसुव्रत स्वामी की 6'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1693 वर्षे .....''

22. श्री पार्श्वनाथ जी की 5'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1593 वर्षे वैशाख मासे कृ. प. 3 मूल संघेन''

23. चाँदी की चरण पादुका 7'' वर्गाकार है। यह चरण पादुका श्री हीर सूरीश्वर जी की है। लेख है :– (संक्षेप में) श्री 1008 श्री जगद्गुरु श्री विजय हीर सूरीश्वर जी महाराज का जन्म सं. 1583 पालनपुर, दीक्षा सं. 1596 (पाटण) प्र.सं. 1607 (नारदपुरी) उपाध्याय सं. 1608 (नारदपुरी मारवाड़) आचार्य पद सं. 1620 (सिरोही) मुगल सम्राट अकबर प्रति बोधित सं. 1640 जगद्गुरु पद सं. 1640 (फतहपुर सीकरी) स्वर्गवास सं. 1652 (पालनपुर)।

24. सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का गोलाकार है। इस पर लेख है :– ''चम्पा बेन माणकलाल तरफ श्री जैन शासन सम्राट आ. विजय नेमि सूरीश्वर श्री शत्रुन्जय महातीर्थ वि.सं. 2025 चैत्र शुक्ले 11 रवि''

25. तांबे का त्रिकोण यंत्र जिसका आकार 7'' x 5'' है। बीच में मंत्र लिखे है।

26. सिद्ध चक्र यंत्र चांदी के पतरे का 6'' व्यास का गोलाकार है। कोई लेख नहीं है।

27. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमां 5'' ऊँची है। जिस पर लेख है :– ''संवत् 1529 वर्षे पो.व. 4 .....श्री सिहदत्त सूरि''

28. श्री शांतिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1468 वर्षे वे. शु. 3 गुरौ श्री प्रागवाट .....''

29. श्री कुंथुनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1504 वर्षे फाल्गुन सुदि 12 श्री कुंथुनाथ विबं..... श्री धर्मसूरि .....श्री विजय चन्द्र सूरि .....''

30. श्री जिनेश्वर भगवान की चौबीस तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1344 (?) .....''

31. श्री आदिनाथ जी की 6'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1397 वर्षे जेठ (?) .....श्री आदिनाथ बिंब..... श्री गुणचन्द्र सूरीश्वर''

32. जिनेश्वर भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1437 (?) माघ सुदि ..... पीछे जालन होने से स्पष्ट नहीं।''

33. जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची तीन खड़ी प्रतिमाएँ है। लेख है :– ''संवत् 1497 फाल्गुन वदि .....''

34. श्री धर्मनाथ जी की 7'' ऊँची प्रतिमा है। लेख है :– ''संवत् 1510 वर्षे माघ शु. 10 श्री धर्मनाथ बिंब श्री सोमसुन्दर संताणे ....''

35. श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा है। पीछे जालन लगी है इसलिए पढ़ा नहीं जा सकता।

36. अष्टमंगल पाटला का आकार 7'' x 4'' है। लेख है :–

''स्वस्ति श्री अष्ट मंगल पाटला .....नि. सलूम्बर नगरे दोषी हुमड़ जाति मातेश्वर गोत्रीय चम्पालाल सुत गोर्धनलाल ध.प. कुँवर बेन .....स्व. परिवार श्रेयर्से. तपागच्छे श्री नेमि–अमृतसूरि पट्टे श्री देव सूरि – हेमचन्द्र सूरि .....सलूम्बर नगरे संवत् 2038 माघ शुक्ल 14''

37. श्री शांतिनाथ जी की पंच तीर्थी प्रतिमा 5'' ऊँची है। लेख है :– ''संवत् 1969..... श्री शांतिनाथ बिंब प्रतिष्ठतं श्रीसिंहदत्तसूरि''

38. श्री जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची खडी प्रतिमा है। लेख है :– ''सवत् 1323 (?) वर्षे .....''

39. जिनेश्वर भगवान की 4'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

40. चरणपादुका 3'' व्यास की श्याम पाषाण की गोलाकार है। चरण पादुका किसकी है, ज्ञात नहीं होता।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं तरफ के आलिए में –

1. श्री वासुपूज्य भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है। संवत् 17 ––––– (?) श्री ––––––– संघे श्री सकलीय भट्टारक श्री देवेन्द्र कीर्ति स्तुता ग्रे.त. श्री क्षेमकीर्ति गुरुपदेशात्

कारनिस पर (निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर)

1. श्री शीतलनाथ जी की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है।

   सम्बत् 1690 व.पौ.सु. 15 शनि उदयपुर वा. उकेश जातिय वृद्धि शाखांया ––––– ल गोत्रीया सा. देवा नाम्नः भार्या नाकु पुत्रेन –––––श्री शीतलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारक प्रदय विजयदेव सूरि। इसके ऊपर श्री केशरिया जी का चित्र लगा है।

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1775 (?) वदी 7 सप्तम्यां ––––––––सामलदास ––––––––अस्पष्ट''

3. श्री जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख इतना घिस गया है जिसको पढ़ा नहीं जा सकता। लांछन सम्भवतया पक्षी का है लेकिन सीमेंट में दब जाने से स्पष्ट नहीं है।

4. सरस्वती देवी की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है :–

   ''सवत् 1781 वर्षे वैशाख शुक्ले पक्षे 7 तिथौ गुरुवासरे हुंबड़ जातिय बृद्धि शाखाया मन्त्री सूरि श्री सामजी भार्या बाई जीवा सुत गान्धी धनजी भार्या पाटमदे सुत कुवर जी भ्राता कानू जी भार्या सं. –––––––– मंगला जी सहपरिवारेण संयुक्तेन श्री सरस्वती प्रतिमा कारापिता श्री रस्तु।'' इसके ऊपर नाकोडा भैरव का चित्र काँच में लगा है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर के आलिए में –

1. श्री अजितनाथ भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की अति प्राचीन प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   सं. 1544 वर्षे –––विजय देवेन्द्र सूरि ––––––लेख अस्पष्ट है। लांछन हाथी का स्पष्ट है।

आगे कारनिस पर :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है (यह प्रतिमा पश्चिमों मुखी है)। इस पर लेख है :–

   संवत् 181 (?) रा. श्री ––––––न्द्रसेन सू ––––––––श्री नागेन्द्रगच्छे'' इसके ऊपर पार्श्वनाथ भगवान का चित्र लगा है।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिस पर लेख है :– ''सं. 1636 वर्षे चैत्र (आगे स्पष्ट नहीं है) लांछन भी स्पष्ट नहीं है। लेकिन नाम सुपार्श्वनाथ लिखा है।''

3. श्री जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

4. श्री मणिभद्र जी की 21'' x 15'' आकार की दीवार पर स्थापित श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''श्री मणिभद्र वीराधिवीर मूर्ति श्रीमन्त्रपागच्छाधिष्ठायक बिंब स्थापितं भट्टारक श्री चन्द्ररत्न विद्यमाने प्रतिष्ठितं पन्यासेन कुशल गणिभि श्वेताम्बर जबड सेठ मणिकलाल इन्द्रलाल आदि करापितं सं. 1963 वैशाख सुदि 10'' इसके ऊपर घंटाकर्ण महावीर जी का चित्र लगा है।

5. बटुक भैरव जी की प्रतिमा पूर्वोमुखी साधारण पाषाण की 29'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

   सभा मंडप से बाहर निकलते समय बाईं ओर के आलिए में श्री अशोका देवी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''संवत् 2023 आषाढ़ कृष्ण 5 श्री अशोकादेवी मूर्ति बुघेसरा गौत्रे श्री गहरीलाल, भगवतीलाल, आनन्दीलाल, सज्जनलाल दावड़ाया कारिता प्रतिष्ठतां श्री हिमाचलसूरिभि।

   निज मंदिर के सभा मंडप से बाहर आते समय दाहिनी ओर के आलिए में ब्रह्म यक्ष की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सं. 2023 आषाढ़ वद 5 श्री ब्रह्म यक्ष बिंब हुमड़ जाति श्री घनलाल जी मांगीलाल जी नजरसिंह जी रमेशचन्द्र।''

सभा मंडप के बाईं ओर एक देवरी बनी हुई है, जिसमें तीन प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मध्य में) 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''श्री कलि कुण्ड तीर्थे शत्रुन्जय मध्ये श्री पार्श्वनाथ जिनबिंब प्रतिष्ठितं आ. वि. राजेन्द्र सूरीश्वर कारितंच गेरीलाल भगवतीलाल ––––––''

2. श्री नेमिनाथ भगवान (पार्श्वनाथ के दाहिनी ओर) 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है :– ''श्री नेमिनाथ बिंब पाटण ग्राम (अन्धेरी) मुम्बई बा. हीरालाल सुत हसमुखलाल पत्नी कंचन बेन पुत्र राजेन्द्र कमलेश नितिन पुत्री परशा पुत्रवधू नीना मीना सुतेन स्वश्रेय''

3. श्री सीमन्धर स्वामी (पार्श्वनाथ जी के बाई ओर) 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है कि :– ''सीमन्धर स्वामी जिन बिंब सिरोया श्री श्याम जी भाई सुत बालुभाई, प्रकाश, कुमारणा पत्नी प्रवीणा युतेन पि तु. प्रभावती मातृश्रय चन्द्रासू ––––प्र.च.शा. सम्राट आचार्य श्री विजय–––––––

   वेदी के नीचे पद्मावती देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह देवरी संवत् 2023 फाल्गुन सुद 10 आचार्य श्री जितेन्द्र सूरीश्वर जी महाराज की निश्रा में स्वर्गीय श्री गहरीलाल जी दावड़ा की धर्मपत्नी श्रीमती सूरजबाई द्वारा बनाई गयी।

   निज मंदिर के परिक्रमा क्षेत्र में प्रवेश करने पर उत्तर–पूर्व कोने में एक मंदिर बना हुआ है। **इस मंदिर को ऋषभदेव जी का मंदिर कहा जाता है।**

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री ऋषभदेव भगवान की खड़ी 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। प्रतिमा के दोनों ओर खड़ी प्रतिमा भरत व बाहुबलि की है। इसके नीचे यह लेख है :–

   ''संवत् 1881 फाल्गुन शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीय तृतीया चन्द्रवासरे अंश भाद्रपद नक्षत्रे शुक्ल नाम्रियोग हुबड जाति वृद्धि शाखाया दावड़ा गोत्रे शाह मोतीचन्द भार्या लालबाई दावड़ा पृथीराज भार्या बिने कुँवर श्री आदिनाथ बिंब कारापितं वृद्ध गच्छे भट्टारक श्री ––––––––सूरि प्रतिष्ठितं उदयपुर नगरें।''

2. श्री जिनेश्वर भगवान (मूलनायक के दाहिनी ओर) 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''मूल संघ''

3. इसके आगे के आलिए में दो पादुकाएँ स्थापित हैं, जिनका आकार 9'' x 8'' है। लेख बहुत घिसा हुआ है, पढ़ा नहीं जा सकता।

4. इसके आगे के आलिए (उत्तरी दीवार) में चार पादुकाएँ 16 x 16'' आकार की श्वेत पाषाण की स्थापित है। लेख घिसा हुआ है, पढ़ा नहीं जा सकता।

5. इसके आगे श्री नमिनाथ भगवान की 8'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख अस्पष्ट है। लेकिन लांछन स्पष्ट है, लेकिन नाम नेमिनाथ जी का लिखा है।

6. इसके आगे के आलिए में गौमुख यक्ष की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1881 फागुन शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीय तृतीया चन्द्रवासरे भाद्रपद नक्षत्रे शुक्ल नाम योग हुबड जाति वृद्ध शाखाया दावड़ा मोतीचन्द भार्या लाल बाई तत्पुत्र दावड़ा पृथ्वीराज भार्या बोने कुवर तत्पुत्र जोधराज भार्या उषे कुँवर श्री गोमुख यक्ष करापितं भट्टारक श्री नवरत्न सूरि प्रतिष्ठतम उदयपुर नगरे मध्ये शुभं भूयात्।''

मूलनायक के दाहिनी ओर :–

1. जिनेश्वर भगवान की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1674 पोष वद। गुरौ सा नागराज जसराज का नेणा''

2. इसके आगे के आलिए में 15'' x 16'' आकार की श्वेत पाषाण की चरण पादुकाएँ स्थापित है।

3. इसके आगे के आलिए में श्री जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन अस्पष्ट है, जो किसी पशु का प्रतीत होता है। दीवार पर नेमिनाथ का नाम लिखा है।

4. इसके आगे के आलिए में श्री चक्रेश्वरी देवी की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1881 वर्षे फाल्गुन शुक्ल पक्षे द्वितीय तृतीया चन्द्रवासरे भाद्रपद नक्षत्रे नाम योग में हुबड जाति वृद्ध शाखाया बुद्ध प्रसाद दावड़ा मोतीचन्द्र भार्या लाल बाई तत्पुत्र दावड़ा प्रथीराज भार्या विने कुँवर तत्पुत्र जोधराज भार्या अखे कुँवर श्री चक्रेश्वरी बिंब करापितं पूज्य भट्टारक श्री नवरत्न सूरि प्रतिष्ठितं उदयपुर नगरे श्री रस्तु।''

5. इसके आगे के आलिए में श्वेत पाषाण की चरण पादुकाएँ स्थापित है, जिनका आकार 14'' x 10'' है। इसके किनारे पर लेख अस्पष्ट है।

मंदिर से बाहर निकल कर बाईं ओर परिक्रमा परिसर में दक्षिण ओर **एक देवरी रायण के वृक्ष के नीचे बनी है।**

इस देवरी में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री आदिनाथ भगवान की सर्व धातु की 15'' ऊँची प्रतिमा है इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1819 वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे पंचमा तिथिया भृगुवासरे पुष्य नक्षत्रे घ्रुव योगे जुम्बली जातिय वृद्धि शाखा बुद्ध गौत्रे अग पद्मावत दावड़ा पदारथ जी तत् भार्या रामबाई तत्पुत्र अमरसिंह तत भार्या ––––––श्री आदिनाथ जिन बिंब करापिंत श्री जयरत्न सूरिभि प्रतिष्ठितं श्री उदयपुर नगरें।''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर 17'' वर्गाकार श्वेत पाषाण की आदिनाथ भगवान के चरण

पादुका स्थापित है, जिसके किनारे पर लेख है :–

''संवत् 1881 फागुन शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीय तृतीय चन्द्र वारे भाद्रपद नक्षत्रे हुबड़ जाति वृद्धि शाखाया बुधसार मोतीचन्द भार्या लाल बाई तत्पुत्र दावड़ा पृथ्वीराज भार्या विने कुँवर तत्पुत्र जोधराज भार्या अखे कुँवर श्री आदिनाथ चरण करापितं श्री जयरत्न सूरि श्री शान्ती सागर सूरि तत्पट्टे विद्यमान भट्टारक श्री नव रत्न सूरि प्रतिष्ठितं उदयपुर नगरे।''

3. इसी प्रकार मूलनायक के बाईं ओर भी श्री आदिनाथ भगवान की 15'' वर्गाकार चरण पादुका श्वेत पाषाण के है। इसके किनारे यह लेख है :–

''संवत् 1881 वर्षे फाल्गुन शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीय तृतीय चन्द्रवासरे भाद्र नक्षत्रे हुबड़ जाति वृद्धि शाखाया बुधसार मोतीचन्द्र भार्या लालबाई तत्पुत्र दावड़ा पृथ्वीराज भार्या विने कुँवर तत्पुत्र जोधराज भार्या अखे कुँवर श्री आदिनाथ चरण कारापितं श्री जयरत्न सूरि श्री शान्ति सागर सूरि तत्पट्टे विद्यमान भट्टारक श्री नव रत्न सूरि प्रतिष्ठितं उदयपुर नगरे।''

यह देवरी संवत् 2033 आषाढ कृष्ण 3 को आ. हिमाचल सूरीश्वर जी की निश्रा में श्री सोहनलाल जी दलाल द्वारा निर्मित करायी गयी।

आगे चलकर बाहर निकलते हुए निज मंदिर के बाहरी सभा मंडप के दाहिनी ओर अर्थात् दक्षिण की ओर एक देवरी बनी है। उसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री सम्भवनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की प्रतिमा 23'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1781 वरषे वेशाख मासे शुक्ल पक्षे सप्त्म्यां 7 तिथौं गुरुवासरे पुष्य नक्षत्रे घ्रुव योगे हुबड़ जातीय वृद्ध शाखाया–––––भार्या–––––बाई–––––जीव सुत –––––मा––– (स्पष्ट नहीं)''

2. श्री शान्ति नाथ भगवान (मूलनायक के दाहिनी ओर) की 15'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :– ''संवत् 1781 वरषे वेसाख सुदी 7 गुरौ श्री शांतिनाथ बिंब''

3. श्री चन्द्र प्रभु जी की (मूलनायक के बाईं ओर) 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''श्री चन्द्र प्रभ बिंब''

इसके पास ही दक्षिण की ओर एक दरवाजा है, जो एक बड़े उपाश्रय में जाता है, जहाँ पर पद्मावती माताजी का मंदिर है, जिसका विवरण निम्न प्रकार से है :–

पद्मावती माताजी का मंदिर :–

मूल मंदिर के दक्षिण भाग में एक बड़ा उपाश्रय है, जहाँ पद्मावती माताजी का मंदिर

है। यह एक बड़ा भवन है, जिसमें 10 स्तंभ तथा 16 अर्धस्तंभ है। (दीवारों पर सुन्दर भित्ति चित्र बने हैं और शीशे जड़े हुए है।)

दक्षिण की दीवार में एक देवरी में पद्मावती माता की 15'' ऊँची प्रतिमा है। देवरी व खम्भों पर काँच की जड़ाई की गयी है, जो बहुत ही सुन्दर है। पाषाण का रंग थोड़ा पीलापन लिये हुए है। इस पर लेख है :– ''श्री पद्मावती प्रतिष्ठितं तपागच्छे।''

देवरी के द्वार पर रंगीन काँच की सुन्दर चित्रकारी है। सामने के खम्भे पर सफेद काँच जड़े हुए है। उपाश्रय के दो द्वार है, एक उत्तरमुखी जो मूल मंदिर के प्रांगण में खुलता है तथा दूसरा पश्चिममुखी जो बाहर मार्ग में खुलता है। यह द्वार प्रायः बंद रहता है। इस द्वार के बाईं ओर गजानन जी की तथा सामने की भित्ति में भैरूजी विराजमान हैं।

मेवाड़ राज्य के समय में माता के दीपक (ज्योत) के लिए घी महाराणा की ओर से आता था। इस मंदिर से पुनः निज मंदिर के बाहरी सभा मंडप में आते हैं – दरवाजे से बाहर निकलते समय बाईं ओर (सभा मंडप में दाहिनी ओर) **सिद्ध क्षेत्र बना हुआ है और उस पर 9 देवरियाँ हैं व प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की गई हैं।** इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

बाएँ कोने पर अपेक्षाकृत बड़ी देवरी में श्री आदिनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा विराजमान है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1955 शाके 1820 (?) मि. फा. व. 5 गु. श्री ऋषभजिन बिंब करापितं प्र.भ. श्री जिन मुक्ति सूरिभिः श्री भाव सागर मुनि उपदेशात् कारितम्।''

इस लेख के अतिरिक्त एक लेख उस वेदी पर भी है जिस पर प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई है। वह लेख निम्नलिखित है :–

''श्री सिद्धाचल शिखरे विमलवसी टंके मूल नायक श्री आदीश्वर जिन बिंब स्थापित श्रीमत्तपागच्छे भट्टारक श्री चंद्र रत्न सूरि विद्यमाने प्रतिष्ठिता पंन्यास जिनकुशल गणिभिः संवत् 1983 वर्षे वैशाख शुक्ला 10 गुरु वासरे श्रीमदुदयपुर वास्तव्य महाराणा श्री फतहसिंह जी राज्ये।''

दूसरी देवरी में श्री शांतिनाथ जी की 9'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1955 मी. फागु., 15 ग. री. शान्ति नाथ बिंब प्रतिष्ठापितं भ. श्री मुक्ति (जिनमुक्ति? सूरिभिः भावसागर.....''

वेदी पर यह लेख है :–

''दूजी मोती वसीना मूल नायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पं. नेमकुशल गणिभिः श्री मत्तपागच्छे।।''

तीसरी देवरी में आदिनाथ भगवान की 8'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा विद्यमान है।

उस पर बहुत अस्पष्ट लेख है, जिसका कुछ भाग प्रतिमा के पृष्ठ भाग में सीमेंट से दब गया है। यह लेख पढ़ा जा सकता है।

सं. 1955 मी. फा. कृ. 5 श्री दया....भावसागर। वेदी पर लेख निम्नलिखित है :–

तीजी बाला वसी मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पं. नेमकुशल गणिभिः श्री वृहतपागच्छे।।3।।

चौथी देवरी में भगवान अजितनाथ जी की 8'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1955 वि. फा. कृ. श्री अजित जिन बिम्बं .....भावसागर..'' वेदी पर लेख है :–

''चौथी पेमा वसीना मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पं. नेमकुशल गणिभिः श्री मत्तपागच्छे।।4।।''

5. मध्य में पाँचवीं देवरी में श्री पार्श्वनाथ भगवान की 12'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''संवत् 1955 मी.फा.कृ. 5 श्री पार्श्वनाथ बिंब भावसागर मुनि उपदेशात् कारितं।।

वेदी पर यह लेख हैं :–

पांचवीं हेमा वसीना श्री मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पन्यास नेमकुशल गणिभिः श्री मत्तपागच्छे।।5।।

6. श्री ऋषभदेव की 8'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :

''संवत् 1955 मि. फा. व श्री ऋषभजिन बिंब .....भावसागर मुनि उप'' वेदी पर यह लेख है :–

''षष्ठी उजमा वसीना मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं नेमकुशल गणिभिः श्रीमत्तपागच्छे श्री रस्तु।।''

7. श्री चन्द्र प्रभु भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके निम्न भाग में यह लेख है :–

''संवत् 1955 मि. फा. कृ. 6 गु. श्री चन्द्र प्रभु बिंब भावसागर मुनि उपदेशात् कारितं संघवी'' वेदी पर यह लेख है :–

''सातमी साकर वसी में मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पन्यास नेमकुशल गणिभिः श्रीमत्तपागच्छै उदयपुर मध्ये संवत् 1963 वै.शु.10.

8. श्री शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे यह लेख है :–

''संवत् 1955 मि.फा.कृ. 5 श्री शांतीनाथ बिंब भावसागर उपदेशात् कारितम् संघवी...–''

वेदी पर यह लेख है :–

''आठवीं वापा वसीना श्री मूलनायक जिन बिंब प्रतिष्ठितं पं. नेमकुशल गणिभिः। श्री बृहत्तपागच्छे। श्री रस्तु।।

9. सप्त धातु की 15'' ऊँची चतुर्मुख प्रतिमा स्थापित है। यह स्तूप नुमा गोल वेदी पर प्रतिष्ठित है। ऊपर चारों ओर छत्र है। स्तूप नुमा इस वेदी की चार मंजिलें हैं, प्रत्येक मंजिल पर चारों ओर रेलिंग बनी है। उसके चारों ओर दिशाओं में मुंह किये जिनेश्वर भगवान् विराजमान है। वेदी के चारों तरफ हाथी, सिंह, मयूर, सर्प तथा जिनेश्वर भगवान की मूर्तियाँ बनी हैं।

इसके आगे दक्षिणी दीवार पर ही सिद्ध चक्र यंत्र बड़े काँच में लगा हुआ है। इसके आगे मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर **श्री पार्श्वनाथ भगवान का समवसरण** श्वेत पाषाण का बना हुआ है। श्री पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची चतुर्मुखी श्वेत पाषाण की प्रतिमा चारों दिशाओं में प्रतिष्ठित है। चारों प्रतिमा के नीचे लेख लिखा हुआ है, जिसका सारांश यह है :–

इस समवसरण की प्रतिष्ठा श्री अभयदेव सूरीश्वर जी महाराज द्वारा संवत् 2032 में श्री प्रभुलाल जी दोषी परिवार द्वारा करायी गयी।

समवसरण के आगे उत्तरी दीवार की ओर श्री राजगीरी जी श्री अष्टापद जी, श्री सम्मेद शिखर जी, श्री शत्रुन्जय जी, गिरनार जी, श्री सीमन्धर स्वामी जी, श्री ऋषभदेवजी, पार्श्वनाथ जी के काँच में जड़े हुए चित्र भिन्न–भिन्न व्यक्तियों द्वारा बनवाकर लगाए हैं। शत्रुन्जय जी के चित्र के नीचे एक आलिए (ताक) में श्री क्षेत्र पाल जी (श्री भैरव जी) की 23 ऊँची साधारण पाषाण की बनी हुई खड़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित है।

इस मंदिर के प्रवेश के अन्तिम छोर तक 72 स्तंभ हैं। मंदिर की देख–रेख हुमड समाज द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री गोड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर सिंघटवाड़ियों की सहरी, उदयपुर

यह मंदिर घंटाघर से सूरजपोल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित वासुपूज्य भगवान के मंदिर (काँच का मंदिर) बड़ा बाजार के सामने गली के अंदर स्थित है।

यह सिंघटवाड़ियों का मंदिर कहलाता है और सिंघटवाड़िया परिवार के मकानों की दीवार के साथ लगा हुआ है। लेकिन संदर्भ द्वारा यह मंदिर गांधी परिवार द्वारा बनाया हुआ है। इस मंदिर के बारे में यह कहा जाता है कि इसके पास में उपाश्रय बना हुआ है, जिसमें दुर्गा माता का मंदिर भी है, वहाँ यतिजी विराजते थे तथाकथित (नाम ज्ञात नहीं) यति बहुत प्रभावशाली थे और उनको सिद्धि प्राप्त थी। उनके भक्तों में से श्री सोमचन्द गांधी थे। इनको यति जी ने कहा कि वे प्रातः 3 बजे आए और दरवाजा खटखटावे और मुँह से कुछ नहीं बोले और यति जी मूंग डालेंगे। इस बात को बाहर एक भिस्ती सुन रहा था।

प्रातःकाल 3 बजे के करीब भिस्ती आया और दरवाजा खटखटाया तो यति जी ने बोला गांधी आ गया तो भिस्ती ने केवल हूँ कह दिया, यतिजी ने मूंग डाल दिये, कुछ समय बाद ही गांधी आये और दरवाजा खटखटाया तो यति जी ने देखा कि गांधी खड़ा था तो उन्हें सब जानकारी हो गयी और उन्होंने कहा कि राज नहीं मिलेगा, लेकिन मंत्री अवश्य बनेगा। इसके प्रभाव से भिस्ती को आधे दिन का मेवाड़ का राज्य मिला और गांधी को प्रधान पद मिला और उसी गांधी परिवार ने यह मंदिर बनवाया।

(जैन तीर्थ नामक पुस्तक में इस मंदिर को गांधी कुटुम्ब द्वारा बनाने का उल्लेख है)

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूल नायक श्री पार्श्वनाथ भगवान (गौडी पार्श्वनाथ) की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन सर्प का स्पष्ट है। इस पर लेख है :–

   ''संवत् 1805 वर्षे माह सुदे गुरो श्री गौडी पार्श्वनाथ''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री महावीर स्वामी की श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। लांछन सिंह का है। इस पर लेख है कि – सं. 1405 महावीर बिंब संघेन कारीतम्''

3. मूल नायक के बाईं ओर श्वेत पाषाण की सम्भवतया महावीर स्वामी की 17'' ऊँची प्रतिमा है। लांछन सिंह का प्रतीत होता है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमा (धातु की)

1. पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। मस्तक के ऊपर सर्प का छत्र है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

   ''सं. 1755 वर्षे काती सुदि 14 खौ कमलकान्त सागलो उपाध्याय अमर विजय जी गिरपुर और आगे चिन्तामणि पार्श्वनाथ बिंब लिखा है।

2. सिद्ध चक्र गोलाकार 5'' व्यास का है। इस पर लेख है कि सिद्धचक्र बिम्ब विजय प्रेम भुवन सूरिमि पट्टालंकार जयघोषसूरि तेना गुण भुवन सुन्दर प्रेरणा से पाटन निवासी रसिकलाल तत् पुत्र वीरेन्द्र भार्या छाया सुपुत्र कुणाल श्रेयोर्थ कारापितं उदयपुर गोरवाडिया जिनालय में सं. 2057 मिगसिर सुद 5

3. पंच तीर्थी शांतिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :– शांतिनाथ बिंब विजय प्रेम भुवन भानु सूरि पट्टालंकार जयघोषसूरि तेना जिनम पं. गुण भुवन सुन्दर प्रेरणा थी पाटण निवासी रसिकलाल पुत्र वीरेन्द भार्या छाया सुपुत्र कुणाल श्रेयोर्थ करापितं उदयपुर सिंघटवाड़िया जिनालय में सं. 2057 मिगसर शु. 5

4. तांबे का यंत्र जिसका आकार 5'' x 7'' है।

5. तांबे का यंत्र, जिसका आकार 6'' x 6'' है। इस पर एक किनारे पर लेख है :– भ. श्री शान्ति सागर सूरिभि प्रदत्त है।

   दोनों ही यंत्रों में बीच में कोष्ठक बने है और मन्त्र लिखे है।

निज मंदिर के बाहर सभा मंडप में प्रवेश करने पर बाईं ओर एक आलिए में :–

1. शांतिनाथ भगवान् की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख इस प्रकार है श्रेष्ठि आवड़ श्री शांतिनाथ प्रणमति'' (यह नग्न प्रतिमा है)

2. दाहिनी ओर एक आलिए में श्री पार्श्वनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिस पर सर्प का लांछन है। कोई लेख नहीं है। **सभा मंडप में ही पूर्वी दीवार पर दक्षिण की ओर एक कारनिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–**

3. श्री विमलनाथ स्वामी की 13'' ऊँची'' श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।

4. श्री चन्द्र प्रभु स्वामी (मध्य में) 17′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।

5. इसके पास ही श्री ऋषभदेव भगवान की 11′′ ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है। लांछन स्पष्ट है।

परिक्रमा की ओर एक देवरी बनी हुई है, जिसमें श्री ऋषभदेव की 21′′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

श्री अरहंताय नमः वीरात् 2488 सं. 2018 फा. शु. 7 सोमे बेंगलोरस्त श्री आदि चे श्री बस्तीमल हीराजी भार्या टमु देवी अजंनरा मं.सं. राजदे भरत आ. च. श्री ललिते सूरीश्वर पट्टे आ. विषलानन्द सूरि हीकार विजय सूरिभि आनन्द कीर्ति श्री नद पूनमचन्द आदि स्व कुटुम्बें श्री श्रेयसे पूर्णीमील्को भूमते। देवरी के नीचे पाषाण पर लेख है :–

वि.सं. 2023 पोषमासे शुक्ल पक्षे 15 तिथौ गुरुवासरे श्रेयास जिन् अभि नवमे् छत्री उदयपुरस्य प्रागवाट वंशे गोरवाड़े गौत्रे शा चतुरसिंह स्वर्गीय पिता श्री भूरीलाल स्व. पुन्य स्मृति माता श्रीमती गुलाब देव्याः हार्दिक प्रेरणया स्व पर कल्याणार्थं कारित प्रतिष्ठतम श्री मदाचार्य विजय हिमाचल सूरिभि श्री रस्तु विद्यानन्द विजय।

लेख के अनुसार श्री श्रेयांसनाथ की प्रतिमा होनी चाहिए।

मंदिर में (सभा मंडप) प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में गजानन जी की 19′′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके पास ही किसी देव की 4′′ ऊँची मूर्ति श्याम पाषाण की है और बाईं ओर आलिए में श्री भैरव जी की 19′′ ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

सभा मंडप में उत्तरी दीवार पर श्री केशरिया जी का चित्र, पच्छिमी दीवार पर श्री शंखेश्वर जी तीर्थ, नागेश्वर तीर्थ के पट्ट लगे है और दक्षिणी दीवार पर शत्रुन्जय तीर्थ और सम्मेद शिखर जी के पट्ट लगे हुए है।

वर्तमान में इस मंदिर की देख–रेख सिंघवी श्री मिट्ठालाल जी पोरवाल समीचा वाले कर रहे है।

मंदिर के सामने ही एक दुर्गा माता का मंदिर है, जिसमें छोटी मूर्तियाँ दिखायी देती हैं। दुर्गा मंदिर प्रायः बंद रहता है और शीतलनाथ जी की पेढी के हस्ते है।

❑❑❑

श्री वासुपूज्य भगवान का काँच का मंदिर
बड़ा बाजार, उदयपुर

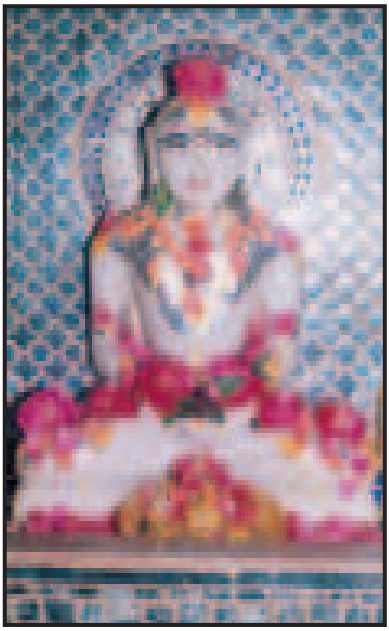

यह मंदिर घंटाघर से सूरजपोल/धानमण्डी की ओर जाने वाली मुख्य सड़क (बड़ा बाजार) के दाहिनी ओर स्थित है।

यह मंदिर काँच से जड़ा हुआ है। इसलिए इसको काँच का मंदिर भी कहते है। यह प्राचीन शिखरबंद मंदिर है, लेकिन मंदिर में विराजित प्रतिमाओं के नीचे उत्कीर्ण शब्दावली व चिह्न नहीं है या सीमेंट से दब गए हैं। एक खण्डित शिलालेख जो मंदिर परिसर से हट कर पड़ा है, उससे व ओसवाल जाति के इतिहास से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण महाराणा जगतसिंह जी के समय में श्री लक्खू जी भीखू जी दोशी परिवार द्वारा किया गया और प्रतिष्ठा सं. 1705 ज्येष्ठ वदि 9 को सम्पन्न हुई। शिलालेख चित्रण की प्रतिलिपि पर निम्न प्रकार से है :–

स्वस्ति श्रीसदनं ध्वस्तमदनवदनश्रियः।

निरस्तकदनं नत्वा सुपार्श्वं पर्शुमंहसः।।

लिखामि प्रशस्तिं प्रशस्ता .....प्रशस्तावकीनाम्।

त्वमेवाय सयाहाधमाव्रज्यनेन, रंजय्य सम (ष्ट्) या समक्षं विधलात्।।2।।

त्वां श्रेयसा श्रेष्ठतमं जगत्पतेः सम्प्रगृहशं श्रेष्ठ

स्वस्तिक–सेवनान्ययथानुपत्तितः प्रत्ययमत्र तन्वताम्।।3।।

जिनेन्द्रचित्रं भरतश्चरित्रं प्रत्येतिकश्चित्विरत्नो विपश्चित्।

मुमुक्षु ..... सत्त्वानामाश्चर्यकरं तदेतत्।।4।।

चातुर्यमर्त्यं भवतोवतो जनान्, जनेन शेषेण कथं जिनेशतत्।।

शमे स्थितस्य प्रसभं ध्नतो रिपुः .....साप्यद्रुहः।।5।।

श्रीमद्बहत्खरतरगच्छे स्वच्छे भ. श्री जिनवर्द्धन सूरि–

सन्ताने श्री जिनचन्द्र सूरि पट्ट–पूर्वद्रिसूर लसद्विथाविलास्

पराकृतमरहट्ट प्रभृति जनपद– विद्वद्धन श्रीमदर्हदुक्ता।
नागारामाचारलब्ध प्रतिष्ठ शिष्य चतुः षष्टि सयुरेन्द्र
सहस्र लिम्ब प्रतिष्ठायक भ. श्री जिनसागर सूरिभिः सं.
1695 वर्षे (प्रतिषेध) श्री मेदपाटाधिपति नसराम
श्री अमरसिंह प्रभ .....तटाक जल जीव वधानां।
श्री मदागरभिरर्मवनीसुर राज्य ..... यनन।
पावन पुन पुण न कर रोपित कृपाण चतुरुदधि
पर तीर धरनिखात जयपताक मार्ग्गणा (.....)
चकत्ताचक्रवर्त्ति श्री मत्साहिजहाँ .....चितकारादत्त
जनानां तस्यैव स्वपितृ श्री मज्जहाँगीर खद्ध .....
(युतद्दानहृष्ट परम सयाहसिक रणरसिक हिन्दूपति
श्री जगसिंह जिनगृह नव नानां। तेनैव च त ....
प्रसादीकृतेन्द्रियकर 25 मित राजतमुद्रावार्षिकाणां
पं. जयसिंह (.....) चार्य श्री दयासयागर गणी
नामु (प) देशात् (अं) बाडी गोत्र – शृंगारहार सया.
श्री राघवपुत्र रत्न सया. किसयनाकेन वृद्ध
भ्रातृ कल्याण ..... सा. हाथी– पुत्रोदयमाण–
चतुर्भुज तल्लघुभ्रातृ हरचन्द पुत्र कर्मसी प्रमुख
परिवार यतेन स्वपुत्ररत्न सा. सुन्दरदास स....
दिने उकेशवंशे नवलक्ष शाखायां सा. सारंग
भार्या गोरादे पुत्री अमरी कारितस्य श्री मुनि सुव्रत
बिम्बस्य लोकोद् .....विभवर्जितं लक्ष्मीलाल
ग्रहणाय कर्मक्षयाय च चैत्यरचनापूर्वं पदस्थापनं
चक्रें। भ श्री जिनचन्द्र सूरि सरेषु .....संवति
पाण्डव गंगनाहर्मणिवाज्यास्य चन्द्रभः 1705
प्रमिते ज्येष्ठस्य वदि नवम्याम् .....
..... कंदर्प्पसर्पसर्पद्विषद्थीः प्रयतैः प्रशस्तिः
प्रशस्तवर्णा जिनवर्द्धमानसूरीन्द्रवर्यैर्ल्लिखित श्रियेऽस्तु।

प्र म.....मंडलाखण्डित शासन महाराणा

श्री जगतसिंहस्य विजययिराज्ये ते नैव स्वकीय कर

वितीर्णामान्यपदशान्ति दोसी .....गोत्रीय शाह

श्री दशरथस्य पुत्र सया. लादू सा. माधू सया. साधू

प्रमुख परिवार युतस्य श्री सुपार्श्व परमेष्ठि बिम्ब

.....(प्रशस्ति उत्कीर्णा चैषा गजधर

हरिवंश सुत जोगीदासेन ।। श्री रस्तु।।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र हैं :–

1. मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन व लेख अस्पष्ट है।
2. मूलनायक के बाईं ओर सप्त धातु की जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है।
3. इसके पास पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है।
4. मूलनायक के दाहिनी ओर पंच धातु की तीन प्रतिमाएँ क्रमशः 5'', 6'' एवं 7'' ऊँची है।
7. इसके पास ही पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा 9'' ऊँची है। लेख अस्पष्ट है।
8. सिद्धचक्र यंत्र धातु का जिसका आकार 5'' x 5'' है।
9. अष्टापद यंत्र धातु का जिसका आकार 9'' x 7'' है।

निज मंदिर से बाहर सभा मंडप में निकलते समय दाहिनी ओर कारनिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

1. श्री आदेश्वर भगवान की प्राचीन 41'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। भगवान के दोनों ओर पार्श्वनाथ भगवान की काउस्सग मुद्रा में खड़ी प्रतिमाएँ है। इन प्रतिमाओं का परिकर एक ही है, इन प्रतिमाओं पर कोई लांछन व लेख नहीं है। लेकिन भगवान के कंधों पर जटा होने के कारण यह ऋषभदेव भगवान की प्रतीत होती है।
2. इसके आगे जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 5'' ऊँची प्रतिमा है। लेख ''आदि पुत्र प्रणमति'' पढ़ने में आता है, शेष दबा हुआ है।
3. इसके आगे पंच धातु की पार्श्वनाथ भगवान 5'' ऊँची की प्रतिमा है।

4–5. जिनेश्वर भगवान की धातु की 5'' ऊँची दो प्रतिमाएँ है।

6–8. पार्श्वनाथ भगवान की 5'' ऊँची तीन प्रतिमाएँ धातु की है।

9. जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

10. आदेश्वर भगवान की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

11. जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख में केवल ''लमाना'' पढ़ने में आता है।

12. पद्मावती माता की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

निज मंदिर से बाहर सभा मंडप में निकलते हुए बाईं ओर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

13. आदिनाथ भगवान (ऋषभदेव भगवान) की श्वेत पाषाण की प्राचीन प्रतिमा 43'' ऊँची है। एक ही परिकर बना हुआ है। भगवान के दोनों ओर पार्श्वनाथ भगवान की काउस्सग मुद्रा में खड़ी प्रतिमाएँ है। इन प्रतिमाओं पर लांछन नहीं हैं। लेकिन जटा के आधार पर आदेश्वर भगवान की प्रतीत होती हैं।

14. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

15. पंच धातु की 5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है।

16. आदिनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख यह है :–

    ''श्री आदिनाथ श्री हरकू .....।''

17. जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लेख का निम्न अंश ही पढ़ने में आता है। ''खरतरगच्छ प्रतिष्ठित भट्ट श्री जिनचन्द्र''

18. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्राचीन पीत पाषाण की प्रतिमा है।

19. जिनेश्वर भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख यह है कि ''सा. कैना पुत्र डुंगरमल ताराचन्द – पुत्र आदितेय प्रतिष्ठित''

20. गौतम स्वामी की 5'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

21. जिनेश्वर भगवान की प्राचीन 15'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा हैं।

21. चक्रेश्वरी देवी की 23'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है और इनके ऊपर दो जिन प्रतिमाएँ स्थापित है।

22. सरस्वती देवी की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है।

सभा मंडप से बाहरी सभा मंडप की ओर निकलते हुए दाहिनी ओर एक आलिए में दादा जिनदत्तसूरि की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सं. 2014 फा. 3 शु. खरतरगच्छावलंकार दादा श्री जिनदत्तसूरि मूर्ति उदयपुर वास्तव्य औसवाल पन्नालाल दलाल''

बाहर निकलते हुए बाईं ओर एक आलिए में श्री दादा गुरु श्री जिनकुशलसूरिजी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख यह है ''सं. 2014 फा. 3 शु. खरतरगच्छावलंकार

उपाध्याय सुखसागरेण दादा श्री जिनकुशलसूरि .....मूर्ति उदयपुर वास्तव्य औसवाल पन्नालाल कारापितं प्रतिष्ठितं''

इस सभा मंडप से नीचे उतरने पर दक्षिणी ओर एक देवरी में चतुर्मुख श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसका आकार 23'' x 11'' है। इस पर लेख है :–

''सं. 1036 फाल्गुन वदी 6 .....कारापित।''

यह लेख दक्षिण की ओर है। इसके नीचे वेदी पर निम्न लेख है :–

''स्वस्ति श्रीमद वीर जिनं प्रणम्य शुभ संवत् 1981 माघ शुं. 1 शुक्रवारे बृहत तपागच्छे पूज्याचार्य श्री विजय नेमीश्वर सूरीश्वरजी शिष्य रत्न प्रतिष्ठित है मेवाड़ देशे उदयपुर नगरे महाराणा श्री भूपालसिंह जी विजय राज्ये जिर्णो सहायक उदयपुर वास्तव्य सामरगौत्रीय चतुर अवंट केस्थ सेठ उम्मेदमल जी सुत स्वर्गस्थं चांदणमल जी भार्या वदन बाई श्रेयार्थ पुत्र लक्ष्मीलाल जी तत्पुत्र ऋषभलालेन महोत्सव स. समापितं प्रतिष्ठितं विधि कारक यति अनूपचन्द्र''

बाहर से मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक आलिए में

जिनवर्द्धमान सूरिजी की चरण पादुका स्थापित है। इसका आकार 13'' x 15'' है इस पर लेख है कि ''सं. 1755 वर्षे पोष वदी 5 श्री जिन वर्द्धमानसूरि पादुका कारापितं श्री संघेन'' **इसी प्रकार बाईं ओर एक आलिए में** श्री वासुपूज्य स्वामी के प्रथम गणधर सुभूम स्वामी की पादुका स्थापित है और आलिए में इनका चित्र भी है। इसका आकार 9 x 19'' है। इस पर लेख है। ''सं. 2014 फा. शु. 3 शुक्रवासरे प्रतिष्ठा कारिता।। श्री ।। श्री ।। 1008 श्री वासुपूज्य स्वामी के प्रथम गणधर श्री सुभूम स्वामी चरण पादुका''

यह मंदिर सम्पूर्ण रूप से काँच का बना हुआ है। भिन्न–भिन्न तीर्थंकर भगवान के जीवन चरित्र को बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

इस मंदिर में निम्न पट्ट बने हुए हैं :–

प्रवेश करते समय दाहिनी ओर दीवार जो आगे पूर्व की ओर गली की तरफ जाती है :–

1. ऊपर पावापुरी जल मंदिर, 2. नीचे अष्टापद तीर्थ, 3. ऊपर महावीर स्वामी के कान में कीले लगाते हुए, 4. नीचे ऋषभदेवजी, 5. सुदर्शन सेठ का जीवन चरित्र के चित्र, 6. जैसलमेर तीर्थ, 7. राणकपुर तीर्थ, 8. तारंगा तीर्थ, 9. अंजनासती के चित्र है।

प्रवेश करते समय बाईं तरफ से पूर्व की ओर गली तक निम्न चित्र है :–

1. ऊपर राजगृही तीर्थ, 2. नीचे नन्दीश्वर द्वीप, 3. कापरड़ा तीर्थ, 4. नाकोड़ा तीर्थ, 5. सम्मेद शिखरजी, 6. क्षत्रिय कुण्ड, गुणिया जी, बीस स्थानक यंत्र आदि तीर्थ के चित्र बने हुए है। इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य महाराज का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर (चतराम का उपाश्रय) बड़ा बाजार, उदयपुर

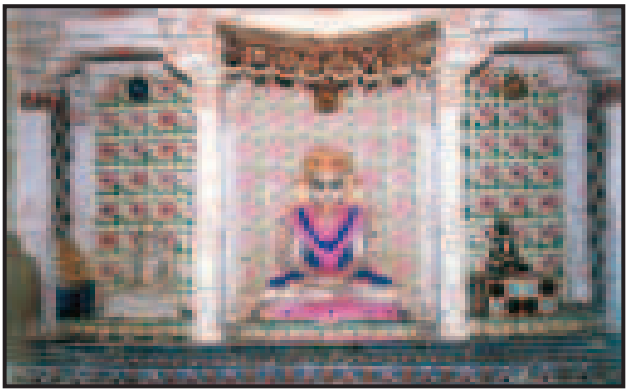

यह मंदिर बड़ा बाजार में काँच के मंदिर (बड़ा वासुपूज्य जी) के पूर्व की ओर मुख्य सड़क पर ''चतराम का उपाश्रय'' के बाहर बना हुआ है। पारख जी का कोठा भी इसी मंदिर ट्रस्ट के अधीन किराये पर है।

यह मंदिर खमेसरा परिवार के श्री खेतसिंह जी द्वारा महाराणा जयसिंह जी के समय में बनाया गया है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान की 35'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है।

   इस प्रतिमा पर लेख है :–

   ''सं. 1752 वैशाख सुद 7 तिथौ गुरुवासरे पुष्य नक्षत्रे श्री उदयपुर नगरे महाराणा श्री जयसिंह जी विजयराज्ये ओसवाल वंशे खीमेसरा गौत्रे सा. श्री खेतसिंहजी तत्पुत्र पांचाणजी तद्भार्या जीवादे तत्पुत्र बाइस पाबुजी वासुपूज्य बिंब कारापित श्री विजय गच्छे श्री पूज्य सुमति सागर जी तत्पट्ट श्रीपूज्य श्री विजय सागर सूरिभि (प्रतिष्ठितम्) श्री वासुपूज्य बिंब ।।श्री मस्तु।। श्री कल्याण मस्तु।।''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर मल्लिनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

   इस पर लेख है :–

   ''सं. 1752 वैशाख शु. 7 गुरुवासरे उदयपुर नगरे महाराणा जयसिंह जी विजय राज्ये ओसवाल गोत्रीय खिमेसरा गोत्रे सा. श्री खेमीजी तत्भार्या तिलकादे श्री मल्लिनाथ बिंब कारापितं श्री विजय गच्छे श्री विजय सागर सूरिभि।''

3. मूलनायक के बाईं ओर जिनेश्वर (पार्श्वनाथ) भगवान की 7'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है।

4. इस प्रतिमा के पास चन्द्र प्रभु स्वामी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है, लांछन चन्द्रमा स्पष्ट दिखता है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :

1. सिद्धचक्र यंत्र चांदी के पतरे पर 8'' व्यास का बना है।

   मंदिर में कुल स्तंभ (अर्द्ध स्तंभ सहित) 8 हैं तथा निज मंदिर 8'x 6' फीट है। इसकी देख–रेख चतराम के उपाश्रय ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

❑❑❑

अमूर्तिपूजक सोचें - ऐसा क्यों?

(क) केलवा में (तेरापंथ स्थापना स्थल पर श्री भारमल जी स्वामी की काष्ट मूर्ति स्थापित है।)

(ख) तुलसी साधना शिखर के प्रांगण में श्री भारमल जी स्वामी की पाषाण की चरण-पादुकाएँ स्थापित है।

(ग) रूण (नागौर) में स्व. मिश्रीमल जी की प्रेरणा से स्व. हजारीमल जी म.सा. की संगमरमर की मूर्ति है।

(घ) गिरी ग्राम (जेतारण के पास) के स्थान में मुनि हर्षचन्द्र की मूर्ति है।

(ड) जसोल (बाड़मेर) में तेरापंथ के सन्त स्व. जीवणमल जी स्वामी की पाषाण की मूर्ति है।

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, कोलपोल, उदयपुर

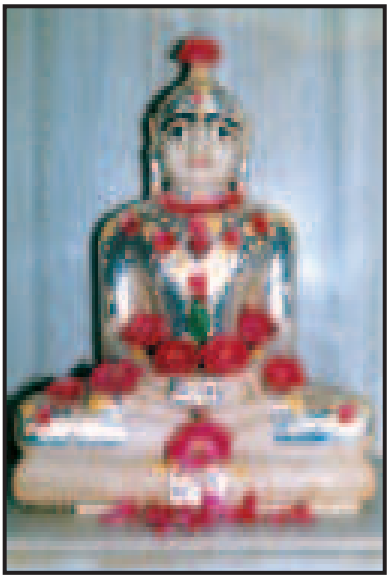

यह मंदिर घंटाघर से बड़ा बाजार जाते हुए दाहिनी ओर कुशलपोल (कोलपोल) में करीब 100 गज जाने पर मुख्य सड़क पर स्थित है। इस मंदिर के निर्माता परिवार की जानकारी नहीं हो सकी, क्योंकि कोई शिलालेख नहीं है और न ही किसी प्रतिमा पर किसी का उल्लेख है। केवल एक प्रतिमा पर समय अवश्य पढ़ने में आता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह मंदिर करीब 350 वर्ष पुराना होना चाहिये। इस मंदिर में धुप्या, ओर्डिया, दोशी, तलेसरा गौत्र के परिवार की बैठक है (दोशी में श्री भंवरलाल जी दोशी का परिवार है।)

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर निम्न लेख है :–

   ''संवत् 1732 वर्षे शाके 1597 प्रवर्तमानै मिति वैशाख सुदि 2 गुरौ .....''

2. मूल नायक के दाहिनी ओर श्री अभिनन्दन स्वामी की 15'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

3. मूलनायक के बाईं ओर मल्लिनाथ जी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख इतना ही है। ''श्री माल्लिनाथै नमौ''

उक्त प्रतिमा उत्तरमुखी थी और सभा मंडप में ही मंदिर बना हुआ था, लेकिन इन तीन वर्षों में उत्थापित् कर पुनः प्रतिष्ठित करायी है। अभी जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। अब प्रतिमाएँ पच्छिममुखी होकर एक ही वेदी पर है और प्रतिमा पर छोटे शिखर बने हुए है। प्रतिमाओं के दर्शन सड़क से ही किए जा सकते है।

उत्थापित धातु की चल प्रतिमा :–

1. चिन्तामणि पार्श्वनाथ जी की चौबीसी प्रतिमा 13'' ऊँची है। बीच में (105) है। इसके पृष्ठ भाग में निम्न लेख है :– ''पुत्र अशोक पुत्र वधु नीरूबेन सुधाबेन, सुरेखा बेन, युतेन स्व. श्रेय से क.प्र. शासन सम्राट श्री नेमि सूरीश्वरजी पट्टे विजयोदय सूरि पट्टे वि. नन्दन सूरिभि शा.स. पट्टे विज्ञान सूरिपट्टे कस्तुर सूरि तथा पट्टे चन्द्रोदय सूरि

अहमदाबाद साबरमति रामनगरे श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ चैत्यं वि.सं. 2032 मार्ग सुदि 3 शुक्रे मुनि अमरचन्द।

2. पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची बीच में (94) है। लेख है :– स्वस्ति शांतिनाथ विम्ब धांग घ्रावासि चन्दुभाई.... पुनमचन्देन, धर्मपत्नी हीरा बेन पुत्री मीनाक्षी मृदुला सहितेन समरथ बेन मातु पितु श्रेयर्से शासन् सम्राट श्री विजय नेमिसूरीश्वर जी पट्टे विजयोदय सूरि पट्टे वि. नन्दन सूरिभि शा.स. पट्टे वि. विज्ञानसूरि पट्टे वि. कस्तूर सूरि पट्टे वि. चन्द्रोदय सूरिभि अहमदाबाद साबरमति वि.सं. 2032 माघ सुदि 3 शुक्रे मुनि अमरचन्द ..... (..... मातु पितु श्रेयसे के लिखा है)।
3. सिद्धचक्र यंत्र (खड़ा स्तंभ) 6'' ऊँचा है।
4. श्री आदिनाथ जी की पंचतीर्थी प्रतिमा 5'' ऊँची है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है कि संवत् 1389 फागुण श्री अचलगच्छे श्री अमरसिंह झाला पु. कान्हा धात्री सहित पितया ..... श्री आदिनाथ विम्ब श्री श्री रामचन्द्र सूरि।
5. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 2'' ऊँची है। इस पर अस्पष्ट लेख है।
6. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 1.6'' ऊँची है और सिंहासन तक 4'' ऊँची है।
7. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है।
8. पद्मावती देवी की प्रतिमा 3'' ऊँची है तथा मस्तक पर सर्प का फण है।
9. तांबे का सर्वतो भद्र यंत्र जिसका आकार 6'' x 4'' है।
10. सिद्धचक्र यंत्र 6'' व्यास का गोलाकार है।
11. तांबे का विजय यंत्र 2'' x 2'' है।
12. तांबे का नवकार मन्त्र यंत्र 3'' ऊँचा है।
13. तांबे का ऋद्धिवृद्धि यंत्र जिसका आकार 2'' x 2'' है।
14. अष्ट मंगल यंत्र 6'' x 4'' आकार का है।

15–16. तांबे का सिद्धचक्र यंत्र 7'' व्यास का गोलाकार है।

17. जिनेश्वर भगवान की आकृति बना तांबे का पतरे का आकार 2'' x 2'' है।

सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाएँ एक आलिए में श्री मणिभद्रजी की प्रतिमा दक्षिण मुखी है और कोई लेख नहीं है। सभा मंडप व परिक्रमा भाग में केशरिया जी शंखेश्वर जी, शत्रुन्जय, ऋषभदेव की प्रथम देशना, नेमिनाथ भगवान की बारात व वैराग्य के चित्र लगे हैं, जो कुछ जमीन पर रखे हुए है। जीणोद्धार कार्य चल रहा है। इसकी देख–रेख के लिए ट्रस्ट बना हुआ है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का (चौमुखा जी) मंदिर
बड़ा बाजार, उदयपुर

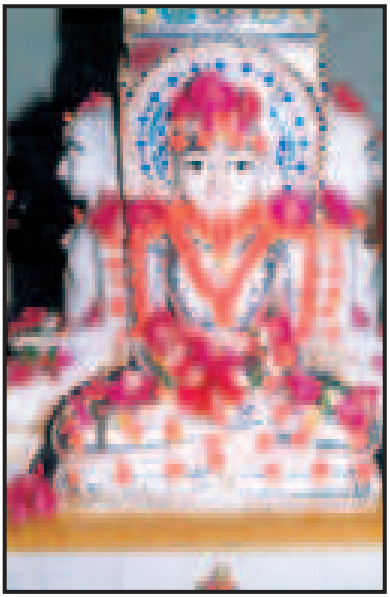

यह मंदिर बड़ा बाजार से धानमण्डी की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के बाईं ओर स्थित है।

यह मंदिर किस परिवार ने बनाया इसकी कोई जानकारी नहीं हो सकी। प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार यह मंदिर 280 वर्ष पुराना है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

चतुर्मुख प्रतिमा 33'' ऊँची वेदी के ऊपर 6'' ऊँची वेदी पर (जिसका आकार 14'' X 14'' है) विराजमान है, जिसका विवरण निम्न प्रकार से है :–

1. श्री आदेश्वर भगवान (दक्षिण मुख) की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है '' श्री सण्डेर गच्छे श्री सवत् 1781 वर्षे।
2. श्री आदेश्वर भगवान (पश्चिम मुखी) की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है कि श्री सण्डेर गच्छे श्री संवत् 1781 वर्षे वैशाख सुदि दशमी।
3. श्री आदेश्वर भगवान (उत्तर मुखी) की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है ''सण्डेर गच्छे श्री संवत् 1781 वर्षे वैशाख सुदि दशमि''
4. श्री आदेश्वर भगवान (पूर्व मुखी) 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है ''सण्डारे गच्छे श्री संवत 1781 वर्षे''

मूल नायक के पीछे एक कारनीस (उत्तरी दीवार पर) बनी हुई है, **जिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है** (बाएँ से दाहिनी ओर) :–

1. श्री सुमतिनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है 1– श्री सुमति श्री प्रणाई।
2. श्री विमलनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।
3. श्री ऋषभदेव भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं।
4. आदेश्वर भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख है :– ''सण्डेर गच्छे 1781 वर्षे''

5. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा कारनिस के ऊपर एक वेदी है, उस पर 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा (जिसके मस्तक सर्प का फण है) है। लेख है :– ''सण्डेर गच्छे संवत् 1781 वर्षे वैशाख शुक्ला 9 शनौ भट्टारक श्री विमल.....(आगे सीमेंट में दब गया है)''

6. मुनिसुव्रत स्वामी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

7. अजितनाथ भगवान की 11'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

8. श्री पद्मप्रभु स्वामी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

9. जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

10. **पूर्वी दीवार पर उत्तर पूर्व एक आलिए में** आचार्य की 21'' ऊँची मूर्ति श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1781 वर्षे वैशाख सुदि 9 शनौ सण्डेर गच्छे भट्टारक रामचन्द्र सूरि (?)... सोम सुन्दर सूरि''

    पश्चिमी दीवार में (उत्तर पश्चिम) एक आलिए में भी प्रतिमाएँ स्थापित है।

11. चक्रेश्वरी देवी की 5'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नही।

12. महावीर स्वामी की 15'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

13. चन्द्र प्रभु जी की 7'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र

1. चौबीस तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है कि :–

    पुत्र गजेन्द्र शान्तिलाल विनोद पुत्री पुष्पा मंजुला पुत्र वधू कैलाश शिला पौत्र जिनेश राजेन्द्र सादितेन स्व. पितु श्रेयसे भक्तिचन्द विश्योत्यदेशेण पं. पूज्य शासन सम्राट तपा. श्री विजय नेमिसूरीश्वर प्रशिष्य वि. चन्द्रोदयंसूरि अहमदाबाद– कस्तूरसूरिभि तत्पट्टे सं. 2032 मार्ग शु. 3 शुक्रे

2. पार्श्वनाथ भगवान (सहस्त्रफण) की प्रतिमा 5'' ऊँची है।

3. पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा 7'' ऊँची है।

    इसके पृष्ठ भाग में लेख है साधवी नन्दीवर्धना श्री की प्रेरणा से शान्ताबेन पुत्र प्रतापराय पुत्र नवीन भाई महुआवाला संवत् 2050 मार्ग विद 7 तिर्थौ रविवासरे राजनगरे मध्य पार्श्वनाथ बिंब करापितं प्रतिष्ठित च

4. धर्मनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है :– सम्बत् 1595 वर्षे माह वदि 2 बुधे देलभि वास्तव्य हुमड जातिय मुहड़ा श्री आ. श्रे. वीरपाल पुत्र श्रे मीस लभा मातर गौत्रे जीविणी पुत्र श्री चम्पाकेन भार्या चापलदे पुत्र सिंघराज तेजपाल पितृया श्री आशा पोपट लक्ष श्री लखंमादि

कुटुम्ब युतेन श्रेयार्थ श्री धर्मनाथ बिंब का प्रतिष्ठितं श्री हेम विमल सूरी पट्टे सौभाग हर्ष सूरिभि

5. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

''वि. नीति सूरीश्वर नमः प्रेरणा...साधवी बसंत श्री नमः शिष्या प्रज्ञपता श्री नमः.... श्री चुन्नीलाल आत्म श्रेयोर्थ प्रभा बेन.... लाल सुपुत्री चन्द्र बेन तरफ थी।''

6. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। इस पर लेख है :– प्रभा बेन प्रभुलाल दोशी संवत

7–9. इसी आलिए में शिव, पार्वती व बुद्ध की एक इंच ऊँची प्रतिमा है, जो व्यक्तिगत है।

10. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 5'' ऊँची है। दोनों ओर एक–एक जिनेश्वर भगवान की खड़ी प्राचीन प्रतिमा है।

11–12. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 6'' व 5'' व्यास का है।

13. अष्ट मंगल यंत्र, जिसका आकार 5'' x 4'' है।

14. नाकोड़ा भैरवजी – चाँदी के पतरे पर आकृति बनी हुई है।

इस मंदिर की देख–रेख वर्तमान में श्री मनोहरलाल जी मेहता कर रहे है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी तरफ के आलिए में श्याम पाषाण की गजानन जी की 4'' ऊँची मूर्ति है। इसी प्रकार बाईं ओर एक आलिए में गजानन जी की दो श्याम पाषाण की प्रतिमाएँ स्थापित है।

बाहरी सभा मंडप में शत्रुन्जय, गिरनार जी तीर्थ के पट्ट लगे हैं। इस मंदिर की देख–रेख ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर मोचीवाड़ा, उदयपुर

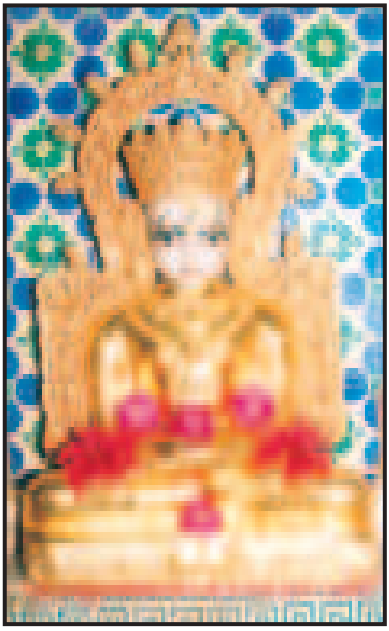

यह मंदिर घंटाघर से धानमण्डी जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे बाईं ओर मोचीवाड़ा के कोने पर स्थित है।

पार्श्वनाथ भगवान को सभी विघ्नों का हरण करने वाले भगवान कहा गया है। इसलिए मंदिर का नाम विघ्न हरण पार्श्वनाथ रखा गया है। किसी घटना विशेष के साथ जुड़ा होना नहीं पाया गया।

यह मंदिर जावरिया परिवार द्वारा बनाया गया है। इसलिये इसको जावरिया का मंदिर भी कहा जाता है। प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के आधार पर मंदिर का निर्माण 360 वर्ष पूर्व हुआ हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण प्रतिमा है। प्रतिमा पर लेख है :–

   श्री गणेश प्रशाद संवत् 1725 वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे त्रियोंदस्यां बुधवासरे उदयपुर नगरे सता जावरिया भार्या पवती जीवाग्रहणी पुत्र जगदी .....

2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री नमिनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– संवत् 1888 वर्षे शाके 1753 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 तपागच्छे श्री विजयदयासूरि आचार्य श्री विजय धर्मसूरि राज्ये जावरिया संखजी भार्या वीरूबाई पुत्र संचानसिंह निज श्रेयार्थ श्री .....विवेक सूरिभि..... विजयराज्ये.... विजय गाणिभि महाराणा श्री जगत्सींघ...विजयराज्ये....

3. इसके पास ही भगवान के दाहिनी ओर श्री मल्लिनाथ भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

4. श्री अनंत नाथ भगवान (मूलनायक के बाईं ओर) की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है कि :– संवत् 1888 वर्षे शाके 1753 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदि 9 तपागच्छे भट्टारक श्री विजयदयासूरि आचार्य श्री विजयधर्म सूरि राज्ये

उदयपुर वास्तव्य प्रागवाट् जातीय....शाखाया.....

5. इसके पास ही श्री शांतिनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा (उत्तरोमुखी) है। इस पर यह लेख है :–

   श्री शांतिनाथ बिंब कारितम्

   श्री गणेश प्रशादातु संवत् 1888 वर्षे ज्येष्ठ सुदी 13 उदयपुर वास्तव्य संखजी भार्या वीरूबाई तत्पुत्र मारिष

इस वेदी के नीचे की वेदी पर उत्थापित मूल नायक के दाहिनी ओर :–

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (जिसके मस्तक पर सर्प का छत्र है) 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– उदयपुर निवासी श्री सुरेन्द्रनाथसिंह कान्ता बाई पुत्र राजेश लवकुश मनीश जावरिया पुन्य कारितम् श्री पार्श्वनाथ बिंब

7. मूलनायक के बाईं ओर निचली वेदी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन स्पष्ट है। लेख है :– सवत् 2002 प्रागवाट् कुले उदयपुर निवासी सा चिमनसिंह अम्बाबाई पुत्र राजेन्द्र सुमित्रा पौत्री नितिका ज्योति श्री पार्श्वनाथ बिंब कारापितं।

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है।

   विघ्न हरण पार्श्वनाथ, उदयपुर, जावरिया जी का मंदिर

2. पार्श्वनाथ भगवान की पंच तीर्थी 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   स्वस्ति श्री महसाना नगरे सं. 2028 वैशाख सुदी 6 गुरुवारे सांरग लपुर निवासी सेठ मणीलाल डाया भाई सुपत्नी गजराबाई सुपुत्रों शशीकान्त रजनीकान्त श्री श्रेणिक कूमारे श्री पार्श्वनाथ पंचतीर्थी भरायातम्। तपागच्छे आ. श्री कैलाश सागर सूरीश्वर ने प्रतिष्ठा करी छे।

3. पार्श्वनाथ भगवान (मस्तक पर सर्प का फर्ण है) की 4'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर निम्न लेख है :–

   ''विघ्न हरण पार्श्वनाथ उदयपुर जावरिया जी का मंदिर''

5. सिद्धचक्र यंत्र गोलाकार 6'' व्यास का है। लेख है :–

   विघ्न हरण पार्श्वनाथ उदयपुर जावरिया जी का मंदिर

6. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 3'' व्यास का है। इस पर लेख है :– सुमित्रा जैन

निज मंदिर बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :–

1. गजाननजी की 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. **बाईं ओर के आलिए में** भैरवजी की 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

इस मंदिर में काँच की जड़ाई की हुई है तथा सभा मंडप को लोहे की जाली से बंद कर तीनों तरफ दरवाजे बने हुए है। दरवाजे से निकलकर परिक्रमा की जाती है। यह शिखरबंद मंदिर है।

निज मंदिर में ऊपर काँच से विघ्नहरण पार्श्वनाथ जी लिखा है।

इस मंदिर की देख–रेख विघ्नहरण पार्श्वनाथ समिति द्वारा की जाती है।

विशेष टिप्पणी :

प्रतिमा सं. 2 श्री नमिनाथ जी के अन्तिम पंक्ति में उत्कीर्ण महाराणा श्री जगत्सींघ है, लेकिन संवत् 1888 में महाराणा जवानसिंह जी थे।

❑❑❑

जीवन निर्वाह करने के लिए धन आवश्यक है।
जीवन निर्माण करने के लिए ज्ञान आवश्यक है।

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (बापना का मंदिर) नलवाया चौक, धानमण्डी, उदयपुर

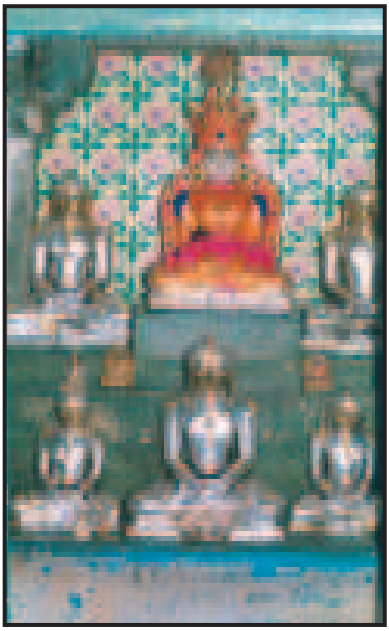

यह मंदिर देहली दरवाजा से धानमण्डी की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर नलवाया चौक में स्थित है।

300 वर्ष पुराना यह मंदिर बापना परिवार द्वारा बनाया गया। इसलिये इसको बापना का मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर शिखरबंद होकर विशाल जगह से घिरा हुआ है। बाहर दुकानें, चौक इत्यादि है।

इस मंदिर के निर्माण के बारे में एक शिलालेख मंदिर की उत्तरी दीवार में लगा हुआ है, जो निम्न प्रकार से है।

शिलालेख :–

''पं. णा'' ऊँ नमः सिद्धां '' का व्यम् '' देवेन्द्र वृंदशत वंदन मदि देवं विश्वाभि नन्दन मितं शत लोक सेवां आनंद नंम हरिचन्दन नन्दनं श्री श्री नाभि नन्द न जिनेन्द यहं हि वन्दे। सबद्धरफ मुनि कर विधु संख्या सुमिते सुमासि फाल्गी धबले तारे च पक्षे पंचम्यां चन्द्र कलितायां ।।2।। उदयपुर रात्रिधान नगरे शौर्योदार्य धैर्य गुण ललिताः जाय प्रताप भस्मां वृताति उदात्त रिपु तिमिशः ।।3।। वचन्द्र कलामल विलसत् सीसोद कुलाम्बराप्त लसदुग्याः श्री अरिसिंह तस्या योज्ञाता भुवि कीर्ति विख्याता ।।4।। सदपद विराजमाना श्री मद्भीमादि सिंह नामानः यशसा धव लित धरणि वल या नृप मौलि कोटिशः ।।5।। विलसत् कुमार पदवी विभ्राणौः नीतिशस्त्र रतचित्तैः श्रीमत् सुजानसिंह प्रतापैः प्रगत चरणाः ।।6।। न्याया नन्दित वसु धास्तेषां राज्ये सदा विजय माने श्री मत्श्वर तर गच्छे वृहत्तरे वसुमति विदितो ।।7।। श्री जिनदत्त मुनीन्दाः युग प्रधान सुरैः प्रणतवाद श्री मज्जिनादि कुशलाः कृत कुशलाः सेवक जनात्मक ।।8।। गितं विबुध समाजाः सदोवयाः सकल सूरि सुर राजा संज्ञज्ञिरे च तेषां पदाम्बुजो पासन भ्रमराः ।।9।। श्री जिनचन्द्र यतीन्द्राः बभूवुरूग्र प्रताप विस्ताराः तत्पट्ट कमल किरणैसरीकृतोदार चरणै। ।।10।। जंगम युग प्रधान श्रीमज्जिन हर्ष सूरिगण धारैः विधिना प्रतिष्ठितोडयं प्रासादो मादि देवानाम् ।।11।। धूलेवा नगरे शतानाभि नृपते समुर्जित पवन यः श्री भीमनरेन्द्र मप्र मन्तसि प्रस्थात्पत हो तवे कल्याण प्रद वाक्वरं रूचिकरने ज्योति एविर्भव दत्त सोयमिद्धागतः प्रथम तदेवाधिदेवः प्रभु ।।12।।

श्री सिद्धान्त सुपाठकाः गणिवरा त्रारियनित्योदयाः संवत् वा. रसाष्ट चन्द्र सुमिते मासे सिते फाल्गुने सोमेश्रेष्ट घडी पलासनः लोका दिक्याधिक पंचसु पुण्यो दयपुर मध्य साधन कृतं धर्माश्रमस्योद्यममं ।।13।। त्रिमुनिवसुधर आं फाल्गुने पंचमी वौ. बडमित घटिकायां कृष्ण पक्षे गुरौ व ऋषभ जिन सुधाम श्वाति लग्न कृतं हो। उदयपुरे एस्मिन् पा. कै स्तैः वरेण्यैः ।।14।। संवत् बास्त्र नाग चन्द्र समचे शुक्लौः सरान्ते मृगे मासे तेरस वासरे जगगुरु श्री आदिनाथ प्रभु आयातीय कृपा परो स्मिन् पुरे श्रेयस्तकः काम दो भूमा–मंगल मालिका सुषभ स्वामि प्रसादाश्रिये ।।15।। उदयपुर दिनेन्दौ भीमसिंह नरेन्द्र प्रवर गणि समुख्य पाठिक संनिधाय ऋषभ जिन गुरुभ्यां भूमि दानं हिताय इह पर भव पुण्यं सर्व्व सौख्य करोति ।।16।।श्री जेष्ट मल्ल जोरावरमल्ला भ्यां सदा दयालुभ्यां प्रभु भक्ताभ्यां कृत प्रतिष्ठोत्सव प्रमुदाः।।17।। श्री कीर्ति रत्न सूरि प्रशस्त शारवं भृतां गणिवर। चारित्रयोदयान्तं नां नाम्रा सुरगुरु पाठकानामच।18।। शिष्य श्री हंस मुनिना समुदाय उपदेशात् स्वस्ति श्री संघेन सुमच्च्यां प्रसाद कारितो रूचिरः।।19।। सूचधार गजधर गोरधन मासेल संभुः वड्वा वैरी शाल जिनालय प्रशस्त लिपि कृताय।। श्री स्तु।। कल्याण मस्तु।। भद्रं भूयात्।। श्रीः।।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूल नायक श्री ऋषभदेव (आदिनाथ) भगवान की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर नीचे के भाग में वस्त्र (पट्टा) बाद में खोदा गया प्रतीत होता है। इस पर कोई लेख व परिकर नहीं है।
2. मूलनायक के दाहिनी ओर 21'' ऊँची सप्त धातु की नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''संवत् 1525 चैत्र वदि 10 श्री नेमिनाथ बिम्ब साह साल्हा कारित श्री।''
3. मूलनायक के बाईं ओर 21'' ऊँची सप्त धातु की श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''गिरिपुरे श्री आदिनाथ बिंब सा. साल्हा कारितं''

   ये तीनों ही प्रतिमाएँ एक ही ऊँचाई की वेदी पर स्थापित है। इस वेदी के नीचे एक वेदी और बनी हुई है।

इस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मध्य में मूलनायक श्री कुंथुनाथ स्वामी की 21'' ऊँची सप्त धातु की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री कुंथुनाथ बिम्ब साल्हा भार्या सौहाणी सिरिआरे कारितम्''
2. मूल नायक के दाहिनी ओर 15'' ऊँची सप्त धातु की श्री अनन्तनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''साह मालाकेन भार्या माणिक दे निर्मित अनन्तनाथ बिंब।''
3. मूलनायक के बाईं ओर 15'' ऊँची सप्त धातु की श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

   ''साल्हा का सा. माला श्रुयोदा कुंथुनाथ बिम्ब प्र. तपा. श्री लक्ष्मी सागर सूरिभि''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. सिद्ध चक्र यंत्र 6'' ऊँचा है। इस पर लेख है :–

   ''वि.सं. 2043 जैठ सुद 6 शुभ मातर नगरे श्री सिद्ध चक्र यंत्र प्रतिष्ठितम् गच्छाचार्य श्री देवेन्द्र सागर सूरि शिष्य पन्यास श्री नरदेव सागरेणस्य शिष्य श्री चन्दुकीर्ति सा. सूरि का..... विजय सुशील सूरि आज्ञाकित श्री मनोज कुमार हरण द्वारा 1008 महा पूजन पूर्णाहुति निमित्तें सिंघवी श्री वारचन्द्र हुकमजी परिवार का महोत्सव सिवाणा सा. स्व. पुखराजी भगवान चन्द्र धारिवाल आत्म श्रेयार्थ श्रीमती मोहनीबाई तत्पुत्र गोतमकुमार हंसमुख जी दिनेश कुमार पत्नी दरवारे नामतीय शुभम्''

2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। कोई लेख नहीं है।

3. पंच धातु की कुंथुनाथ स्वामी की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   सं.1554 वर्षे माघ शु. 3 गुरौ उस. जातीय आदित्यनाग गौत्रे गांग जातीय सोयराला पु. ननाता भार्या. सा.नारींग दे पुत्र सामन्त पातासा पुत्र आसादि युतासां सु. श्री कुंथुनाथ वि. का. प्र. उ. क. कृ. सा.श्री देवगुप्त सुरिभि।

4. पंचधातु की पंचतीर्थी पद्म प्रभु जी की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''वि. सं. 1568 वर्षे वैसाख सुदि 5 गुरो श्री श्रीमाल् जातिय मुमोजा भार्या श्री वाल्वी सुत सुखरूपा भा. श्री रंगादनामासुंत सुवलका सहसकिरण प्रज्ञादि ऊँट व युवया श्री पद्भ प्रभु श्रेयार्थ कारितं प्रतिष्ठितं तपा वय श्री श्री श्री इन्द्रमदि सूरिभि।''

5. महावीर भगवान की 6'' ऊँची पंच धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सं. 1648 (1649) व.मा.व. रवि तो. उसवाल जातीय श्रादि श्री महावीर कारितं प्रतिष्ठितम् तपागच्छे श्री हीरविजय सूरिभि''

6. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

7. पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, जिसके मस्तक पर सर्प के फण का छत्र है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर :–

अधिष्ठाता देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। देवी के चार हाथ है, यह प्रतिमा हाथी पर विराजमान है। इस पर लेख है :–

''संवत् 1891 व. शा. 1756 मिगसुदि 10 रवि वासरे उसवाल जातीय बापणा गौत्रे जोरावरमल कारापितम् प्रतिष्ठितम् श्री खरतरगच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभि''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर के आलिए में :–

गौमुख यक्ष की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''सं. 1891 शा. 1757 वै. सुदी 3 भृगुवासरे श्री उदयपुर नगरे श्री ऋषभदेव जी ये अधिष्ठायक गौमुख मूर्ति करापिता बापणा सेठ जोरावरमल खरतरगच्छे श्री जिन हर्ष सुरिभि प्रतिष्ठितमं।''

सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर एक देवरी में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. एक आचार्य की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। दर्शनार्थी इस प्रतिमा को शांति विजय जी की मानते है। कहा जाता है कि यह प्रतिमा चमत्कारी है तथा कलात्मक व तेजस्वी है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. मध्य में आचार्य श्री शिवसुन्दर सूरि की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

   ''संवत् 1752 वर्षे का शु. 13 व.प्र.प्र.भं. श्री ज्ञान सुन्दर सूरिभि .....प्रतिष्ठितम्।''

   प्रतिमा के पीछे भी लेख है, जिसका कुछ भाग ही पढ़ा जा सकता है, जो यह है :– भट्टारक श्री देव सुन्दर तत्पट्टे पूज्य भट्टारक शिवसुन्दर सूरिभि तत्पट्टे पूज्य श्री ज्ञान सुन्दर सूरिभि....श्री शिव सुन्दर सूरि.... निमित्त श्री गुरु बिंब
3. मध्य प्रतिमा के बाईं ओर आचार्य श्री देवसुन्दर सूरिजी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''संवत् 1752 वर्षे फाल्गुने मासे कृष्ण पक्षे तृतीयायां तिथौ भोमवासरै पूज्य भट्टारक श्री....(देव) सुन्दर सूरि बिंब साहब.....''प्रतिमा के पीछे भी लेख लिखा है, लेकिन सीमेंट के कारण अस्पष्ट है।

सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर (दक्षिणी दीवार में) :–

एक देवरी में निम्न पादुकाएँ स्थापित हैं। इसमें दो छोटी व एक बड़ी कुल तीन वेदियाँ है।

बड़ी वेदी का आकार 2' x 2' है और छोटी वेदियों का आकार क्रमशः 7'' x 6'' व 7'' x 5'' है। छोटी आकार की वेदी का विवरण निम्न प्रकार है। बाईं वेदी पर बीच में चक्र व पादुकाएँ है। इस पर लेख है :–

''सिद्ध संवत् 1878 वि. शाके 1743 आषाढ़ सुदि 5 गुरौ जंगम युग प्रधान श्री जिनदत्त पादुका करापिता समस्त श्री संघेन प्र.भ. श्री जिन हर्ष सूरि।'' दाहिनी वेदी पर भी बीच में चक्र है व पादुकाएँ है। ये पादुकाएँ श्री जिनरतन सूरि की है लेकिन लेख पढ़ने में नहीं आता।

बड़ी वेदी पर दो चक्र हैं, तीन पादुकाएँ और स्वस्तिक का चिह्न है। वेदी पर लेख है :–

''संवत 1878 वि. शाके 1743 प्रवर्तमाने कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थो तिर्थौ ....मुनि करापितं श्री उदयपुर नगरे'' आचार्य कीर्ति रत्न सूरि पादुका गणि वराणा अपि च उपाध्याय श्री चारि गणिना पादुका प्रतिष्ठितम्। तीसरी पादुका किसकी है, स्पष्ट नहीं है।

सभा मंडप में दाक्षिणी दीवार पर :–

गिरनारजी तीर्थ शभुन्जय तीर्थ सम्मेत शिखर जी तीर्थ आबू तीर्थ के पट्ट लगे है। इसी प्रकार उत्तरी दीवार पर अष्टापद तीर्थ व नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ के पट्ट लगे हुए है।

इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर महासभा हाथीपोल द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान (चौमुखा जी) का मंदिर
देहली गेट के अंदर, उदयपुर

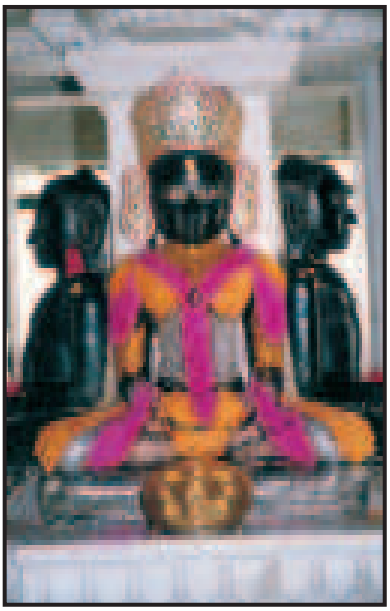

यह मंदिर देहली गेट के अंदर धानमण्डी जाते समय दाहिनी ओर स्थित है। यह मंदिर खमेसरा परिवार द्वारा बनाया गया है। इसको खमेसरा की थोब भी कहा जाता है।

मंदिर के मुख्य दरवाजे के ऊपर जैन श्वेताम्बर चौमुखा जी का मंदिर वि. 1676 उत्कीर्ण है। इससे यह स्पष्ट होता है कि :–

1. इस मंदिर का खनन मुहूर्त वि.सं. 1676 में हुआ है।

2. उपाश्रय के प्रस्ताव रजिस्टर के अनुसार महाराणा राजसिंह के समय में निर्माण व प्रतिष्ठा हुई।

3. वि. 1676 नहीं होकर शक सं. 1676 होगा, जो प्रतिमा के प्रतिष्ठा का समय वि.सं. 1811 शाके 1676 उत्कीर्ण है। इससे प्रतिमा के प्रतिष्ठा का समय व दरवाजे पर उत्कीर्ण लेख से मेल होता है।

यह मंदिर शिखर बंद, कलात्मक रूप से बना है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. चौमुखा जी (चतुर्मुख) आदेश्वर भगवान की 23'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है और चारों दिशाओं में मुख किए हुए है। इन प्रतिमाओं पर लेख है।

पूर्वामुख प्रतिमा पर लेख है :–

''सुताचन्द नाथजी संवत् 1811 वर्षे शाके 1676 प्रवर्तमाने ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ –

दक्षिणी मुख प्रतिमा पर लेख है :–

''बिम्बं प्रतिष्ठितम् श्रेयसे''

पश्चिम की ओर मुख की प्रतिमा पर लेख है :–

''साह श्री मगौतीदास जी साह श्री दौलतराम जी चि. श्री रघुनाथ जी खमेसरा संवत्

1811 वर्षो ज्येष्ठ सुदि 10 शुक्रवारे हस्त नक्षत्रे श्री उदयपुर नगरे सिसोदिया वंशे .....''

उत्तर की ओर मुख की प्रतिमा पर लेख है :–

''साह श्री सजानन्द जी तत्पुत्र इन्द्रमाण जी राजमाण जी'' ये चारों प्रतिमा 3 फीट ऊँची वेदी पर बिराजमान है और वेदी 2 फुट 10'' वर्गाकार बनी हुई है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. 6'' ऊँची सर्व धातु की पंच तिर्थी प्रतिमा मुनिसुव्रत स्वामी की है, जिस पर लेख है :–

   ''संवत् 1627 वैशाख विद 3 नवलखा गौत्रे रामचन्द सी भार्या पदमसी मुहाण सी पदम् भार्या जयवती मुनि सुव्रत स्वामी बिम्ब् करावित''

2. 6'' ऊँची सर्वधातु की पंचतिर्थी प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामी की है, जिस पर लेख है :–

   ''संवत् 1653'' वैशाख मासे एकम ओसवाल जातीय खाटेड गौत्रे शाह लछमण भार्या स्वेतमदे पुत्र पारस परवन प्रमुख कुटुम्ब घातनाश्व श्री चन्द्रप्रभु बिम्ब कारितं प्रतिष्ठितं आस्तु–''

3. 3'' व्यास का नवपद सिद्ध चक्र यंत्र है। इस पर लेख है :–

   ''स्वस्ति श्री संवत् 2052 कार्तिक विद 6 सुपार्श्व जिन मंदिर पालनपुर निवासी कमलाबेन चंदु लाल परिवारेण नवपद यंत्रं कारितं प्रति पर्व विशाल सेन सूरीश्वर''

   यह तीनों उत्थापित प्रतिमाएँ व यंत्र नाहर परिवार द्वारा भेट किए गए है।

   निज मंदिर के चारो ओर चार दरवाजे हैं।

   पूर्वी दरवाजे के बाहर, अर्थात् निज मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर पार्श्व यक्ष की प्रतिमा व बाईं ओर भैरवजी की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

   दक्षिण की ओर आलिए में निज मंदिर से बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर साधारण पाषाण की 15'' ऊँची देवी की प्रतिमा है। इसी प्रकार बाएँ पार्श्व यक्ष की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

   निज मंदिर से बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर देवी 15'' ऊँची, बाएं पार्श्व यक्ष की 15'' ऊँची प्रतिमा है।

   उत्तर की ओर के आलिए में निज मंदिर से बाहर निकलते हुए दाहिनी ओर देवी की 15'' ऊँची, बाईं ओर पार्श्व यक्ष जी की प्रतिमा है।

   तीन दरवाजे बंद रहते है। केवल पूर्वामुख दरवाजा खुला रहता है।

   बाहरी सभा मंडप का ऊपरी भाग 18 स्तंभ पर गोलाकार गुम्बजनुमा बना है। मंदिर के क्षेत्र को ऊपर जाली से बंद किया गया है। बाहरी दरवाजों के ऊपर काँच में जड़ा एक कलश आलिए में स्थित है।

मंदिर के चारों ओर बस्ती है तथा मंदिर के उत्तर पश्चिम कोने में 6 स्तंभ की श्वेत पाषाण की बनी हुई एक छतरी है। मध्य में एक आलिए में तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा खुदी है, जो अस्पष्ट है।

नीचे तीर्थंकर भगवान की पादुकाएँ हैं, जो बहुत जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है, लेख अस्पष्ट है, इसकी पूजा नहीं हो रही है।

एक छतरी दक्षिणी–पूर्वी दिशा में मंदिर क्षेत्र के बाहर स्थित है। यह छतरी पक्की व संगमरमर की बनी हुई है। छतरी के बीच में एक संगमरमर पत्थर की कमलाकार वेदी बनी हुई है, जिसके ऊपर चार पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। इस पर लेख अस्पष्ट है। चरण पादुका किसकी है, यह ज्ञात नहीं होता। प्रस्ताव रजिस्टर के अनुसार यहाँ के गच्छ के गुरु या यति की हो सकती है।

इस मंदिर के पास शहर कोट से लगी हुई जमीन, जो दोनों छतरी तक लगी हुई थी, वे पिचोलिया ब्राह्मण से खरीदी थी, जिसका पट्टा महाराणा भीम सिंह जी ने सं. 1859 माह विद 12 को जारी किया। बाद में शहर कोट से लगी हुई जमीन को सं. 1913 में मेवाड़ सरकार ने 12 बिस्वा खालसा की और उसके एवज में 6/– रुपया मंदिर के लिये हर वर्ष दिए जाने का फैसला किया, लेकिन विजयगच्छ के अनुयायियों ने राशि कम होने से स्वीकार नहीं की।

इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर चतराम के उपाश्रय ट्रस्ट द्वारा जाती है।

❑❑❑

श्री नेमिनाथ जी का मंदिर (भट्टारक की थोब) देहली गेट के बाहर, उदयपुर

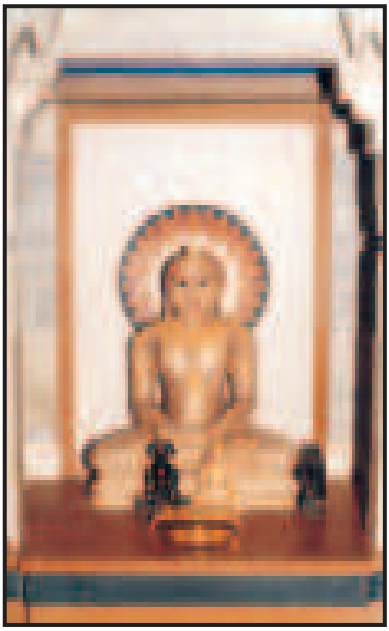

यह मंदिर देहली दरवाजा से शास्त्री सर्कल जाने वाली मुख्य सड़क के बाईं ओर स्थित यह मंदिर बनावट के आधार पर काफी पुराना है, लेकिन मंदिर में कोई शिला लेख नहीं है और प्रतिमाओं पर भी कोई समय काल उत्कीर्ण नहीं है। इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि मंदिर कितना पुराना है।

निज मंदिर के पश्चिम की ओर पहले बावड़ी थी, लेकिन वह अब नहीं है। इस जगह अब महावीर स्वामी की गुम्बजनुमा बड़ी देवरी बनी हुई है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री नेमिनाथ स्वामी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। यह प्रतिमा अतिप्राचीन, बहुत सुन्दर व आकर्षक है। इस पर कोई लांछन नहीं है, लेकिन लेख के आधार पर यह प्रतिमा नेमिनाथ स्वामी की है। लेख इस प्रकार है :–

   ''सा.पा.स. श्री नेमीनाथ''

   इस प्रतिमा के साथ कोई परिकर नहीं है।

2. मूलनायक के दाहिनी ओर 11'' ऊँची श्याम पाषाण की ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है। लांछन स्पष्ट है।

3. मूलनायक के बाईं ओर 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. जिनेश्वर भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की खड़ी प्रतिमा है। परिकर के दोनों ओर एक–एक जिनेश्वर भगवान काउस्सग्ग मुद्रा में खड़े है। कोई लेख नहीं है। यह प्रतिमा भी काफी प्राचीन है, सम्भवतया संप्रति राजा के समय अर्थात 2200 वर्ष पुरानी है। यह प्रतिमा मंदिर के उत्तरी आलिए में विराजमान है।

2. मणिभद्र जी की 5'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

3. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा हैं। कोई लांछन व लेख नहीं है।

4. धातु की 12'' ऊँची चौबीस तीर्थी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''पार्श्वनाथ गढ़ सिवाणा (राज.) श्री भगवान चन्द्र सुत भीमराज श्राघ्येन जिन धर्म पत्नि सुखीदेवी श्रेयसे आ.प्र. शासन सम्राट तपा. श्री नेमिविज्ञान सूरीश्वर पट्टे श्री चन्द्रोदय सूरिभि सूर्योदेव सूरि, अशोकदेव सूरि जयदेव सूरिभि सत्याधिक साधु साध्वी युते वि.सं. 2044 मार्ग शु. 4 बुधे अहमदाबाद गिरधर नगरे श्री आदिनाथ जैन चै. मुनि कल्याणचन्द्र सूरिभि''

5. देवी की प्रतिमा (सम्भवतया पदमावती देवी की, जो ऊपर से खण्डित है) 4'' ऊँची है। इसके पृष्ट भाग में लेख है :–

   ''संवत् 1535 वर्षे महा सुदी 5 भ. लाला————गोपा————अगेड़ा————गौत्रे————''

6. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 6'' x 3'' है। उस पर कोई लेख नहीं है।

निज मंदिर के बाहर सभा मंडप में बाई ओर के आलिए में भैरव जी की साधारण 9'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है। **निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर** सरस्वती देवी की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की कलात्मक प्रतिमा है। परिक्रमा करते हुए पीछे की ओर पूर्वी दीवार के एक आलिए में पार्श्वयक्ष की प्रतिमा है।

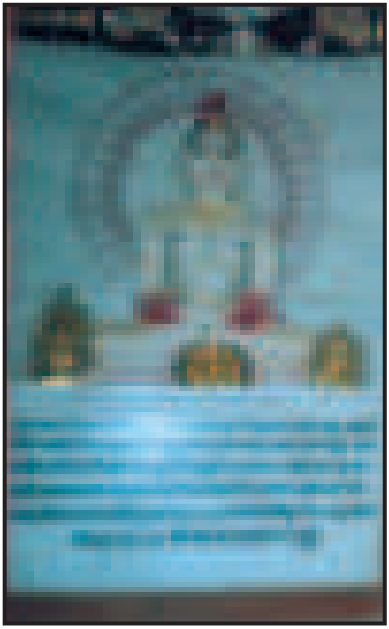

सभा मंडप की उत्तरी दीवार पर सम्मेत शिखर जी, भैरव जी के आलिए के ऊपरी भाग में पार्श्वनाथ भगवान, आदेश्वर भगवान, दक्षिणी दीवार पर शत्रुन्जय तीर्थ व पश्चिम दीवार पर नागेश्वर पार्श्वनाथ व शांतिनाथ भगवान के पट्ट लगे हैं।

महावीर भगवान की देवरी

मंदिर के सामने की ओर (पश्चिम दिशा में) एक बड़ी देवरी बनी हुई है, जिसमें श्री महावीर भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख (पबासन पर) है :– वि.सं. 2040 वैशाख शु. 10 गुरौ श्री डूँगरपुर नगरे श्री महावीर बिंब .प्र.आ. देवेन्द्र सागर सूरिभि आ. चिदानन्द सूरि कारापित पं. च उदयपुर रोशनलाल (चतुर) पुत्र मनोहरलाल, पारसचन्द्र, प्रकाशमल प्रभु प्रतिष्ठतम्''

वेदी पर लेख है कि :–

''इस जल मंदिर का निर्माण स्व. सेठ श्रीमान् रोशनलाल जी उनकी धर्मपत्नी श्री चन्द्राबाई के सुपुत्र मनोहरलाल जी चतुर एवं उनकी धर्मपत्नी श्री तीजकुँवर बाई ने कराया – प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाचार्य श्री जिन कान्तिसागर सूरीश्वर जी म.सा. के कर कमलों द्वारा सं. 2041 मार्ग शीर्ष कृष्णा 7 गुरुवार ता. 15 –11–1984 को सानन्द सम्पन्न हुई।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. पंच धातु की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। यह प्रतिमा अति प्राचीन है, इसके पृष्ठ व अग्र भाग में अपठनीय लेख हैं। पीछे से दो जगह से खंडित होने से जालन लगी है।
2. जिनेश्वर भगवान की (परिकर सहित) 5'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। जिनेश्वर भगवान के दोनों ओर खड़ी मूर्ति है। पीछे से जालन लगी हुई है।
3. सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का ऊँचा पीतल धातु का है। इस पर निम्न लेख है :–

   ''स्वस्ति श्री सिद्व चक्र यंत्र बिंब मुनि रघुतिलक विजयोपदेशेन श्री शकुन्तला बेन तीन परिवारान कॉ. प्र. शासन सम्राट तपा. आ. श्री विजय नेमि विज्ञान कस्तूर सूरि पट्टे श्री चन्द्रोदय सूरि श्री सूर्योदय सूरि अशोक चन्द्र सूरि जयचन्द्र सूरि वि.सं. 2044 मार्ग शु. 4 बुध अहमदाबाद गिरधर नगरें मुनि. कल्याण चन्द्र सूरिभि''

   निज मंदिर से बाहर निकलते समय दोनों ओर के आलिए में दादा जिनदत्त सूरिजी व जिन कुशलसूरि जी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

   यह मंदिर **भट्टारक की थोब** कहलाता है, यहाँ पर भट्टारक रहते थे और छतरियाँ व चरण पादुकाएँ स्थापित थी, जो अब खंडित हो गयी है। यति जी का प्रभाव बहुत ज्यादा था, महाराणा की ओर से उनका ख्याल रखा जाता था। कहा जाता है कि इस मंदिर के नाम बहुत जमीन भी थी। लेकिन अब कब्जा अन्य व्यक्तियों का है।

   श्री नेमिनाथ भगवान के मंदिर के बाहरी दरवाजे के बाईं ओर नेमिनाथ भगवान के दीक्षा स्थल गिरनारजी व दाहिनी ओर नेमिनाथ भगवान की बरात व वैराग्य का चित्र और दरवाजे के ऊपर समवोसरण चित्र बने हुए हैं। इसकी देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, थोब की बाड़ी देहली गेट बाहर, उदयपुर

यह मंदिर देहली गेट से आयड़ की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे दाहिनी ओर स्थित है।

यह मंदिर श्री शीतलनाथ जी महाराज, घंटाघर,उदयपुर कमेटी के अधीन है। इस मंदिर के आस पास की जमीन भी इसी वाड़ी से सम्बन्धित है।

यह मंदिर जो कुछ वर्षो पहले था, वह आज नहीं है। यह मंदिर छतरीनुमा बना था और चारों तरफ करीब 5–6 छतरियाँ इसी समुदाय के यतियों की रही होगी। उसमें पादुकाएँ स्थापित थी। लेकिन अब करीब–करीब सब उत्थापित कर दी गयी हैं।

यह अवश्य है कि जो पाषाण की प्रतिमाएँ या जिनेश्वर भगवान की चरण पादुकाएँ थी, उन्हें पुनः इसी मंदिर में (जो नया बना) है, स्थापित करायी गयी है। पूर्व में स्थापित पाषाण की प्रतिमाओं के बारे में जानकारी इस प्रकार है :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव जी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की और मुकुट सहित 17'' ऊँची है। इस पर लेख था, जो कि जीर्णोद्धार के समय हटा दिया गया है। यह प्रतिमा प्राचीन है, जिस पर लेख इस प्रकार था :– ''ऊँ नमः स्वस्ति श्री विकमार्क समयात् संवत् 1949 शालिवाहन शाके 1813 प्रवर्तमान् मासोतम मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ 10 चन्द्रवासरे श्री शीतलनाथ जी महाराज थोब की बाड़ी मध्ये श्री ऋषभदेव जिनालय समस्त संघेन करापितम् श्रीमत्पागच्छे महाराज सकल भट्टारक शिरोमणि जगम युग प्रधान भट्टारक श्री 108 श्री विजयराज सूरीश्वरजी तत् आदेशात् पन्यास नेमकुशल गणिभि प्रतिष्ठितम् उदयपुर वास्तव्य महाराणा श्री फतहसिंहजी विजय राज्ये सूत्रधार देवा कारितम् ।। श्री रस्तु ।। कल्याण मस्तु ।।''
2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा, जिसके मस्तक पर सर्प के फण का छत्र है। लेख इस प्रकार है :– ''संवत् 1699 श्री मदेसा मार्या सुजागदे श्री पार्श्वनाथ बिम्बं''

3. इसके पास ही (अर्थात बाईं ओर) श्री सुमति नाथ जी की 12'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है, लांछन स्पष्ट है। लेकिन लेख नहीं है।

4. मूल नायक के बाईं ओर जिनेश्वर भगवान की 9'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर न तो कोई लेख है और न ही कोई लांछन स्पष्ट दिखने में आता है, लेकिन वर्तमान मे श्री संघ द्वारा दीवार पर श्री धर्मनाथ स्वामी लिखवाया गया है।

5. इसके पास ही शांतिनाथ भगवान की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लांछन दिखाई देता है। इस पर केवल निम्न लेख ही पढ़ने में आता है :–

   ''संवत् 1753 वर्षे जेष्ठ सुदि 10 (गुरौ)''

   उक्त सभी प्रतिमाएँ इसी क्रम में पुनः वेदी पर स्थापित कराई गई हैं तथा एक ही वेदी पर स्थापित हैं। ऊँची वेदी की दीवार में एक आलिए में (नीचे की ओर) देवी की प्रतिमा स्थापित है।

6. निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में सुमतिनाथ भगवान की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख निम्न है (अस्पष्ट) :–

   ''सुमतिनाथ बिंब धनला निवासी दशला सुखी वर्ण तपा गच्छे श्री नेमिसूरि अमृतसूरि की निश्रा में है ,चन्द्रसूरि गणि सलुम्बर नगरे 14 रविवार।''

7. प्रवेश करते समय बाएँ एक आलिए में श्री विमलनाथ भगवान की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख इस प्रकार है (अस्पष्ट है) :–

   ''धनला निवासी दशला नन्दा बाई पन्नालाल तपगच्छे श्री नेमिसूरि, अमृतसूरि की निश्रा में चन्द्र सूरि सलुम्बर नगरे मुनि लाल वि.सं. 2038 माह शुक्ला''

तांबे के यंत्र सप्त धातु, पंच धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. श्री धर्मनाथ भगवान की पंचतीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है। लेख यह है :– ''सं. 1527 माघ सुदि लक्षमण भा. लखमादे जावडे वला करा प्रतिष्ठितम् चन्द्रशेखर सूरीश्वर पट्टे लक्ष्मीसागर सूरि''

2. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है (सम्भवतया पार्श्वनाथ की है।) लेख अस्पष्ट है, पढ़ने में नहीं आता है।

3. सिद्व चक्र यंत्र 5'' वर्गाकार का है।

4. ऋषि मंडल यंत्र 9'' व्यास का है। यह यंत्र तांबे का है।

5. तांबे का ऋषि मंडल यंत्र जिसका आकार 7'' x 7'' है।

6. अष्ट मंगल यंत्र 5'' x 3'' के आकार का है।

7. पार्श्वनाथ भगवान की (फण सहित) 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितम् श्री जितेन्द्र सूरिभि सं. 2030 वेशाख मास सु. 6 तिथों''

8. चौबीसी तीर्थो श्री महावीर स्वामी की 13'' ऊँची प्रतिमा है। जिस पर लेख है कि :– ''वि.सं. 2040 माघ कृष्णा प्रतिपदा श्री महावीर स्वामी बिंब श्री चन्दनमल जी भगवान चन्द्र जी धारीवाल तपगच्छे आचार्य श्रीमद् विजय सोमचन्द्र सूरीश्वर की निश्रा में प्रतिष्ठा कारिता।''

निज मंदिर से बाहर निकलते हुये दाहिनी ओर एक आलिए में मणिभ्रद जी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। कोई लेख नहीं है।

निज मंदिर से बाहर निकलते हुए बाईं ओर चक्रेश्वरी देवी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। लेख अस्पष्ट है।

केवल वीर. सं. 2492 ही पढ़ने में आता है।

परिक्रमा भाग की ओर जाते समय उत्तरी दीवार पर एक सभा मंडप में एक आलिए में गौमुख यक्ष की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लेख है :–

''गोमुख प्रतिष्ठितम् तपागच्छ आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिभिः सुशील, शीला, बांटिया पुत्र विशाल ,हर्ष आशीष (लक्की), ममता पौत्र–पौत्री सिद्वि बांटिया परिवार आषाढ़ कृष्ण 1 वि.सं. 2060''।

परिक्रमा की ओर जाने पर पूर्वी दीवार पर श्वेत पाषाण का सिद्धचक्र यंत्र बना है। इसके निचे 20 तीर्थंकरों की पादुकाएँ (सम्मेद शिखर जी) स्थापित है। इसकी वेदी के चारों ओर निम्न लेख है :–

''संवत् 1848 वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादशी तिथौ शनेः महाराणा भीमसिंह जी विजय राज्ये श्री उदयपुर वास्तव्य उपकेश जातीय लघुशाखाया मूहता ईश्वरदास जी –''

इसके आगे जिनेश्वर भगवान (तीर्थंकर भगवान) का जन्म कल्याणक पट्ट बना हुआ है। इसके आगे इसी दीवार (पूर्वी दीवार) में देवरीनुमा आलिए में **ऋषिमंडल यंत्र** श्वेत पाषाण का बना हुआ है। इसके नीचे पार्श्वनाथ भगवान की चरण पादुकाएँ श्वेत पाषाण की स्थापित है। वेदी के किनारे पर लेख है :– ''संवत् 1850 वर्षे ज्येष्ठ सूदि 14 गुरौ उपकेश जातीय वृद्धि शाखाया दोषी शभुदास जी पुत्र शिवलाल जी अम्बादत्त येन श्री गोडी पार्श्वनाथ पादुका करापितम् श्री विजय जिनेन्द्र सूरिभि आदेशात् पन्यास ऋषभ विजय गणिभि।'' (आगे का लेख पढ़ा नहीं जा सका)

इसके आगे दक्षिणी दीवार पर श्री राणकपुर तीर्थ आबू तीर्थ शंखेश्वरजी तीर्थ के पट्ट बने हुए है। परिक्रमा से बाहर निकलते हुए दक्षिणी दीवार पर एक आलिए में पार्श्वनाथ भगवान की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितम् आचार्य प्रेम भुवन भानु शिष्य प्रशिष्य गच्छाः आचार्य

जयघोष सूरि जितेन्द्र सूरि कुल चन्द्र सूरि कारितं च भूपालपुरा उदयपुर नि. दयालसिंह भार्या सोहन देवी पुत्र–पौत्रादि नरेन्द्र, प्रवीण, सुनीता कोठारी की परिवारेण वि.सं. 2058 का फाल्गुन कृष्णा 13 दिनांक 11–3–2002 आयड़ तीर्थे। इसके आगे दक्षिणी दीवार पर ही गिरनार जी, शंत्रुज्य तीर्थ, सम्मेत शिखर जी तीर्थ के पट्ट बने है।

इसके आगे इसी दीवार पर एक आलिए में पद्मावती माता की 20'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। मस्तक पर विराजीत जिनेश्वर भगवान सहित 23'' ऊँची है। लेख यह है :– श्री पद्मावती देवी बिंब, श्री जितेन्द्र सूरिभिः, श्री कन्हैयालाल धर्मपत्नी अमृत बेन दोषी, परिवारेण सलूम्बर वाला आषाढ़ शु.।''

इसके ठीक सामने उत्तरी दीवार पर एक आलिए में नाकोड़ा भैरवजी की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा हैं।

लेख यह है :– ''श्री नाकोड़ा भैरवः प्रतिष्ठितः तपागच्छ आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिभिः स्वर्गीय लालचन्द्र जी धर्मपत्नी कंचनदेवी मेहता तत्पुत्र मोतीसिंह मंजु पोत्र पौत्री।''

इसके आगे इसी दीवार पर अष्टापद तीर्थ, नन्दीश्वर दीप के पट्ट बने हुए हैं। इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ थोब की वाड़ी उदयपुर द्वारा की जाती है।

उक्त प्रकार से मंदिर कोई ज्यादा पुराना नहीं है। यह अवश्य है कि निर्माण काल 110 साल पुराना हैं व छतरियाँ 200 साल पुरानी है तथा शिलालेख वर्तमान में हटा दिया है।

वर्तमान में मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया गया। इसका लेख उपाश्रय के बाहर की दीवार पर मंदिर के दक्षिण की ओर लिखा हुआ है, जो निम्न है :–

''श्री जैन श्वे.मू.पू. श्री संघ'' प्रतिष्ठा प्रशस्ति

मेदपाटे उदयपुरस्य प्रमुख नगरे थोब की बाड़ी मध्य आमूल चूल जीर्णो द्धार जिनालये प्राचीन श्री आदिनाथादि जिन बिंबानि श्री नाकोड़ा भैरव गौमुख यक्ष शासन देव देवी प्रतिमाश्च प्रतिष्ठितानि श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघेन महोत्सव पूर्वक तपागच्छे आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वर पट्टे परमपरालंकार सिद्वान्त महोदधि श्री आचार्य प्रेम सूरीश्वर शिष्य मेवाड देशोद्धारक सयम, तप, त्याग तपा आ. जितेन्द्र –
सूरिभि स्व शिष्य प्रशिष्य सहित साध्वी पन्चदश सहितेश्व वि.सं. 2060 आषाढ़ शु. एकम् दिनांक 15–6–2002

इस आलेख के साथ–साथ पुराना शिलालेख भी साथ में रखना चाहिए।

❑❑❑

श्री सम्भवनाथ स्वामी का मंदिर, कालका माता रोड गणेशनगर, पहाड़ा, उदयपुर

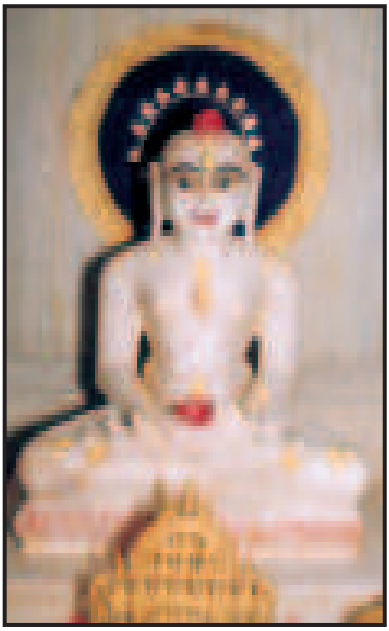

यह मंदिर उदयपुर के देहली गेट से मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ओर जाने वाली सड़क पर विश्वविद्यालय परिसर के पूर्व बाईं ओर कालका माता रोड के आखिरी किनारे के पूर्व बाईं ओर एक गली में स्थित है।

यह मंदिर गुम्बज बंद है और मंदिर निर्माण के लिये श्री बसन्त कुमार सरूपरिया परिवार ने सन् 1994 में 2400 वर्ग फीट का भूखण्ड भेंट किया। इसी वर्ष खात मुहूर्त भी तपा. आ. श्री प्रेम सूरीश्वर द्वारा किया गया। मंदिर निर्माण व प्रतिष्ठा संबंधी लेख मंदिर में निम्न प्रकार है :– स्वस्ति श्री राजस्थानन्तर्गत मेदपादे उदयपुर नगरे पहाड़ाया गणेशनगरे सरूपरिया गौत्रीय बसन्त कुमार जी पिता स्व. कल्याण मल जी पुत्र अशोक कुमार जी मंगल कुमार जी आजादकुमारजी महावीर कुमार जी पौत्र मयंक मधुर आशीष अंकित गौरव निलेश प्रदत भूमौ अनेक जैन संघ प्रदत्त आर्थिक सहयोग नव निर्मित जिनालय श्री सम्भवनाथ आदि जिनानां प्रतिष्ठिा कारापिता महा महोत्सव पूर्वक तपा गच्छीय कर्म साहित्य निष्णात् आ. प्रेम सूरीश्वर पट्ट धर वर्द्धमान भुवनभानु सूरीश्वर शिष्य मेवाड़ देशोद्धारक आ जितेन्द सूरीश्वरै स्व. शिष्य प्रशिष्य सहितै चतुर्विद्ध संघ सहितैच्च वि.स. 2055 वैशाख शुक्ला सप्तभ्यां शनिवासरे शुभं भवतु।''

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री सम्भवनाथ भगवान (मूलनायक) की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''श्री सम्भवनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिःपिण्डवाडा वास्तव्य् वीरचन्द्र जी पुत्र पुखराज भार्या गुणी बेन फारितम्।''
2. श्री वासु पूज्य स्वामी (मूलनायक के दाहिनी ओर) की 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

   ''श्री वासुपूज्य जिन बिंब भद्रंकर नगरे नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थे प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवनभानु सूरीश्वर शिष्य आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच पिण्डवाड़ा

वास्तव्य कान्ति बेन इन्द्रमल पुत्र शेलेश हरेश हितेश।

3. श्री विमलनाथ स्वामी (मूलनायक के बाईं ओर) की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है।

''विमलनाथ जिन बिंब भद्रंकर नगरे नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थे प्रतिष्ठित तपा. आ..... .....(सीमेंट में दब गया है। कारितंच पिण्डवाड़ा वास्तव्यौ बल्लीबेन जयन्ती लाल पुत्र परेम हितेन्द्र.....

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. चौबीस तीर्थी शांतिनाथ भगवान की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

''श्री शांतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य ....गच्छाधिपति जय घोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि, कुलचन्द्र सूरिभि कारितं च बलवन्त सिंह जी बादाम बाई बोल्या की ओर से सम्भवनथ जैन मंदिर पहाड़ा को वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण 13 दिनांक 11.3.02 आयड़ तीर्थ

2. पंच तीर्थी जिनेश्वर भगवान की 8'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पीछे यह लेख है :–

''श्री कालूलाल जी भार्या शान्ताबाई तत्पुत्र प्रदीप – सारिता परेमा तत्पुत्र अभय जैन लखडवास वाला वि.सं. 2056''

3. पंच तीर्थी 8'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4. विमलनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''श्री विमलनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच पुखराज वीरचन्द जी स्मृति में भाई इन्द्रमल जयन्तीलाल वीरचन्द्र परिवार पिण्डवाड़ा वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्ण 3 इसवाल उदयपुर।''

5. सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का गोलाकार है। इस पर लेख है :– ''स्वस्ति श्री वि.सं. 2055 माघ शुक्ला 14 शनोंः श्री अष्टा पिदे जैन तीर्थ .....रानी मध्य श्री सिद्ध चक्र यंत्र भेट पिता श्री गिरधारीसिंह जी मातु श्री फूलीबाई पुत्र हिम्मतसिंह चपलोत का. प्र. तपागच्छाधिपति श्री सुशील सूरीश्वर पट्टधर आ. जिनोत्तम सूरि शिष्य धर्मस्य श्री .....शुभ मंगल श्री संघस्य''

6. सिद्ध चक्र यंत्र कमलाकार स्तंभ पर गोलाकार 11'' व्यास का है। इस पर लेख जो पढ़ने व समझ में आता है :– ''सिद्ध यंत्र चन्द्रकला खुशालचन्द्र शाह सिरडी वाला की तरफ से''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में :–

1. अच्युता देवी की 14'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है (जो पढ़ने में आता है कुछ लेख पार्श्वभाग में होने से पढ़ा नहीं जा सकता) वि.सं. 2045 चैत्र

सुदी अच्युता यक्षिणी प्र. प्रद्योतन सूरि, जितेन्द्र सूरि निश्च मूलचन्द्र जी सोहनलाल कस्तूर चन्द्र विमल चन्द ताराचन्द (श्री सम्भवनाथ की अधिष्ठाता देवी द्रूरिता देवी है न कि अच्युता देवी)

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में :–

2. मणिभद्र जी की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है वि.सं. 2055 वै. शुक्ला मणिभद्र प्रतिष्ठित आ. जितेन्द्र सूरीश्वरैः कारितं च पितामहि सज्जन देवी माता सन्तोष देवी की पुन्य स्मृतिः में सरूपरिया गौत्रीय अशोक प्रमिला आजाद रत्न देवी ।। इति ।।

सभा मंडप के साथ ही उपाश्रय बना हुआ है उसमें :–

1. चक्रेश्वरी देवी की 17'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''वि.सं. 2055 वै. शु. 7 शने : श्री चक्रेश्वरी देवी प्रतिष्ठिता तपा. आ. प्रेमसूरीश्वर भुवन, भानु, सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितं हिरण गौत्रीय खडगसिंह शान्ता देवी डॉ. शैलेन्द्र''

2. सरस्वती देवी की 21'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''विद्या निकेतन मा. विद्यालय, हिरण मगरी, सेक्टर–4 विद्यालय परिवार की ओर से सप्रेम भेट दिनांक 30.4.2003

   इसी उपाश्रय में एक प्राचीन चित्र श्री रत्नप्रभ सूरिजी का काँच में फ्रेम किया हुआ है। चित्र के नीचे यह लिखा है :–

   आद्य संस्थापक आचार्य श्री रत्न प्रभ सूरि जी महाराज वि.सं. 70 यानी महावीर स्वामी के 70 वर्ष बाद। प्राप्ति स्थान – बाबूलाल ललित कुमार कवाड़ नागौर। इस मंदिर की व्यवस्था श्री सम्भवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट द्वारा की जाती है।

❑❑❑

आयड़-आटपुर-आघाटपुर-तांबावती-नगरी के जैन मंदिर

(श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्री शांतिनाथ भगवान, श्री आदीश्वर भगवान, श्री महावीर स्वामी, श्री सुपार्श्वनाथ भगवान)

यह तीर्थ देहली दरवाजा से राणा प्रतापनगर रेल्वे स्टेशन (पुराना उदयपुर रेल्वे स्टेशन) के मुख्य सड़क के दाहिनी ओर आयड़ में स्थित है। ये मंदिर प्राचीन हैं। मंदिरों का विवरण प्रस्तुत करने के पूर्व आयड़ के बारे में जानना आवश्यक है।

आयड़ को प्राचीन काल में आहड़ आटपुर–तांबावती नगरी, आघाटपुर नाम से जाना गया है। आयड़ की संस्कृति ईसा पूर्व 2000 वर्ष से भी अधिक पुरानी है। पुरातत्त्व विभाग द्वारा खनन कार्य करने से प्राप्त बर्तन, मूर्ति पाषाण कालीन औजार मिले हैं, जो इसके पर्याप्त प्रमाण हैं कि यहाँ की संस्कृति प्राचीन है।

इन मंदिरों में प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ अधिकतर संप्रति महाराजा के समय की हैं। इस बारे में यह कहां गया है ''श्रुत केवली सुहस्ति सूरि के सानिध्य में तत्कालीन सम्राट संप्रति द्वारा प्रतिष्ठापित महातीर्थ आयड़ तीर्थ।''

यह नगरी मेवाड़ की राजधानी रही है और यह एक समृद्धिशाली व व्यापारिक केन्द्र था। लेकिन प्राकृतिक आपदाओं व अन्य कारणों से प्राचीन संस्कृति लुप्त होकर अवशेष रह गए है।

इस परिसर में प्राचीन मंदिर हैं। श्री पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर में स्थापित प्रतिमा को आचार्य श्री यशोभद्र सूरि जी ने वि.सं. 1029 में प्रतिष्ठित करवायी थी, ऐसा उल्लेख मिलता है। उस समय के राजा श्री अल्लूराज की रानी हरियू देवी रेवति दोष की बिमारी से पीड़ित थी। उसको हथूण्डी (राता महावीर जी) में विराजीत आचार्य श्री यशोभद्र सूरिजी के शिष्य बलभद्रसूरि जी ने रोग मुक्त कर दिया। इसके प्रभाव से राजा ने जैन धर्म अंगीकार किया। ग्यारहवीं शताब्दी में महाकवि धनपाल द्वारा रचित सत्यपुर महावीरोत्साह में यहाँ के मंदिरों का उल्लेख मिलता है तथा यहा के राणा के मंत्री हेमचन्द श्रेष्ठि ने सभी जैन शास्त्रों को ताड पत्रों पर लिखवाया था। जिनमें से दश वैकालिक सूत्र, ओध निर्युक्ति व पाक्षिक सूत्र आज खम्भात में श्री शांतिनाथ जी ज्ञान भण्डार में सुरक्षित हैं।

इसी प्रकार इसी क्षेत्र में स्थापित अन्य मंदिर की भी प्रतिष्ठा वि.सं. 12 वीं सदी में, जिसका विवरण आगे किया जाएगा। इस परिसर क्षेत्र में व ग्राम में निम्न मंदिर निर्मित है :–

1. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (बावन जिनालय)
2. श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर।

3. श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर।
4. श्री महावीर स्वामी का मंदिर।
5. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर

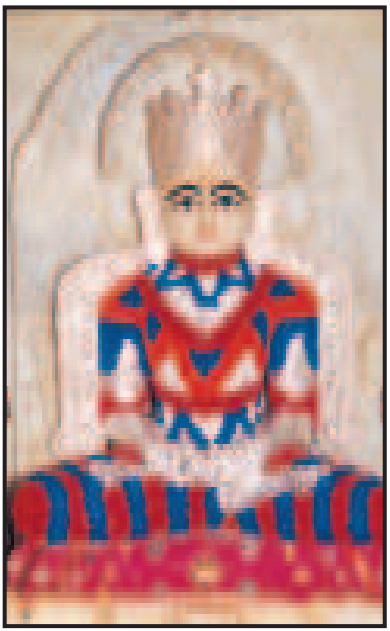

इस मंदिर में स्थापित पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा वि.सं. 1029 में आचार्य श्री यशोभद्र सूरि जी द्वारा की गयी थी, (यह मूल प्रतिमा है या नहीं?) उसको उत्थापित की जाकर इसके स्थान पर शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की 41'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा बिराजित करायी, इसका परिकर 69'' ऊँचा है। इस पर कोई लेख नहीं है, लेकिन यह प्रतिमा काफी प्राचीन है व खनन से प्राप्त हुई है। खनन (खुदाई) से प्राप्त प्रतिमा को तपा. गच्छाधिपति जय घोष सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरीश्वर जी व कुलचन्द्रसूरि जी की निश्रा में प्रतिष्ठा वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 13 दिनांक 11.3.2002 को सम्पन्न हुई।

मूल प्रतिमा का परिकर, दरवाजा स्वर्ण रेखा से रेखांकित होने से सुन्दरता बढ़ गयी है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाहर फेरनी में कारनिस पर (दाएँ से बाएँ) निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री आदेश्वर भगवान
2. श्री अजितनाथ भगवान
3. श्री सम्भवनाथ भगवान
4. श्री अभिनंदन भगवान
5. श्री सुमतिनाथ भगवान
6. श्री पद्म प्रभ भगवान
7. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
8. श्री चन्द्र प्रभ भगवान
9. श्री सुविधिनाथ भगवान
10. श्री शीतलनाथ भगवान
11. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ (मंदिरनुमा बड़ी देवरी में स्थापित है। प्रतिमा के साथ परिकर 41'' ऊँचा श्वेत पाषाण का है। परिकर व दरवाजा स्वर्ण रेखा से रेखांकित है।

12. श्री श्रेयांशनाथ जी
13. श्री वासुपूज्य जी
14. श्री विमलनाथ जी
15. श्री अनंतनाथ जी
16. श्री धर्मनाथ जी
17. श्री शांतिनाथ जी
18. श्री कुंथुनाथ जी
19. श्री अरनाथ जी
20. श्री मल्लिनाथ जी
21. श्री मुनिसुव्रत जी
22. श्री नमिनाथ जी
23. श्री नेमिनाथ भगवान
24. श्री डुवा पार्श्वनाथ जी
25. श्री महावीर भगवान

उक्त सभी प्रतिमाएँ श्वेत पाषाण की हैं और प्रत्येक प्रतिमा 21'' ऊँची है। इन सभी प्रतिमाओं के नीचे यह लेख है। केवल तीर्थंकर के नाम अलग–अलग लेख है :–

''श्री आदिनाथ जिन बिंब (प्रत्येक बिंब पे नाम परिवर्तन है) प्रतिष्ठित तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति विजय जयघोष सूरीश्वर मेवाड़ देशोंद्धारक जितेन्द्र सूरिजी वैरागी वारिति कुलचन्द्र सूरिभि आयड़ तीर्थे फाल्गुन कृष्ण पक्षे 13 वि.सं. 2058, इस लेख के साथ साथ प्रत्येक प्रतिमाओं पर प्रतिष्ठा करने वाले परिवार का नाम भी अंकित है जो निम्न प्रकार से है :–

1. श्री हजारीमल जी सायरा वाला परिवार, उदयपुर।
2. नडियाद निवासी सरेमल जी, हीराचन्द्र जी ध. पं. कमलादेवी व पुत्र पौत्र सुरेश अशोक उत्तम राजेश विपुलादि परिवारेण आयड़ तीर्थ।
3. लूणावा निवासी बाबूलाल शेरमल परिवारेण।
4. पिण्डवाड़ा निवासी शाह मूलचन्द्र जी दलीचन्द्र जी भार्या दिवाली बेन पुत्र पौत्र नेमिचन्द्र कुन्दनमल वरदीचन्द कमु परसन कमला किशोर हरेश अलकेशा परेश परमार गौत्रीय।
5. पिण्डवाड़ा निवासी ——————देवी नेनमल जी पुत्र पौत्र तरूण महेश दिलीप संजय श्रेयांस जैन यस आदि साकरिया।
6. उदयपुर निवासी मोतीलाल जी इन्द्रबाई अजन बाई पुत्र स्व. किशनलाल श्रेयोर्थ सागरबाई पुत्र शांतिलाल सुशीला डॉ. बसंतीलाल आभा दलाल परिवारेण।
7. स्व. पिता माता मुनि श्री मोक्ष कर अंबालाल जीतबाई श्रेयोर्थ उदयपुर निवासी तेजसिंह कैलाश–दोशी परिवारेण।
8. स्व. दिवाली बेन धर्मचन्द्र अजबाणी पुत्र पौत्रादि नवीनचन्द विपुल ——।
9. पिण्डवाड़ा निवासी मेहता मूलचन्द्र रिखभदास जी ध.प. तारामति पुत्र पौत्र भाविना अश्वनी मानकर सिटी भारती सिद्धार्थ हर्ष आनन्द–परिवारेण।
10. कोशिलाव निवासी कारसिया पुखराज ध.पं. –– पुत्र विमलचंद्र हितेष——।

11. उदयपुर निवासी गणपत सिंह जी भार्या कमलादेवी पुत्र पौत्रादि नरेन्द्र हेमन्त अनिल अंजु अल्का संगीतादे कोठारी ––––––

12. पोरवाड जैन मूर्ति संघेन आराधना भवन गोकलनगर भिवण्डी निवासी।

13. उदयपुर निवासी श्रीमती अरूणा बेन जैन घ.प. नरेन्द्र व्यास पुत्र पौत्रादि श्रुति दीपक आदित्य विभा संजय सजना सलौनि प्रनति परिवारेण।

14. उदयपुर निवासी रावतमल जी इलीचायी बाई हिम्मतसिंह हर्षचन्द्र कान्तिबाई पुत्र प्रकाश राजेन्द्र सिंह गिरीश कुमार सिरोहिया।

15. उदयपुर निवासी नानीबाई प्रतापसिंह जी मोहनलाल जी पुत्र पौत्र आदि हेमन्त निर्मला मनोज अमित रसिक ललिता विजयलक्ष्मी रत्नादि गांधी।

16. उदयपुर निवासी मातु श्री प्रेम बाई श्रेयोर्थ चौधरी यशवंतसिंह घ.प. शशी पौत्र पौत्रादि देवीलाल जी केशरीचन्द्र जी ओसवाल वंशीय गौखरू गौत्रिय।

17. स्व. पितृश्री चिमनलाल जी जसराज जी मातु श्री गजराबेन श्रेयार्थ पुत्र पौत्रादि भरत कुमार–तरूणबेन विपुल–सविता सृष्टि स्वप्न केतन वीनादि परिवारेण।

18. पिण्डवाड़ा निवासी भानु शकुंतला पुखराज महता श्रेयोर्थ नवीन निष्ठा सुरेन्द्र।

19. पिण्डवाड़ा निवासी ललित कुमार भूरमत घ.पं. शोभा सुश्री ऋतु हितेष कुमार डोली, सविन कुमार नीटू दोहित्र सिद्धार्थ निशान्तादि परिवारेण।

20. पेसुआ निवासी जगदीश चन्द्र देवीचन्द्र जी मातु श्री घन्नु बेन ––––––।

21. दीयोदर बनासकाँठा स्व. कंचन बेन फेजालाल मोहनलाल दोशी श्रेयोर्थ पुत्र पौत्रादि कनुभाई– चन्द्रिका बेन भव्येश किशन कौशल्या रक्षादि परिवारेण।

22. उदयपुर निवासी चंद्रा देवी नेणचन्द्र विजयसिंह खाब्या पुत्र पौत्री – कमल प्रतापचन्द्र विमला भँवर सुनन्दा कुसुम अनिल बिंब प्रिय।

23. श्री छगनबाई बोहतलाल जी पुत्रादि दिवानसिंह महेन्द्रसिंह सम्पतकुमार आगे (सीमेंट में दबा हुआ है) ––––बापना परिवार।

24. धनेरा निवासी ताराबेन कन्हैयालाल जी पुत्र पौत्रादि भरत कुमार –––––––उर्मिला बेन मीना बेन पुत्र कौशिक कुमार आशिक सिरोया परिवारेण।

25. वास वास्तव्य उदयपुर निवासी अर्जुनलाल जी धर्मचन्द्र कमलाबेन सुरेश कुमार पुष्पाबेन अनिल पुनित किशनलाल जी––––––बेन मगन नकुल पोरवाड परिवारेण।

26. जिरावला पार्श्वनाथ भगवान की गुमटनुमा गोलाकार मंदिर के आकार की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है और परिकर श्वेत पाषाण का प्राचीन खुदाई का 39'' ऊँचा है। परिकर व दरवाजा स्वर्ण रेखा से रेखांकित है। इसके नीचे लेख है :–

''आयड़ तीर्थ वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण दिनांक 11.3.2002 श्री जिरावला पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष

सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि ———कुलचन्द्र सूरि कारितंच पू.आ. भद्र गुप्त सूरिजी शिष्य पद्मरत्न वि. प्रेरणाय। पित् मातृ सन्तोक चन्द्र जी मातु श्री वासतीबाई गोरबथ श्री बदरी ———प्रपौत्र सप्तराज दिनेश हंसादि मेहता परिवारेण।''

फैरनी में कारनिस पर 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

27. श्री मल्लिनाथ भगवान
28. श्री महावीर भगवान
29. श्री मुनिसुव्रत जी
30. श्री आदिनाथ भगवान
31. श्री वासुपूज्य स्वामी जी
32. श्री मुनिसुव्रत जी
33. श्री महावीर भगवान
34. श्री वासुपूज्य जी
35. श्री कुंथुनाथ जी
36. श्री मुनिसुव्रत जी
37. श्री वासुपूज्य जी
38. श्री महावीर भगवान
39. श्री सीमन्धर स्वामी
40. श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जी – यह प्रतिमा मंदिर नुमा देवरी में स्थापित है इस प्रतिमा के साथ पाषाण का परिकर है, जिसकी ऊँचाई 39'' है। परिकर व दरवाजा स्वर्ण रेखा से रेखांकित है।
41. श्री महावीर भगवान
42. श्री पार्श्वनाथ जी
43. श्री मुनिसुव्रत जी
44. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जी
45. श्री आदिनाथ जी
46. श्री पार्श्वनाथ जी
47. श्री विमलनाथ जी
48. श्री शीतलनाथ जी
49. श्री अजितनाथ जी
50. श्री पार्श्वनाथ जी
51. श्री आदिनाथ जी।

उक्त सभी प्रतिमाओं पर (क्रमांक 27 से 51 तक) कुछ अंतर के साथ लगभग एक ही प्रकार का लेख है :–

''श्री मल्लिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं (प्रत्येक प्रतिमा पर तीर्थंकर का नाम परिवर्तित है) तपा. आ. प्रेम भुवन सुरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरिभि कुल चन्द्र सूरिभि कारितंच।'' आगे सभी प्रतिमा पर लेख भिन्न–भिन्न है, जो निम्न प्रकार है :– ''पिण्डवाड़ा निवासी स्व. श्री मातु श्री शकुन्तला बेन पुखराज जी महता श्रेयोर्थ सुरेन्द्र, चन्द्र कान्त, सिद्धार्थ निरंजनलाल बालिया परिवारेण।''

28. नान्दिया निवासी कमलाबेन बाबूलाल जी अमीचन्द्र जी पुत्र पौत्र प्रपौत्र आदि अशोक जयवन्त सवीता दयमन्ति निमेश मयंक कृत अर्चनादि परिवारेण आयड़ तीर्थ
29. पिण्डवाड़ा निवासी कंचन बेन जयचन्द्र जी पुत्र प्रपौत्र अतुल संजय कल्पना रत्ना, निमिता संयम प्रीति कुण्डलेचा चौहान परिवार
30. पिण्डवाड़ा निवासी बसीबेन शिवलाल जी जवेरचन्द्र पुत्र पौत्रादि नरेन्द शकुन्तला कल्पेश अल्पा शोली श्लोक श्वेतादि कुण्डलेचा चौहान परिवारेण।
31. कोशिलाव निवासी सूरजमल जी भार्या सुधी बेन पुत्र पौत्रादि ललित अरविन्द रमेश (आगे टूटा हुआ है। ————————
32. पिण्डवाड़ा निवासी महता श्रीपाल कुमार रिखब दास जी भार्या लीलादेवी पुत्रादि राजेन्द्र संजय मीनाक्षी कल्पना श्रेया उन्नति राणी हर्षादि परिवार
33. उदयपुर निवासी चन्द्रकला मोहनदेवी ख्यालीलाल पुत्र पौत्रादि राजीव ललिता चिराग खुशबू गरिमा पवन अनितादि परिवारेण
34. उदयपुर निवासी बाबूलाल जी मंगला चन्द्रप्रकाश प्रीति संदीप शिल्पा राहुल मालविका बापना अनिता रजनीश दिपा भण्डारी अनुस्वादि परिवार
35. पू. आ. भुवन सूरीश्वर प्रेरणा खीमेल वास्तव्य स्व. हेमराज जी राजबाई मभुतराज जी प्यारी बाई धनराज जुगराज मोतीलाल जी श्रेयार्थ ————————उमराव बाई मेहता
36. पू.आ. रामचन्द्र सूरीश्वर जी प्रेरणया दादाई निवासी जिला पाली वास्तव्य श्री चुन्नीलाल जी भीमा जी भार्या धाकु बेन पुत्र पौत्रादि वख्तावरमल जयन्तीलाल बालचन्द्र महावीर कुमार आदि सकल परिवार
37. धानेरा वास्तव्य मातु श्री धापु बेन पितृ श्री जीवराज नागरदास स्वा. विपुल हिरेन————उर्मिला बेन प्रवीनचन्द्र पुत्रादि सपना करण प्रणय प्रणाली सलौनी सोनियादि महता परिवारेण
38. उदयपुर निवासी चतरसिंह जी पुत्र पौत्रादि विजयसिंह कमला देवी सुरेन्द्र कुमार अभय कुमार सुनिता सुरेखा वरूण प्रसन्नादि नाहर परिवारेण।

39. प.पू. गच्छाछिपति वि. रामचन्द्र सूरीश्वर प्रर्वतिनी विमला सुदर्शन चन्द्रकला श्री माता श्री————मयंक भाई ——————

40. श्री दीपक ज्योति जैन श्वे. मू. पूजक संघेन कालाचौकी ————मुम्बई।

41. प.पू.मु. री विमल हंस मु. परम हँस वि. प्रेरणाय बाड़ोली निवासी सुशीला बेन मणिचन्द्र दल्लुभाई उषा बेन उमेशभाई पौत्र वैभव पौत्रवधू हेमलता कृपादि परिवारेण

42. धोराणी वास्तव्य मेघनगर अहमदाबाद निवासी वसा वाडीलाल पोपटलाल भार्या बसन्त बेन पुत्र पौत्रादि महेश प्रकाश ज्योतिन्द्र रेखा मीना सीमा मैत्री कुण राजादि परिवारेण

43. रोहिड़ा निवासी श्री कुन्दनमल जी कान्हमल जी पुत्र पुत्रादि कान्तिलाल कमला बेन जेनिका प्रीति रिती ऋद्धि प्रभूति मेहता परिवार

44. उदयपुर निवासी श्रीमती शान्तादेवी खड़गसिंह जी पुत्र डॉ. शेलेन्द्र रमा योगेश विनीता मनीश दीपेश हिरण वन्दना राजकुमार हर्ष बाबेल प्रभुति ————आयड़ तीर्थ

45. पला वास्तव्य शिवगंज निवासी केसरीमल जी साकलचन्द्र जी भार्या नत्थीबाई नेपाबाई (?) तादि (?) ——————दोलबाई कमलाबाई गुणवतीबाई हीरताबाई (?) स्मृति परिवारेण।

46. चामुण्डेरी निवासी शाह जवानमल लक्ष्मीचन्द्र जी पुत्र पौत्रादि बाबूलाल रमणलाल चम्पालाल अल्पेश जितनेश अपूर्व ऋषभ प्यारी बेन जिनादि रविया (?) गौत्रीय परिवारेण

47. नॉदिया निवासी बबीबेन मिट्ठालाल लल्लूजी पुत्र पौत्रादि अशोक दिलिप मुकेश सरोज शिल्पा शिवानी वैभव करूणा (?) हितादि परिवारेण

48. उदयपुर निवासी मातृश्री भूरीबाई स्व. श्री भंवरलाल जी पोरवाल श्रेयार्थ ताराचन्द्र जी भार्या पुष्पा बाई पुत्र पौत्रादि श्री विकास हिमांशु श्रेष्ठा निधि प्रभ्रति परिवारेण

49. उदयपुर निवासी सोहन लाल जी इन्द्रसिंह भार्या फूलकुंवर (सही यह है सोहनलाल जी भार्या फूलकूंवर पुत्र पुत्रादि इन्द्रसिंह दोलतसिंह स्व. प्रकाशचन्द्र सुरेन्द्र कुसुमदेवी स्नेहलता कमलदेवी नीतादेवी स्व. राकेश आदि धुप्या परिवारेण

50. स्व. गिरधारीसिंह जी भंवरलाल जी बोहत बाई श्रेयोर्थ जतनकुँवर पुत्र प्रपोत्रादि दिनेश मुकेश किरण सरोज मंजुला (?) प्रियका स्वाति हार्दिकादि परिवारेण

51. श्रीमती हुलासीबेन अचलदास जी तेजराज जी सादड़ी राणकपुर परिवारेण।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है लेकिन यह कार्य जीर्णोद्धार न होकर नवीन कार्य है। 51 देवरिया नवनिर्मित हैं, केवल मात्र मूलनायक के निज मंदिर का जिर्णोद्धार हुआ है, कार्य अभी चल रहा है।

❑❑❑

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, आयड़ तीर्थ

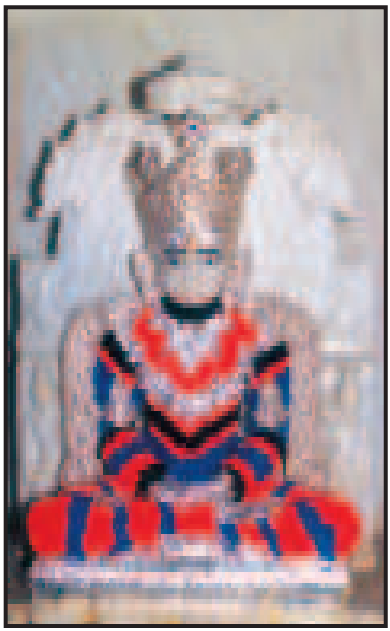

आयड़ मंदिर परिसर में मुख्य सड़क के किनारे पर यह मंदिर स्थित है।

यह मंदिर भी बहुत प्राचीन है और 12वीं सदी में इसका निर्माण हुआ है। इस मंदिर में श्री शांतिनाथ भगवान की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित थी, जो अब पीछे महावीर स्वामी जिनालय में अस्थायी रूप से स्थापित की गई है (जिस पर वि.सं. 1817 लिखा है। उसको उत्थापित कर श्री शांतिनाथ भगवान की ही 23'' ऊँची अन्य प्रतिमा जो खनन से प्राप्त हुई उसको स्थापित की है। इस पर कोई लेख नहीं है और इसका परिकर भी 41'' ऊँचा श्वेत पाषाण का है। परिकर व दरवाजे पर स्वर्ण से रेखांकित किया हुआ है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :–

श्री सुमतिनाथ भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री सुमतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच –

पुखराज जी छीतरमल जी हस्तीमल जी मोहनलाल हरकचन्द्र जी ————गढ़ सिवाणा हाल सूरत।''

बाईं ओर के आलिए में :–

''श्री आदिनाथ भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है। श्री आदिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री प्रेम भुवन सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जय घोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच साबरमति निवासी शंखेश्वर पार्श्वनाथ आराधक पुखराज जी ————

सभा मंडप से बाहर निकलते समय दोनों ओर देवरियाँ बनी हुई हैं। बाईं ओर की देवरी में :–

नागराज की 35'' ऊँची साधारण श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इसके ऊपर पार्श्वनाथ भगवान की 6'' ऊँची प्रतिमा सं. 2058 में प्रतिष्ठा करायी गयी है। इस नागराज की मूर्ति

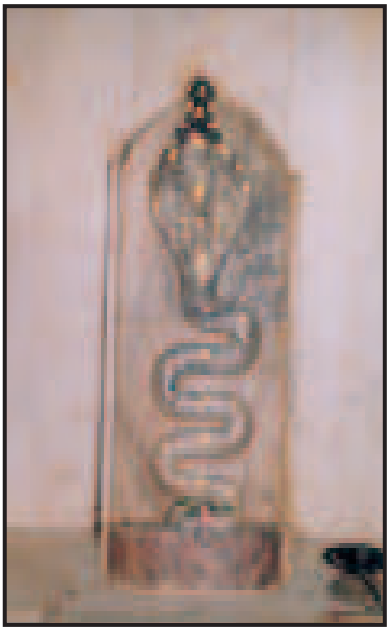

के नीचे लेख है :–

''सिद्ध श्री नाग री मूरत सम्बत 1680 ———————— मा.सं. ———————— उदयपुर ———————— नागराज की प्रतिमा सं. 1680 की प्रतिष्ठित है और नागराज भादविया गोत्रीय परिवार के कुल देवता हैं।

प्रत्यक्षदर्शी का कहना है कि श्याम नागराज की लंबाई करीब 21'' फीट है और मोटाई करीब 9'' है और नाग पंचमी के दिन श्वेत नागराज करीब 12'' लंबाई के प्रकट होते है।

मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर देवरी में :–

जगच्चन्द्र सूरीश्वर महाराज की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है।

जगच्चन्द्र सूरिजी की मूर्ति के बारे में जानने के पूर्व जगच्चन्द्र सूरीश्वर जी के बारे में समझना आवश्यक है।

जगच्चन्द्र सूरि भगवान महावीर के 44 वें पट्टधर और तपागच्छ के प्रथम आचार्य थे। दीक्षा के दिन से आजीवन आयंविल तप की कठोर तपस्या की थी और इस आहड नगर के समीप बहने वाली अहर नदी की तप्त (गर्म) बालू (रेत) में आतापना लेते थे। उस समय के राजा रावल जैत्रसिंह जी का इधर आना हुआ और महाराणा ने कठोर तपस्या से प्रभावित होकर वि. सं. 1285 की वैशाख शुक्ला 3 को आचार्य श्री को तपा. बिरूद की पदवीं से अलंकृत किया और कालान्तर का बडगच्छ ही तपागच्छ कहलाया आयड़ (आहड़) में ही आचार्य श्री ने कई दिगम्बराचार्य को धर्मशास्त्रों में परास्त किया तथा हीरे की तरह अभेद रहे, इसलिये इन्हें हीरला के विरूद भी अर्पण किया तथा इन्हें तपा हिरला कहा गया।

उपर्युक्त श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वर की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इसके नीचे लेख है :–

''याव ज्जीवा चावल तपो. अभिगृह धारक, संवत् 1285 वर्षे तपा. विरूद धारक हीरला आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वराणांमूर्तिरियम् तपागच्छाछिपति रैवता चला महातीर्थोद्धारक जंगम युग प्रधान भट्टारक जैनाचार्य श्री विजय नीतिसूरी श्वराणा सदुपशेन देशान्तरवर्ति उदयपुर नगरे निवासिना श्री संघेन कारापिता प्रतिष्ठापिताचं आघाटनगरें स्थापिता विक्रम संवत् 1995 मृगसिर शुक्ला षष्टी 6 चन्द्रवासरें''

मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर खुले चौक में :–

नागराज मंदिर के समान्तर एक देवरी है, जिसमें गजानन की प्रतिमा जो इसी परिसर में प्राप्त हुई है, 19'' ऊँची है और पबासन तक 23'' व वाहन तक 31'' ऊँची है। इसके नीचे कोई लेख नहीं है।

मंदिर से नीचे जाते समय बाईं ओर आलिए में :–

1. पद्मावती देवी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 17'' व सर्प के छत्र तक 19'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री पद्मावती देवी विबं प्रतिष्ठितम् तपा. आ. प्रेमभुवन भानु सुरीश्वर शिष्य जय घोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच श्रीमती हेतबाई घ. प. पुनमचन्द्र जी पुत्र लालचन्द्र बसन्त कुमार मंजु सरोज राजेश सरिता गजेन्द्र नमीता पौत्र दिनेश :

   प्रतिष्ठा : पद्मावती देवी विराजमान करत्ता श्रीमती प्रेमबाई कमललाल जी बाबेल अमित उदयपुर''

2. **इसके आगे नीचे उतरते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :–**

   नाकोड़ा भैरव जी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 19'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :–

   श्री नाकोड़ा भैरव बिबं प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेमभुवन भानु सूरीश्वर जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच उदयपुर निवासी लक्ष्मणसिंह स्मृति श्रीमती जतन देवी गोवर्धनसिंह यशवन्त देवी नरेन्द्रसिंह–पुष्पा जगन्नाथ सिंह कमलेश ममता हिमिका भूमिकादि बोल्या परिवारेण वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 13 प्रतिष्ठा।

   श्री नाकोडा भैरव विराजमान करता श्री जुहारमल जी मांगीलाल जी विशालकुमार आनन्द कुमार अक्षय कुमार कुणाल कुमार श्री श्रीमाल बेटा पोता देसा जी शिवगंज जि. सिरोही।

इसी चौक में आदेश्वर भगवान व शांतिनाथ भगवान के मंदिर के बीच की जगह चौक में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. पुण्डरीक स्वामी (मूलनायक बीच में) 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

   ''पुण्डरीक स्वामी बिं प्रतिष्ठतं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि आयड़ तीर्थोद्वाराक कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच घानेरा वास्तव्य नवसारी

निवासी लक्ष्मीचन्द्र ईश्वरलाल सवाजी परिवारेण आयड़ तीर्थ सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण 12 रविवार''

2. गौतम स्वामी (मूलनायक के दाएँ) की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा, पबासन तक 21'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– श्री गौतम स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आचार्य, प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर जय घोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच घाटलोडिया अहमदाबाद निवासी विमला के पुत्र दिनेश कान्तिलाल भार्या उषाबेन पुत्र अंकित पुत्री नीमा दर्शनी प्रभ्रति परिवारेण वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 12 रविवार दिनांक 10.3.2002.''

3. श्री प्रेम सूरीश्वर जी (मूलनायक के बाएँ) गुरु प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री आत्मकमल वीरदान सूरि प्रतिष्ठाचार्य श्री सिद्धान्त महोदधि सूरीश्वराणां मूर्ति रिय प्रतिष्ठाता तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वरस्य शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द सूरिभि कारितंच पिण्डवाडा श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघेन वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्ण 12''

आदेश्वर भगवान के मंदिर के नीचे उतरते समय चौक में बाईं ओर एक आलिए में :–

अम्बिका देवी की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है और परिकर 35'' ऊँची है। यह प्राचीन प्रतिमा है, जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 12 को सम्पन्न हुई। इसके नीचे लेख है :– सौ. कमला सरेमल छोगालाल जी पुत्र महेन्द्र चन्द्रप्रकाश, मुकेश राजेन्द्र ललित पोता बिटिल बण्टी चिण्टू, छोटू सोनू जितेन्द्र लक्की सिरोया, उदयपुर।''

नीचे उतरते समय दाहिनी ओर (चौक में) एक आलिए में :–

मणिभद्र जी की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री मणिभद्र वीर बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द्र सूरिभिः कारितंच पिण्डवाड़ा निवासी शकुन्तला बेन, पुखराज जी मेहता पुत्र पौत्रादि नवीन निरंजन सुरेन्द्र चन्द्रकान्त वसुमति मधुबाला शालिनी मोनिका कमल आसू परिवारेण। इसके पास ही जगच्चन्द्र सूरि जी का प्राचीन उपाश्रय है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (आयड़ तीर्थ)

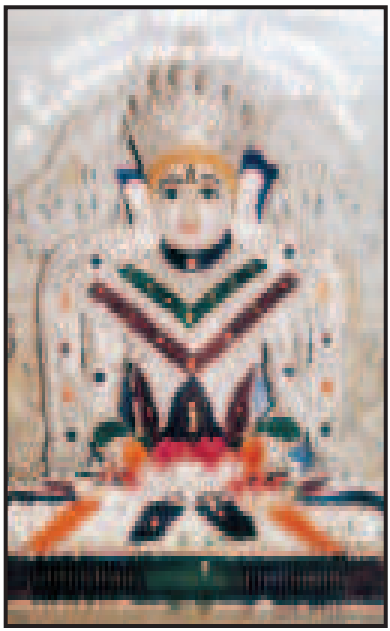

यह मंदिर शांतिनाथ भगवान के मंदिर के पास और मूल दरवाजे के सामने स्थित है। इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

1. श्री आदेश्वर भगवान की 41'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है और परिकर 61'' ऊँचा है। प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है, लेकिन इस प्रतिमा को उत्थापित की गई है और पुनः प्रतिष्ठा वि.सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 12 रविवार को की गई।

इस प्राचीन प्रतिमा की प्रतिष्ठा आचार्य श्री सुहस्ति सूरि द्वारा सम्पन्न हुई और मंदिर का निर्माण ईसा के पूर्व तीसरी सदी में सम्राट संप्रति ने करवाया था। जिसका प्रमाण यह है श्री राजेन्द्र कुमार जी के संग्रह में से कवि राजसुन्दर कृत श्री आहड मंडल आदि जिन स्तवन प्राप्त हुआ है जो वि. संवत् 1665 भाद्रपद पूर्णिमा अनुराधा नक्षत्र में रचित है, जिसमें प्रकार आलेख है, जो जयपुर में प्राप्त हुआ :–

''आहाड़ नगर सोहामणों देखी, संप्रति महाराज जिन प्रासाद करावियों दण्ड कलश ध्वज साथ धन धन श्री आर्य सुहस्तीसूरि प्रधान प्रतिष्ठाकारी निज हाथ शुभ मुहूर्त शुभ ध्यानम्।''

वर्तमान में परिकर पर, दरवाजे के चारों ओर स्वर्ण से रेखांकित किया है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएँ :–

1. चतुर्वीसी (चौबीसी) धातु की 12'' ऊँची प्रतिमा है। इसके पीछे यह लेख है :–

   ''तपा. आचार्य विजय प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं कारितंच शाह सिवनाथ श्री कमलाबाईजी, प्रेरणाया भंवरलाल जी श्री ————————श्री ———गौतम जी च. अरूणा पुत्र पुत्री ————हिरेन महावीर मुरडिया परिवारेण फाल्गुन कृष्णा 13 वि.सं. 2058''

2. पंचतीर्थी धातु की 8'' ऊँची प्रतिमाहै। इसके पीछे का लेख अस्पष्ट है :– ''सं. 1920 का कृ. (?) बुध परतापसिंह भार्या प्रहलाद कुवर ——————————''

3. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :– ''————तपा. आ. प्रेम भुवन भानु. जय घोष सूरि प्रतिष्ठितं श्वे. महासभा उदयपुर।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में :–

4. गोमुख यक्ष की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''गौ मुख यक्ष प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वरस्य शिष्य प्रशिष्य जयघोष सूरि जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्रसूरिभिः कारितंच हरिसिंह जी दलपतसिंह जी भूपालसिंह जी सरूपरिया परिवारेण''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में :–

2. चक्रेश्वरी देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है प्रथम पंक्तियां (सीमेंट लगने से अस्पष्ट है)

   ''श्री दयालसिंह जी श्री सोहनबाई जी कोठारी परिवारेण''

   सभा मंडप में बाईं ओर एक वेदी पर 17'' X 14'' आकार श्वेत पाषाण की पादुका स्थापित है। इस पर लेख बहुत घिसां हुआ तथा अपठनीय है।

भीतरी सभा मंडप से बाहरी सभा मंडप से भी नीचे चल कर बाईं ओर एक मंदिरनुमा बड़ी देवरी बनी हुई है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. नेमिनाथ भगवान (मूलनायक) की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री नेमिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितमं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच मुनि श्री जयदर्शन विजय जी प्रेरणया नवसारी निवासी महावीर चन्द्र श्री श्वेता मू.पू. सघेंन।''

2. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के दाहिनी ओर) की 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभिः कारितंच प.पू. मुनि श्री सिद्धिविजय जी मु. श्री ऋद्धिविजय जी प्रेरणया सिरोही निवासी सुन्दर बेन सेवन्तीलाल जी मुकेश वर्द्धमान व ––––––। सीमेंट में दब गया है।

3. पार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक के बाईं ओर) की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतम् तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वरस्य शिष्य प्रशिष्य गच्छाधिपति जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभिः कारितंच उदयपुर निवासी स्व. ––––––––मनोहर बाई ––––––––– बहादूरसिंह जी श्रेयोर्थ श्री नेमकुंवर तेजसिंह जी पुत्र पौत्रादि कमला धर्मेश हर्षित तन्मय धैर्य नागोरी परिवार वि.सं. 2058

4. निज मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर के आलिए मे :–

   वासुपूज्य भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री वासुपूज्य जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानू सूरीश्वर शिष्य जयघोष

सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच उदयपुर निवासी उमा गोरी श्री फतहचन्द्र जी श्री लाल जी पुत्र पौत्रादि ईश्वर भरत दिनेश मुकुल नैतिक मयूर सौरभ महात्मा उदयपुर।''

5. निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर के आलिए में :–

श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री आदिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्र सूरि कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच आदीश्वर जैन श्वेत. मूर्ति पूजक संघेन सेवापेट सलम चैन्नई निवासीना वि. सं. 2058।

बाहरी सभा मंडप से नीचे उतरते समय दाहिनी ओर एक मंदिरनुमा बड़ी देवरी है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री वर्द्धमान स्वामी (मूलनायक) की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''वीर सं. 2503 वि.सं. 2033 वर्द्धमान स्वामी जिन बिंब कारितंम जितेन्द्र विजय जी परोपरेणा प्रेरणा दाता निवासी शाह खीमचन्द दर्लभचन्द्र पुत्र पौत्रादि प्रताप भाई बहनमाता सुशीबेन पत्नी इन्दुमति पुत्री हर्षा बेन प्रतिष्ठतं।''

2. शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा (मूलनायक के दाहिनी ओर) 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2033 शांतिनाथ बिंब कारितं पिता श्री कल्याण जी मातु श्री अम्बाबाई श्रेयोर्थ सिरोही निवासी हरिश चन्द्र तपा. आ. कपूरसूरिजी पट्टे आ. अमृतसूरिजी शिष्य जितेन्द्र विजय गणिभि मूलुड़

3. महावीर स्वामी (मूलनायक के बाईं ओर की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2033 महावीर बिंब करापितं पिता कल्याण जी अम्बा बेन कल्याण हेतु सिरोह निवासी हरिशचन्द्र ध. पं. चंचल बेन ————————तपा. आ. तपों श्री आ. अमृतसूरि शिष्य ————————मूलुड़

4. प्रवेश के समय बाएँ आलिए में :–

सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लेख पर रंग (पेन्ट) किया गया है।

5. प्रवेश के समय दाहिनी ओर आलिए में :–

शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे भी लेख पर पेन्ट किया गया है।

❑❑❑

श्री महावीर स्वामी का मंदिर (आयड़ तीर्थ)

महावीर स्वामी का मंदिर मूल रूप से वर्तमान आयड़ तीर्थ परिसर से बाहर है। गुम्बजनुमा इस मंदिर में महावीर स्वामी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है।

इस वेदी के नीचे 7'' ऊँची श्याम पाषाण की चन्द्रप्रभु की, पद्मावती माता मय मस्तक पर पार्श्वनाथ भगवान व नेमिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख व लांछन नहीं है।

इसके साथ ही भैरवजी की प्रतिमा भी पृथक से विराजमान है।

यह मंदिर एक वाडी (खेतीहर) में स्थित है, जो कि श्री भेरूलाल जी दोशी की थी। उन्होंने वर्मा जी को बेचान कर दी, जिसमें मंदिर भी सम्मिलित है और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा बाहरी व्यक्तियों को दर्शन के लिये अनुमति दी जाती है।

इस परिसर में महावीर स्वामी व चन्द्र प्रभु स्वामी की प्रतिमा भूमि से प्रकट हुई थी, जो करीब 2500 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर को श्री भेरूलाल जी दोशी ने बनवाया और प्रतिमा को संवत् 1994 आसोज सुदी 5 शने आघाट नगर (खरतरगच्छ) आयड़ में विराजमान करायी।

यह मंदिर निजी मंदिर होने से विधी विधान द्वारा किसी श्रावक श्रेष्ठि द्वारा पूजा न होने से आदेश्वर भगवान के मंदिर के पीछे अस्थायी मंदिर निर्माण करा महावीर भगवान की प्रतिमा स्थापित करायी गयी। इसको महावीर स्वामी का मंदिर कहा जाता है। इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा 51'' ऊँची श्वेत पाषाण की है।

   यह प्रतिमा गर्भगृह (गभारा) से प्राप्त हुई, जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 2058 में करायी गयी।

   इस प्रतिमा के नीचे उत्कीर्ण लेख अपठनीय है।

2. मूलनायक के बाईं ओर जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 37'' ऊँची श्वेत पाषाण की है।

3–4. इसी प्रकार की प्रतिमाएँ क्रमशः 29'',23'' ऊँची श्वेत पाषाण की हैं। कोई लेख नहीं है।

5. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है, कोई लेख नहीं है।

6. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। लांछन सर्प का स्पष्ट है तथा लेख बहुत घिस गया है, जो भाग पढ़ने में आता है, वह है :– ''सं. 1805 वर्षे माह...''

7. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा 27'' ऊँची पीत पाषाण की है। यह प्रतिमा प्राचीन है, कोई लेख नहीं है।

8. उक्त प्रतिमा के पास श्री नमिनाथजी की प्रतिमा 21'' ऊँची है। इसकी वि.सं. 2058 में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

इसी प्रकार मूलनायक के दाहिनी ओर कारनिस पर निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

1–3. जिनेश्वर भगवान की 37'', 41'', 23'' ऊँची प्रतिमाएँ श्वेत पाषाण की है। इन पर कोई लेख नहीं है।

4. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। लांछन स्पष्ट है, कोई लेख नहीं है।

5. शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''संवत् 1817 वर्षे वेशाख सुदि 3 गुरो श्री देवाली वास्तव्य मालु गौत्रे मेता रूपाजी तत्भार्या रूपदे तत्पुत्र मेंता धगासिंग तत्पुत्र मेता इसरदास शांतिनाथ बिंब कारितं श्री बृहदरवरतर पीपलिया गच्छे म. श्री जिनचन्द्र तत् शिष्य महोपाध्याय

6–7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 25'' 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इन पर कोई लेख नहीं है। लांछन स्पष्ट है।

इसके पास ही श्री महावीर स्वामी का जिनालय निर्माणाधीन है।

❑❑❑

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (आयड़ तीर्थ)

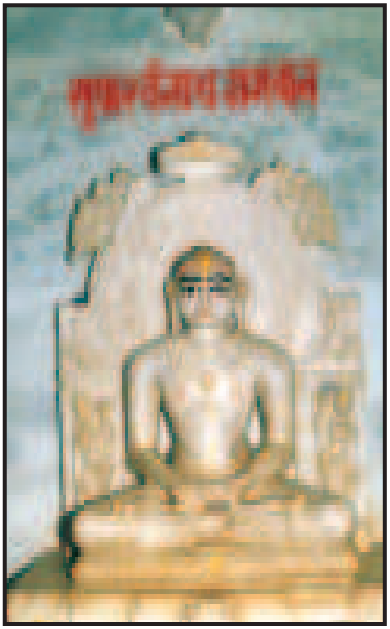

यह मंदिर आयड़ तीर्थ परिसर से बाहर की ओर पश्चिम दिशा में स्थित है। यह शिखरबंद विशाल मंदिर 12वीं सदी का निर्मित है।

यह मंदिर पूर्व में पार्श्वनाथ भगवान का था। (कल्याण जी आनन्द जी द्वारा प्रकाशित जैन तीर्थ सर्व संग्रह में उल्लेखित) अब सुपार्श्वनाथ भगवान मंदिर का नांमाकरण कब से व क्यों हुआ? इसकी जानकारी नहीं है।

इसमें विराजित प्रतिमा भी उत्थापित की जाकर खनन द्वारा प्राप्त प्रतिमा को विराजमान करायी। **इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–**

1. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। परिकर की ऊँचाई 41'' है। इस पर कोई लेख नहीं है।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर कारनीश पर तीन पादुका जोड़ी श्वेत पाषाण की वेदी पर स्थापित हैं। इसका आकार 34'' X 20'' है। लेख इस प्रकार पढ़ने में आता है (कुछ भाग अस्पष्ट है।)

उपाध्याय श्री भानुचन्द्र/भट्टारक श्री हीर विजय सूरि

आगे अस्पष्ट

संवत् 1693 ––––––पोष मासे शुक्ल पक्षे तपा श्री हीर विजय सूरिणां

पं. श्री उदयचन्द्र गणि–

पादुका कारापितम्	हीरविजय सूरि उदयचन्द
श्री आघाटपुर संघेन	गणि प्रतिष्ठितं शुद्धि (1)
दोलत (1) बाबेल–	चन्द्र गणिभि–

सभा मंडप से बाहर बाहरी सभा मंडप से नीचे उतर कर बाईं ओर एक बड़ी देवरी में – पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 23'' ऊँची श्याम पाषाण की है और मस्तक पर सर्प का छत्र है। यह छत्र तक 31'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

''श्री भिलड़िया जी पार्श्वनाथ जिनेश्वर बिंबम् करापितंच तपा. आ. विजय रामचन्द्र

सूरि विजयजिन प्रभ, सूरि मुनि हींकार प्रभ पूर्ण प्रभ विजय, साध्वी सन्नोसश्री का. त्रिविध श्री ———————— जूनाडीसा. वास्तव्य श्री सापोरवाडी जातिय गलवीबेन श्रेयोर्थ सूरचन्द्र नानचन्द लुणावरिय पुत्र रसीकलाल बाबूलाल (उमावाति) नैनसी नैतिक साहिल सीमोनी, प्राची, नियति लब्धि इति शान्ता पोत्र चन्दन शेलेश किरिट अलकेश पौत्र,

दाहिनी ओर की देवरी में''

पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री सामला पार्श्वनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम भुवन सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्य जयघोष सूरीश्वर जितेन्द्रसूरि कुलचन्द्र सूरिभिः कारितंच पू. मुनि श्री रत्नराज विजय प्रेरणया गढ़ सिवाणा वास्तव्य ऊँज्ञा निवासी घेवरचन्द्र खीमचन्द मंगलदास सीताराम जी ध.प. कमला बेन शारदा बेन पुत्र पुत्रादि रमेशकुमार दक्षा सन्तोष मधुबालादि वि. सं. 2058 फाल्गुन कृष्णा 13''

उक्त सभी मंदिरों की देख–रेख जैन श्वेताम्बर महासभा उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

वाणी की मधुरता, सरलता तथा हृदय की पवित्रता से मनुष्य सुख-शांति का जीवन जी सकता है।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अरविंद नगर सुंदरवास, उदयपुर

यह मंदिर (राणा प्रतापनगर रेल्वे स्टेशन) से डबोक हवाई अड्डे की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के किनारे सुंदरवास नामक मोहल्ले की गेलड़ा कॉलोनी (अरविंद नगर) में बना हुआ है।

यहाँ पर पूर्व में श्यामसुन्दर जी रोशनलाल जी गेलड़ा की वाड़ी थी। गेलड़ा परिवार ने इस वाड़ी को आवासीय कॉलोनी बनाकर भूखण्ड विक्रय किए। कॉलोनी के मानचित्र में पार्क को चिह्नित किया गया था, लेकिन पार्क नहीं बन पाया और यह भूखण्ड जहाँ पर मंदिर बना हुआ है, उसको गेलड़ा परिवार ने अपने पिता की अन्तिम इच्छा के अनुसार इच्छेश्वर महादेव मंदिर के लिये भूमि भेंट कर दी। भूमि प्रदान करने की लिखित प्रक्रिया करते समय श्री मूलचन्द्र जी ने शिवमंदिर के साथ–साथ जैन मंदिर बनाने की योजना को भी उसमें सम्मिलित कर दिया।

इस प्रकार भूमि पर मंदिर निर्माण के लिए आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिजी महा.सा. को मंदिर बनवाने के लिये निवेदन किया और भूमि की उपलब्धता बताने पर उन्होंने स्वीकृति दी। मंदिर बनवाने के लिये ट्रस्ट मंडल व अन्य संस्था व व्यक्तिगत सहयोग से राशि प्राप्त होती रही और मंदिर तैयार हो गया और अप्रेल 1998 में प्रतिमा मंदिर में स्थापित करायी गयी।

इसके पूर्व प्रतिमा की (विजयनगर में) अंजनशाला करायी गयी थी। इसको वर्ष 1996 में लाकर उदयपुर वर्द्धमान पब्लिक स्कूल में विराजमान करा पूजा होती रही।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री पार्श्वनाथ बिंब कारापितं विसलतपुर वास्तव्य कटारिया गौत्रिय हस्तीमलेन कारितं च प्रतिष्ठितं चैन क्षामाणिका ध्यायते हार्थ मतेन प्रतिमा पितृभ्य तपा. आ. प्रेम सूरि शिष्य भुवन भानुसूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभि वि.सं. 2050 मृग. कृ. 3 गुरौ विजयनगरे अजमेर निवासन राजस्थान शुभंभूयात्।''

2. मूलनायक के बाईं ओर महावीर स्वामी की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री महावीर बिंब प्रतिष्ठितम् तपा. आ. जितेन्द्र – जगच्चन्द्र सूरिश्मा नाडलई निवासी चुन्नीलाल जी पुत्र गुलाबचन्द्र भा. शान्ता बेन''

3. मूलनायक के दाहिनी ओर कुंथुनाथ स्वामी की 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''कुंथुनाथ बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि। कारितंच सायरबेन मल्लिलाल खीमराज जी पुत्र श्री निर्मल भरत (सीमेंट में दब गया है)''

निज मंदिर में प्रवेश के समय बाएँ आलिए में :–

4. मुनिसुव्रत स्वामी की उत्थापित प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– मुनिसुव्रत स्वामी बिंब प्रतिष्ठिताम् तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः। कारितन्च कान्तिलाल जी ध.पं. परसबेन पुत्र नरेश अतुल पौत्र रूचित रितिक कुडलीपींडल

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. पंच तीर्थी आदिनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''वीर सं. 2519 वि.सं. 2045 वैशाख सुद 5 बुधवासरे .....आदि जिन बिंब प्रतिष्ठित आ. प्रेम सूरीश्वर भुवन भानुसूरि .....''

अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव कारापितं आचार्य जितेन्द्र सूरि उपदेशात सिवाना निवासी भीमराज भगवानचन्द्र धारीवाल (यह लेख सिलसिलावार नहीं होने से व्यवस्थित रूप से नहीं लिखा जा सका)

2. 6'' x 3'' आकार का अष्टमंगल यंत्र है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इस पर लेख है :–

''सिद्ध चक्रं प्रतिष्ठितम् तपा. आ. श्री प्रेम सूरिजी पट्टे विजयभुवन भानुसूरि शिष्य आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितन्च गढ़ सिवाणा.....वास्तव्य धारीवाल गौत्रीय शा. भीमराज भगवान जी द्वारा''

4. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है। इसके पीछे श्री पार्श्वनाथ भगवान लिखा है। (फोल्डिंग शिखरबंद है।)

5. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इस पर लेख है : – सं. 2047 जेठ सुदी 6 सोमवार सन् ता. 1.7.91 सर्वोदय पारसनाथ नगरे मुम्बई मुंलुंड (वे.) स्वं. शा बामचन्द वेलचन्द्र तथा सायरबेन परिवार रेणुका कारापितं प्रतिष्ठितम् आचार्य देव सेन सागर सूरिभि।''

6. मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''मुनिसुव्रत स्वामी बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरि कारितं च शा. ताराचन्द्र रमेशचन्द्र भरतकुमार बेटा

पोता मेघराज जी सोना मूथीभाणा वि.सं. 2056 माघ सुदी 13 सोमवार''

7. 9'' व्यास का बीस स्थानक यंत्र है। इस पर लेख है :–

''बीस स्थानक यंत्र प्रतिस्थापितं इसवाल नगरे समस्त जैन संघेन तपा. आ. विजय भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितन्च भूरमल जी धः पत्नी हरोबेन पुत्र ललित कुमार धर्म पत्नी शोभाबेन पौत्री ऋतु डोली नीतू सादररिया पिण्डवाड़ा वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्णा 3''

8. **निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में** पार्श्वयक्ष की श्याम पाषाण की प्रतिमा 11'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

''वि.सं. 2055 वै. वदी 13 शुक्र श्री पार्श्वयक्ष प्रेम सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभिः कारितम् मांगीलाल जी पुत्र राजेन्द्र ..... (शेष भाग पीछे होने से पढ़ा नहीं जा सकता)''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर के आलिए में पदमावती माता की प्रतिमा 11'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''वि.सं. 2055 वै. वदी 13 शुक्र श्री पदमावती दिव्या प्रतिष्ठिता प्रेम सूरि शिष्य भुवन भानुसूरि कान्तिचन्द माणकलाल जी पुत्र एवन्तीलाल महता द्वारा''

सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर के आलिए में श्री नाकोड़ा भैरव जी की प्रतिमा 15'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

वि.सं. 2055 वै.वदी 13 शुक्रवासरे श्री नाकोडा भैरव प्रतिष्ठिता कारितन्च कांकरोली निवासी श्रीमती मोहनदेवी धर्मपत्नी सुन्दरलाल जी।

सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर श्री चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''वि.सं. 2055 वै. वदी 13 शुक्रवारे चक्रेश्वरी देवी प्रतिष्ठतां तपा. आ. प्रेम सूरि भुवनभानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सुरिभि कारितन्च सागरमल चम्पालाल जी, प्रसन्नमल जी प्रवेशमल जी दुगड़ जोधपुर''

मंदिर के प्रवेश करते समय दाहिनी ओर आलिए में मणिभद्र जी की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा स्थापित है। इस पर लेख है :–

संवत् 2055 वै. वदि 13 शुक्रवार श्री मणिभद्र वीर प्रतिष्ठिता तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितंच कान्तिलाल मोहनलाल जी बम्ब खेमपुरा द्वारा''

इस मंदिर की देख–रेख शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट अरविंद नगर, सुंदरवास द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी सेक्टर-3, उदयपुर

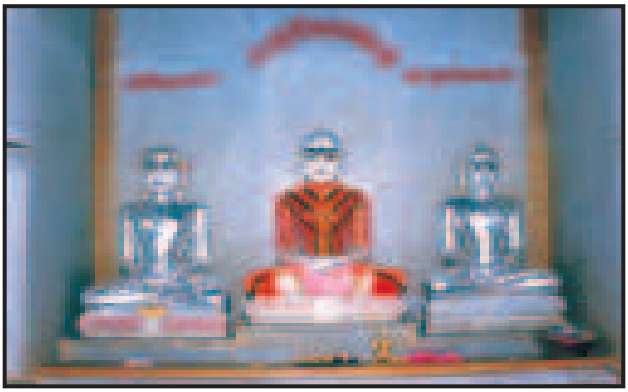

यह मंदिर सूरजपोल से राणा प्रतापनगर रेल्वे स्टेशन जाने वाली सड़क से पहले सेवाश्रम चौराया से दाहिनी ओर जाने वाली सड़क पर बाईं ओर हिरण मगरी, सेक्टर नं. 3 में स्थित है।

इस मंदिर के निर्माण के लिए समाज के सदस्यों के आर्थिक सहयोग से एक भूखण्ड करीब 2500 वर्ग फीट श्री वैद्यनाथ पुत्र हरबन्तिलाल शर्मा जी से 17.10.1994 को क्रय किया। विशेष बात यह है कि यह भूखण्ड 2.00 लाख की लागत का होने पर भी श्री शर्मा ने मंदिर के लिये 1.50 लाख में देने का निर्णय लिया और भुगतान लेते समय पुनः 5 हजार कम लेकर भूखण्ड को समाज के नाम रजिस्ट्री करायी। सारांश यह है कि अजैन होकर उनकी भावना कितनी स्वच्छ व धार्मिक है। सामूहिक सहयोग से मंदिर निर्माण करा कर प्रतिष्ठा वि.सं. 2056 द्वितीय आषाढ़ कृष्णा 3 को सम्पन्न करायी गयी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की प्रतिमा 29'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर यह लेख है ''श्री शांतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरिभि पिण्डवाड़ा वास्तव्य मूलचन्द जी पुत्र हजारीमल जी भार्या कंचन बेन पुत्र रमणलाल रसीला विनोद–नयना पौत्र।
2. श्री शीतलनाथ भगवान (मूलनायक के दाहिनी ओर) 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

   ''श्री शीतलनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. प्रेमसूरीश्वर भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितंच तदुपदेशात नाड़लाई निवासी श्रीमती शान्ता बेन श्री भीमचन्द जी चण्डालिया तत् पुत्री पुष्पा बाई मोड़ीलाल जी तत्पुत्र श्री संदीप जितेन्द्र भावीना सो प्रफुल्ला अनिता गिरीशा

3. श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक के बाईं ओर) 27'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख हैः ''श्री सुमतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं. गढ सिवाणा वास्तव्य धारिवाल धनराज जी ध.प. चम्पाबाई पुत्र पारसमल जयन्तीलालेन चैत्र कृष्णा 4 वि.सं. 2055

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. शांतिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 8'' ऊँची है। इस पर निम्न लेख है –

   ''श्री शांतिनाथ जिन बिंब पंच तीर्थना तपा गच्छाधिपति श्रीमद् विजय रामचन्द्र सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्याभ्यां वर्द्धमान तपोनिधी पू.आ. विजय गुणयश सूरीश्वर, प्रवचन प्रभावक, पू.आ. श्री कीर्तियश सूरीश्वरष्य राजनगरें वि.सं. 2059 फाल्गुन शुक्ला मंगलवासरे उदयपुर निवासी सुन्दरबाई शंकरलाल श्रेयोर्थ श्री गिरिश कुमार पुत्र वधु लक्ष्मीदेवी पौत्र राजकुमार आदि बाबेल परिवारेण सेक्टर 3 जैन श्वेताम्बर मंदिर स्थापना शुभ भवतु''

2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इस पर यह लेख है ''स्वस्ति श्री सिद्ध चक्र यंत्रं प्रतिष्ठतं तपा गच्छाधिपति पू.आ. श्रीमद् विजय रामचन्द्र सूरीश्वर शिष्य प्रशिष्याभया

   वर्द्धमान तपोनिधी पू.आ. विजय गुणयश सूरीश्वर, प्रवचन प्रभावक, पू.आ. श्री कीर्तियश सूरीश्वराम्यां राजनगरें वि.सं. 2059 फाल्गुन शुक्ला मंगलवासरे उदयपुर निवासी सुन्दरबाई शंकरलाल श्रेयोर्थं श्री गिरीश कुमार पुत्र वधू लक्ष्मीदेवी पौत्र राजकुमार आदि बाबेल परिवारेण सेक्टर 3 जैन श्वेताम्बर मंदिर स्थापना शुभं भवतु''

3. पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर 6'' ऊँचा है, जिसमें पार्श्वनाथ भगवान की 1'' ऊँची प्रतिमा विराजित है।

4–5. पार्श्वनाथ भगवान की दोनों प्रतिमाएँ 1'' ऊँची हैं।

   उक्त तीनों प्रतिमाओं पर कोई लेख नहीं है तथा ये प्रतिमाएँ अस्थायी रूप से पूजन करने के लिये रखी है।

मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर दीवार के आलिए में (सभा मंडप में) :–

1. गरूड यक्षः की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री गुरुण यक्ष प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच सौ. चन्द्रकला धर्म पत्नी देवीलाल जी दिलखुश– भारती घ.प.

2. **मंदिर के सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर** श्री नाकोडा भैरव की प्रतिमा 17'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री नाकोडा भैरव प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरि कारितंच श्रीमती भोलीबाई पुत्र

फतहलाल जी राजमल जी पुत्र वधू कमला बाई विमलाबाई''

3. **प्रवेश करते समय दाहिनी ओर** पद्मावती देवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है : श्री पदमावती देवी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्र सूरि कारितंच स्व. जोरावरसिंह जी भूरबाई सुरेशकुमार की स्मृति में पुत्र भोपालसिंह दलाल द्वितीय आषाढ कृष्ण 3 वि.सं. 2056''

4. निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाएँ निर्वाणी देवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री निर्वाणी यक्षिणी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्रसूरिभि'' (आगे के लेख पर रंग लगने से नहीं पढ़ा जा सकता)।

इस मंदिर का खनन मुहूर्त व स्थापना प्रवेश प्रतिष्ठा श्री जोरावरसिंह जी भोपालसिंह जी सुरेश कुमार जी दलाल द्वारा करायी गयी।

इसी प्रकार मूलनायक की वेदी के नीचे लक्ष्मीदेवी की प्रतिमा को श्री मनोहरलाल कालूलाल सिंघवी ने भरायी।

इस मंदिर की व्यवस्था महावीर जैन, श्वेताम्बर समिति, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर द्वारा की जाती है। इसके साथ उपाश्रय बना हुआ है।

❑❑❑

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी सेक्टर-4, उदयपुर

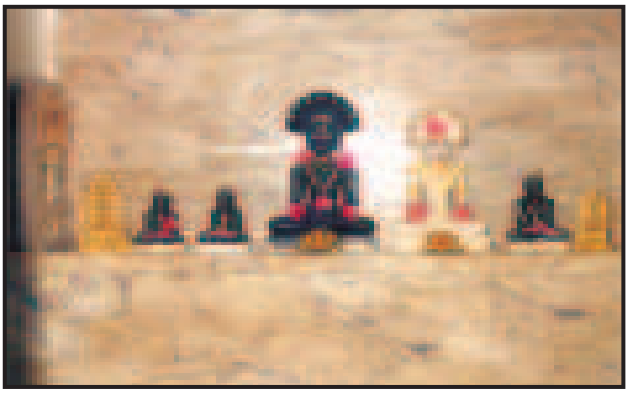

यह मंदिर राणा प्रताप नगर रेल्वे स्टेशन से सूरजपोल की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर सेवाश्रम चौराहा से बाईं ओर जाकर सेक्टर चार के टेम्पो स्टेण्ड के पास स्थित है।

इस क्षेत्र में कोई जैन मंदिर नहीं होने से आ. श्री. जिन कान्तिसागर सूरीश्वर जी की प्राप्त प्रेरणा से यह मंदिर बनाया गया।

आ. श्री कान्तिसागर जी के मुख्य शिष्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी ने श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराने का सुझाव दिया।

सन् 1985 में नगर विकास प्रन्यास में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक जिनालय के लिए भूखण्ड आवंटन के लिये प्रार्थना पत्र देकर निर्धारित दर से आधी दर पर भूखण्ड नं. 809 की रु. 4.50 वर्ग फीट से भूखण्ड नं. 810 की रुपये 6.00 प्रति वर्ग फीट से राशि जमा करायी गयी साध्वी श्री मणिप्रभा श्री के सदुपदेश से श्री शान्तिलाल जी पुत्र श्री भंवरलाल जी बापना ने यह दोनों भूखण्ड मंदिर के लिये भेंट कर दिए और वर्ष 1991–92 में मुनि जयरत्नविजय नयरत्न विजय जी द्वारा खात मुहूर्त करा कार्य प्रारम्भ किया गया। मंदिर निर्माणाधीन है वर्तमान में प्रतिमाएँ उत्थापित रूप से एक कमरे में रखी है, जिनकी नियमित सेवा पूजा की जा रही है।

इस मंदिर में पाषाण व धातु की निम्न प्रतिमाएँ व यंत्र है :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 21'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इससे नीचे यह लेख है :–' वि.सं. 2010 व ज्येष्ठ सुदि 9 खो सुमेरपुर श्री वर्द्धमान जैन बोर्डिग हाऊस सं. ————————छात्रावास संचालित जैन संघेन श्री पार्श्वनाथ बिंब क.प्र. विजय सिद्धि सूरि निदेशन प्र. कल्याण विजयाकेन सोभाग्य विजय युतेन सुमेरपुर छात्रावासे।
2. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है ''सं. 2010 व ज्येष्ठ सुदि 9 शिवगंज वा. पंचोवाद संघवी सा. उत्तमचन्द्र पु. जेठमलेन पुत्र

जवेरचन्द्र पौत्र निहालचन्द युतेन सुमेरपुर पार्श्वनार्थ बि.आ. सिद्धिसूरि निदेशन प्र. कल्याण विजय गणिना सौभाग्य वि. युतेन सुमेरपुर छात्रालये

3–5. जिनेश्वर भगवान की तीन प्रतिमाएँ क्रमशः 11'' , 9'' व 9'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इनके पीछे अस्पष्ट व अपठनीय लेख है।

6. श्री श्रेयांस नाथ भगवान की 9'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। इसके पीछे निम्न लेख है :–

''श्री श्रेयांस नाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितंच श्री मोतीलाल जी ध.प. मोहनबाई पुत्र बसन्तीलाल ध.प. सुशीला बाई पौत्र मनोहरसिंह पवन तेजसिंह अनिता प्रपौत्र अरूण गौरव वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्णा 3 इसवाल, उदयपुर।''

7. श्री नेमिनाथ भगवान की 7'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। इसके पीछे निम्न लेख है :–

''श्री बसन्तीलाल बापना कीर्ति होटल– उदयपुर।''

8. श्री शांतिनाथ भगवान की 7'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। इसके पीछे लेख है :– ''श्री बसन्तीलाल बापना कीर्ति होटल उदयपुर।''

9. श्री शांतिनाथ भगवान की चतुर्वीशी (चौबीसी) प्रतिमा 12'' ऊँची धातु की है। इसके पीछे लेख है :–

''श्री वीर संवत् 2519 वि.सं. 2049 नेमि सं. 42 तपे वर्षे द्वितीय वैशाख कृष्णा 3 तिथौ रविवासरे शुभलग्ने मुहूर्त राजस्थाने सुनहरि समदड़ी, गढ़ सिवाणा निवासी स्व. श्रेष्ठि श्री भगवानचन्द प्रतापचन्द जी धारीवाल चतुर्विश जिन युक्तं श्री शान्तीनाथ जिन बिंब भिदं कारितं प्रतिष्ठिंत शासन सम्राट तपागच्छाधिपति श्रीमद् विजय नेमि लावण्य दक्षसूरीश्वराणां पट्टधराचार्य श्रीमद् विजय सुशील सूरीश्वरस्य स्व पट्टधर प्र. जिनोत्तम विजय गणि वारादि मुनि वृन्द सहितै श्री रस्तु' शुभं भवतु श्री संघस्थ।''

10. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। मस्तक पर सर्प का फण है। इसके नीछे लेख है – ''श्री बसन्तीलाल बापना, कीर्ति होटल, उदयपुर।''

11. श्री आदिनाथ भगवान की 7'' ऊँची धातु की प्रतिमा है। इसके पीछे लेख है :– ''श्री बसन्तीलाल बापना कीर्ति होटल उदयपुर।''

12. श्री शांतिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची धातु की है। इसके पीछे लेख है :–

''सं. 2045 द्वि. ज्येष्ठ शुक्ला 10 प्रतिष्ठिंत राम भद्रंकर प्रद्योतन सिद्धि कल्याण मुक्ति वि. शाह परिचन्द कल्याणचन्द ललितकुमार विनोद कुमार बे. पो. भुताजी भन्साली गौत्र अं. सं. समरथमल जी सोहनलाल जी अनिता बेन।''

13. धातु का गोलाकार सिद्ध चक्रं यंत्र 7'' ऊँचे स्तंभ पर 5'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :– 'सिद्धचक्रं प्रतिष्ठितं तपा–आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच मोतीलाल जी ध.

पं. मोहनबाई पुत्र बसन्तीलाल जी ध.पं. सुशीला पौत्र मनोहरसिंह–पवन तेजसिंह अनिता उदयपुर वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्णा 3''

14. बीस स्थानक यंत्र गोलाकार है। इसके पीछे लेख है :– ''बीस स्थानक यंत्रं प्रतिष्ठितं इसवाल नगरे आ. भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्रसूरिभि कारितंच मोतीलाल जी ध.पं. मोहनबाई पुत्र बसन्तीलाल ध.पं. सुशीलाबाई पौत्र मनोहरसिंह पवन तेजसिंह–अनिता प्रपौत्र अरूण गौरव बापना उदयपुर।''

15. नवपद चौबीसी 10'' x 8'' आकार धातु की बनी हुई है। इसके पीछे निम्न लेख है :–

''चतुर्विंश बिंब प्रतिष्ठितं आ. जयघोष जितेन्द्र कुलचन्द्र सूरिभि कारितंच वस्तुपाल जोधराज परिवार दीक्षा निमित्ते फाल्गुन कृष्णा 13 वि.सं. 2058''

16. श्री चन्द्र प्रभु जी की चौबीसी प्रतिमा 12'' ऊँची है इसके पीछे लेख है –

''श्री चन्द्रप्रभ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र जगच्चन्द्र सूरिभ्या कारितं च उदयपुर वास्तव्य बापना गौत्रे बसन्तीलाल जी भार्या सुशीला बाई पुत्र मनोहरसिंह भा. पवन दे तेजसिंह भा. अनिता पौत्र अरूण कुमार गौरव कुमार वि.सं. 2059 चेत्र शुक्ल 4 शुक्रे भद्रंकर नगरे नागेश्वरजी''

17. धातु का गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 7'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :

''सं. 2045 वैशाख शुक्ला 10 सोम माण्डवला वाला शा. दीपचन्द जयन्तीलाल उत्तमचन्देण बे.पो. कुशलराज संभाजी ––––––सिंह ––––स्व. ––––––ह.मि.वि. श्रीमाल जाति प्रति भ. श्री सूरि मु. मुकि्त वि. मु. रवि शेखर वि. आदि''

18. धातु का अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5'' x 4'' है। इसके पीछे लेख है :– ''सं. 2045 द्वि. ज्येष्ठ शुक्ला 10 प्रतिष्ठितं राम भद्रंकर प्रद्योतन प्र. सिद्धि कल्याण मुक्ति वि. दिनेश विनोद रोणमल साकरचन्द मुकेश विमल बेटा पोता त्रिलोक जी उमेदाबाद अं. स. राजा समरथमल जी सोहनमल जी उमेदाबाद''

19. तांबे का गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 21'' व्यास का है। पूरा यंत्र मंत्रयुक्त है।

20. श्री महावीर स्वामी की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची व परिकर सहित 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। कोई लेख नहीं है।

इस मंदिर में श्री शांतिनाथ भगवान (मूलनायक) की प्रतिमा 31'' ऊँची होगी। इसके अतिरिक्त नागेश्वर पार्श्वनाथ, आदिनाथ भगवान घंटाकर्ण महावीर जी, नाकोड़ा भैरव जी, पद्मावती माता, ओसिया माता, अम्बिका देवी, शान्तिसूरि जी, जिनकुशल सूरिजी, राजेन्द्र सूरिजी आदि प्रतिमा स्थापित करने का प्रस्ताव है। इस मंदिर का निर्माण कार्य श्री शांतिलाल जी बापना (संरक्षक) की देख–रेख में दिनांक 06.08.2005 तक चल रहा था।

❑❑❑

श्री कुंथुनाथ स्वामी का मंदिर, स्वामी नगर टेकरी, उदयपुर

यह शिखरबद मंदिर उदियापोल रोडवेज बस स्टेण्ड से पुलिस लाइन होते हुए पानेरियों की मादडी के रास्ते में स्थित स्वामीनगर में स्थित है।

इस मंदिर निर्माण के लिये सबसे अधिक योगदान दोशी परिवार का है। सर्व श्री भंवरलाल जी दोशी, शम्भूलाल जी दोशी (हुम्मड़) मांगीलाल जी देवड़ा, बसन्तीलाल जी तलेसरा, कैलाश जी दोशी, महावीर जी जैन, केशरीमल जी बड़ालमिया आदि ने धन देकर श्री कुंथुनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट टेकरी (स्वामी नगर) के नाम से 2700 वर्गफीट का भूखण्ड श्री भरत पुत्र मगनलाल जी शर्मा से क्रय कर मंदिर निर्माण कार्य प्रारम्भ किया और धीरे–धीरे निर्माण कार्य पूर्ण हुआ और सं. 2058 की वैशाख विद 11 दिनांक 19.4.2001 को प्रतिमा को मूल स्थान पर प्रवेश करा ज्येष्ठ कृष्णा 2 दिनांक 9.5.2001 को प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री कुंथुनाथ स्वामी (मूलनायक) की प्रतिमा 31'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री कुंथुनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं सिद्धान्त महोदधि कर्म साहित्य निष्णात तपा. आ. श्री विजय भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य मेवाड़ देशोद्धारक परम पू. आचार्य जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च आयड़ तीर्थे शोभित उदयपुर नगर वास्तव्य हिरण गौत्रे खडगसिंह जी धर्मपत्नी श्री शान्ता बेन पुत्र डॉ. शैलेन्द्र धर्म पत्नी रमाबेन पौत्र मनीष दिनेश द्वारा टेकरी स्वामीनगर वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्णा 2 इसवालनगरें''

2. श्री वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा (मूलनायक के दाहिनी ओर) 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री वासुपूज्य जिन बिंब प्रतिष्ठतम् सिद्धान्त महोदधि कर्म साहित्य निशतात्त तपा. आ. श्री विजय प्रेम सूरीश्वरजी शिष्य न्याय विशारद प.पू. आ. भुवन भानु सूरीश्व

शिष्य मेवाड़ देशोद्धारक परम पू. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च टेकरी मंदिर कृते उदयपुर वास्तव्य कर्माशाह दोशी वंशज श्री उदयलाल धर्म पत्नी झंकार बाई पुत्र भंवरलाल धर्म पत्नी चन्दा (ऊषा) पौत्र कुलदीप पौत्री जयश्री, पदमश्री द्वारा वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्ण 2 सोमवार इसवाल नगरे।''

3. श्री पार्श्वनाथ स्वामी (मूलनायक के बाईं ओर) 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है ''वि.सं. 2058 कार्तिक शुद 3 सोमे. संघवी भेरू तारक धाम आबू तलेटी मध्ये श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री प्रेम भुवन भानु शिष्य जितेन्द्र सूरि गुणरत्न सूरिभ्यां कारितन्च विजयकुमारी धर्मपत्नी शम्भूलाल जी लक्ष्मीलाल जी दोशी।''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. श्री सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :

   ''श्री सुमतिनाथ जिन प्रतिष्ठित तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच बसन्तदेवी स्व. मांगीलाल जी मिण्डा पुत्र वधू ललित साक्षी दिलिप ज्योत्सना पौत्र पौत्री मोहित महिमा अमिषा ज्येष्ठ कृष्ण 2 वि.सं. 2058''

2. श्री आदिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 7'' ऊँची है। इसके पीछे यह लेख है :– ''सं. 1502 वर्षे श्री अचलगच्छे श्री जयंकसूरि नूरष्यपद श्री श्रीमाल सं. खीमा भा. खेतन पुत्र. सतनाम भा. सिगारदे पुत्र संजयदेव भार्या माना लग्न मेला लावसिंग दीपमाला पिंकी श्री विकाय सुशयोग्य श्री आदिनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री संघे....''

3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 4'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

   ''संवत 1630 व. का. शु. 3 मोमसा.....देव सुन्दर सूरिभि (शब्द बहुत ही छोटे है पढ़ने में नहीं आते है।)''

4–5. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 3'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

6. श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा 3'' ऊँची है। कोई लेख नहीं है।

7. सिद्ध चक्र यंत्र 5'' X 5'' का वर्गाकार है। इस पर लेख है :–

   ''सा. परसोत्तमदास सुत ..... सं. 1924 ताम्यास (?) का शुद 5''

   वेदी पर पाबासन देवी की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर लेख है...उतमचन्द्र अनिलकुमार जी महता पावास देवी''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में :–

1. गन्धर्व यक्ष 15'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''श्री गन्धर्व यक्ष प्रतिष्ठित् तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च आनन्दीलाल सुगन्दीलाल श्यामसुन्दर सुरेन्द्र लाल पिता श्रीमान् नाथूलाल जी मलासिया, ऋषभदेव''

2. **निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में :–**

''श्री अच्यूतादेवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री अच्यूता देवी प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितः विजय कुंवर भोपालसिंह जी पुत्र यक्षांश मीना पुत्री पारूल नाहर जेठ कृष्ण बि.सं. 2058''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर (सभा मंडप में) एक आलिए में :–

3. सभा मंडप में आलिए में मणिभद्र जी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

मणिभद्र बिंब प्रतिष्ठतं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच स्व. मांगीलालजी धर्म पत्नी शान्ता बाई पुत्र महेन्द्र चन्द्र प्रकाश दिनेश प्रफुल्ल मुकेश दावड़ा जैइ कृष्ण 2 वि.सं. 2058''

4. श्री पद्मावती देवी (इसी दीवार के अन्य आलिए में) की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री पद्मावती देवी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच श्री शैलेन्द्र भार्या सुशीला पुत्री खुशबू सुनील आशीष सेजल पौत्र सोनित माहिर मुम्बई। जैठ विद 2 वि.सं. 2058''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर (सभा मंडप में) एक आलिए में :–

5. श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''श्री गौतम स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच (कर्माशाह दोशी वंशज) पिता स्व. श्री नन्दलाल जी मा. स्व. सोभाग्यदेवी भ्राता स्व. लक्ष्मीलाल जी कमला पुत्र दलपतसिंह निर्मला गोवर्धनसिंह मंजु पौत्र मनीष पराग दोशी जेष्ठ कृष्णा 2 वि.सं. 2058''

6. **सभा मंडप में इसी दीवार पर मंदिर में प्रवेश करते समय बाएँ (निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाएँ) आलिए में :–**

''श्री नाकोड़ा भैरव जी की प्रतिमा 15'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :– श्री नाकोड़ा भैरव प्रतिष्ठतः तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च षष्ठ विरूपर्ण लक्ष्मीलाल दोशी धर्म पत्नी कान्ता हुमड़ पुत्र महावीर पत्नी विजय लक्ष्मी पौत्र निखिल पौत्री पेनल सोनल आशीष पौत्री दामाद''

इस मंदिर की देख–रेख के लिए एक ट्रस्ट बना है, (जिसके व्यवस्थापक श्री शम्भूलाल जी दोशी (हुमड़) है) भूमि पूजन श्री मोतीसिंह जी तलेसरा व खनन मुहूर्त श्री भंवरलाल जी दोशी द्वारा किया गया।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, सेंट्रल एरिया, उदयपुर

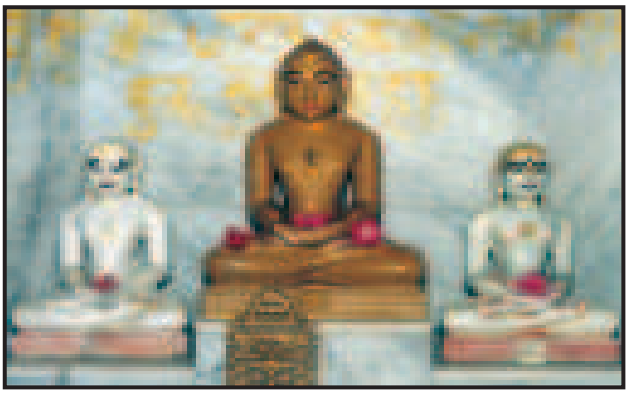

यह मंदिर सूरजपोल से रोडवेज बस स्टेण्ड, पुलिस लाईन (टेकरी) होकर सविना–सलूम्बर जाने वाली सड़क के बाईं ओर पार्क के पास स्थित है।

इस मंदिर की भूमि नगर विकास प्रन्यास द्वारा निर्मित पार्क की भूमि है, पार्क के कोने की जमीन जिसका क्षेत्रफल 700 वर्गफीट है उस पर दिनांक 19.8.94 को प्रस्ताव पारित कर मंदिर निर्माण करने का संकल्प कर गुम्मटबंद मंदिर तैयार किया। इस मंदिर को बनाने के लिये संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि भूमि प्रन्यास की थी और मंदिर बनाने की अनुमति प्राप्त नहीं हो रही थी। श्री मेघराज जी जैन (सांखला) ने अपने प्रभाव व व्यवहार के कारण मंदिर निर्माण कर संवत् 2059 ज्येष्ठ कृष्णा 3 दिनांक 9.5.2001 को प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री आदिनाथ भगवान (मूल नायक) की प्रतिमा 19′ ऊँची पीत पाषाण की है। इसके नीचे यह लेख है :–

   ''श्री आदिनाथ जिनं बिम्बं प्रतिष्ठित संघ कोशल्यावार सिद्धान्त महादधि तपा. आ. प्रेमसूरीश्वर – आ. दर्शन शास्त्र निपुणादि आ. विजय भुवन भानु सूरिमि कारितं च हेमचन्द्र विजय पट्टे ––– मूलीबेन अम्बालाल परिवार कृताजन जिन शलाखा मरेन स्व. मात ––– ओसवाल जातिय धरणेन्द्र भार्या शीला सुता केतकी उत्सयना।''

2. श्री महावीर स्वामी (मूल नायक के दाहिनी ओर) की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर निम्न लेख है :–

   ''श्री महावीर जिन बिम्बं तप.आ. श्री भुवन भानुसूरिभि आ. जय घोषसूरि जय शेखर सूरियु है। प्रतिष्ठितं कारितंच आ. श्री जितेन्द्र सूरि प्रेरणया वाकली निवासी शाह खीमचन्द पृथ्वीराज जी कोठारी परिवारेण''

3. श्री शांतिनाथ भगवान (मूल नायक के बाईं ओर) की प्रतिमा 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

   ''श्री शांतिनाथ बिंब प्रतिष्ठित तपा.आ. प्रेम भुवन भानुसूरि शिष्य विजय जितेन्द्रसूरिभि

नेमीचन्द्र ध.प. पानी बाई पुत्र महिपाल ध.प. शर्मिला पुत्र भेरूल चिन्तन सादरिया पिण्डवाडा वि.सं. 2055''

4. श्री महावीर स्वामी (नीचे की वेदी पर) की प्रतिमा 13'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

श्री महावीर स्वामी जिन बिम्बं प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच प्रतापचन्द जी ध.प. दिवाली बेन पुत्र दिनेश कुमार ध.प. बालिका बेन पुत्र जसवन्त मनोज रमेश पिण्डवाडा वि.स. 2056 फाल्गुन कृष्णा 3 इसवाल।''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर यह लेख है :–

''श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन बिम्बं प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच हिरण मगरी, सेक्टर–4 निवासी उदयपुरे गांधी गोत्रीय हेमन्त कुमार।''

2. श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा 4'' ऊँची है और गुम्बजबंद मंदिर की ऊँचाई 12'' है। कोई लेख नहीं है।

3. श्री नाकोड़ा भैरव (निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर आलिए में) की प्रतिमा 17'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री नाकोड़ा भैरव बिम्ब प्रतिष्ठित तपा.आ. प्रेम भानु सूरिवरस्य शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितं च. मातु श्री अ. ––– कुंवर ध.प. स्व. ––– सिंह जी ––––– ज्योति प्रीति मेहता ––– मेहता का टिम्बा हाल हिरण मगरी, उदयपुर, वि.सं. 2058''

4. श्री चक्रेश्वरी देवी (निज मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर आलिए में) की प्रतिमा 17'' ऊँची श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री चक्रेश्वरी देवी प्रतिष्ठिता तपा.आ. प्रेम भुवनभानु सूरीश्वर जी शिष्य जितेन्दसूरिभि कारिंता स्व. श्री बसन्तीलाल की स्मृति में ध.प. श्री गुलाब बाई पुत्र शान्तिलाल जी महावीर पौत्र हिमांक शत्रुंजय श्रमण निवासी प्रतापगढ़ (राज.) शुद 6 सं. 2058''

इस मंदिर के निर्माण से प्रतिष्ठा तक व वर्तमान में सभी प्रकार का खर्चा अधिकतर श्री मेघराज जी सांखला द्वारा किया जाता रहा है। यहाँ तक प्रतिमा भराने की बोली द्वारा लाभ लेने वाले सदस्यों ने भी राशि जमा नहीं करायी, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यह मंदिर श्वेताम्बर समाज का होते हुए भी दिगम्बर समुदाय के सदस्य भी यहाँ पूजा अर्चना, भक्ति भाव से करते है।

मंदिर के बाहर खुला चौक है। जिसको ढंक कर बरामदा बनाने की आवश्यकता है, जिससे पूजा पढ़ाने व अन्य कार्य सुचारू रूप से चल सके, लेकिन धनाभाव के कारण यह नहीं हो सका।

❑❑❑

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
सविना खेड़ा, उदयपुर

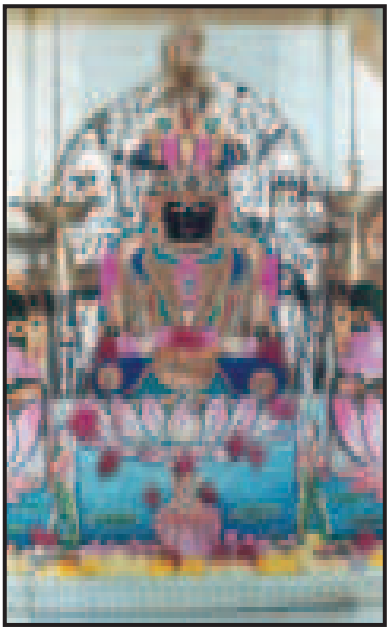

यह मंदिर उदयपुर सिटी रेल्वे स्टेशन से जयसमंद बाँसवाड़ा की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर करीब 100 मीटर भीतर की ओर स्थित है।

यह मंदिर अति प्राचीन है। यह पार्श्वनाथ प्रभु के 108 तीर्थों में से एक है।

इस मंदिर की निर्माण कला व मंदिर की बनावट को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर लगभग 2000 वर्ष पुराना है। लेकिन मंदिर व प्रतिमा में ऐसा कोई शिलालेख नहीं है, जिसके आधार पर निश्चित समय का उल्लेख किया जा सकें।

इस शिखरबंद मंदिर में प्रवेश करते समय दरवाजे के दोनों तरफ हाथी बने है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा (मूलनायक) 19'' ऊँची श्याम पाषाण की है। सर्प के छत्र के साथ 21'' और परिकर के साथ 41'' ऊँची है। यह पंच तीर्थी प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. श्री सुमतिनाथ या अनंतनाथ भगवान की प्रतिमा (मूलनायक के दाहिनी ओर) 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है तथा जिसका लांछन पक्षी बना हुआ है। लेकिन पक्षी का चिह्न कुछ अलग तरह का है। वर्तमान चौबीसी में पक्षी के लांछन की प्रतिमा सुमतिनाथ भगवान व अनंत नाथ जी के अतिरिक्त अन्य किसी तीर्थंकर का नहीं है इसलिये यह प्रतिमा सुमतिनाथ भगवान या अनंतनाथ भगवान की सम्भावित है। इसके नीचे कोई लेख नहीं है।
3. श्री धर्मनाथ स्वामी की प्रतिमा (मूलनायक के बाईं ओर) 19''ऊँची श्वेत पाषाण है। इसके नीचे यह लेख है :– ''वि.सं. 1699 वैशाख शुक्ल 9 उदयपुर वास्तव्य उपकेश लघु शाखाया ता. गांग गौत्रे पहुवा सेमरथ भार्या सुहागदे तत्पुत्र खेता नाथा

श्री धर्मनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठतं तपा.....श्री विजय देव सूरि (?)

निज मंदिर से बाहर निकलते समय सभा मंडप है, जिसमें कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है।

सभा मंडप से बाहर निकलते समय (बाहरी सभा मंडप में) दाहिनी ओर आलिए में :–

1. पार्श्वयक्ष की प्रतिमा 9'' ऊँची तथा गद्दी तक 13'' श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे कोई लेख नहीं है।
2. **बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में** पदमावती देवी की प्रतिमा 9'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे कोई लेख नहीं है।

इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर जैन महासभा द्वारा की जाती है। पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा चमत्कारी है, मनमोहक है तथा यदाकदा नागराज के दर्शन भी होते रहते है। प्रति वर्ष पोष दशमी को कार्यक्रम आयोजित होते हैं, यह मंदिर शिखरबंद मंदिर हैं।

❑❑❑

श्री शांतिनाथ पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर
हिरण मगरी, सेक्टर-11, उदयपुर

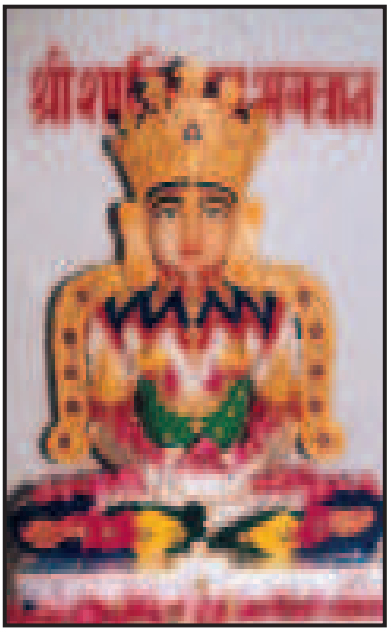

यह मंदिर उदयपुर सिटी रेल्वे स्टेशन से ऋषभदेव रोड से जयसमन्द रोड की ओर जाते समय दाहिनी ओर मुड़कर आलोक स्कूल के पास स्थित है। यह शिखरबंद दो मंजिला मंदिर है।

इस मंदिर को बने तीन वर्ष हुए है। इस मंदिर की भूमि वर्ष 1991 में नगर विकास प्रन्यास उदयपुर से निर्धारित मूल्य पर 5860 वर्ग फूट भूखण्ड आवंटित कराया। ट्रस्टीगण ने राशि एकत्रित कर मंदिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर सं. 2053 चैत्र कृष्णा 8 दिनांक 13.3.1996 को भूमि पूजन और शिलान्यास सं. 2054 वैशाख सुदि 6 दिनांक 24.4.1996 को कराया। प्रतिष्ठा संवत् 2058 वैशाख सुदि 6 दिनांक 29.4.2001 को सम्पन्न हुई।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 31'' ऊँची गुलाबी पाषाण (पिंक पाषाण) की है। इस पर लेख है :–

   ''शांतिनाथ जिन बिंब करापितं तपा. आ. श्री. विजय भुवन भानु सूरीश्वर जी शिष्य आ. जितेन्द्र सूरीश्वर उपदेशात् उदयपुर वास्तव्य स्वं. ख्यालीलाल जी धर्मपत्नी श्रीमती मोहनबाई पुत्री पिस्ताबाई स्मृत्यां पुत्र मोहनसिंह पुत्र–वधू चन्द्रकला पौत्र राजीव पुत्र वधू शीतल प्रपौत्र चिराग सुराणा दलाल परिवारेण उदयपुर वास्तव्येन प्रतिष्ठितं तपा. आ. कलापूर्ण सूरि आदिभि पंचदशमि आ. पूंगवै वि.सं. 2057 माघ शुक्ला 13 मगंल पुन्ये पावापुरी धाम तीर्थे राजस्थान।''

   इसके नीचे दीवार पर लिखा है :–

   ''प्रतिष्ठा शा. लालचन्द्र भेरूलाल पुखराज देवीलाल, मोतीलाल, पुनमचन्द्र, सोहनलाल, फूलचन्द्र, जसवन्तराज, हेमन्त कुमार, राजेन्द्र कुमार बेटा पोता श्रीमान् कस्तूरचन्द्र जी राठौड़ परिवार भानपुरावाला सूरत''

2. मूल नायक के दाहिनी ओर आदिनाथ भगवान की 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा

है। इस पर लेख है :–

''श्री आदिनाथ जिन बि. कारापितं तपा. आ. जितेन्द्रसूरि उपदेशात् पूज्य पिता श्री स्व. श्री समरथमल जी मेहता स्मृतो पुत्र घनरूपमल पुत्र वधू आशा पौत्र आलोक आदित्य महता परिवारेन उदयपुर वास्तव्य प्रतिष्ठितं तपा. आ. कला पूर्ण सूरीश्वर पंचदशभिः आ. पूंगवैः वि. 2057 माघ शुक्ला 13 मंगल पुन्ये पावापुरी घाम तीर्थे राजस्थान।'' इसके नीचे दीवार पर लेख है :

''प्रतिष्ठा शाह भवरेशजी भूरमल जी पत्नी विजया बेन, पुत्र विराट चिन्तन पोरवाल परिवार पिण्डवाड़ा।''

3. मूल नायक के बाईं ओर श्रेयांसनाथ भगवान की प्रतिमा 25'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''श्री श्रेयांसनाथ जिन बिंब कारापितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिजी उपदेशात् श्री श्वेताम्बर मूर्ति पूजक तपागच्छीय दादर जैन पौषधशाला ट्रस्टेन मुम्बई वास्तयेन प्रतिष्ठितं तपा. आ. कलापूर्ण सूरीश्वर आदिभिः पंचदशभिः आ. पूंगवै वि.सं. 2057 माघ शुक्ला 13 मगल पुन्ये शुभंभूयात्।

इसके नीचे दीवार पर लिखा है :–

''प्रतिष्ठा श्री भूरीलाल जी प्रेमबाई जी सुराणा द्वारा बसन्तीलाल शारदादेवी पुत्र पुत्रवधू गजेन्द्र धर्मेन्द्र पौत्र दमित मीत मिलन तनिष सुराणा प्रपौत्र वैशाख सुद 6 वि.सं. 2058''.

वेदी पर प्रासाद देवी बनी हुई है। इस पर लेख है :–

''ख्यालीलाल पुत्र जसवन्तलाल अनिल योगेश प्रपौत्र प्रकास मेहता उदयपुर वैशाख सुद 6'' दीवार पर लिखा हुआ है :– ''प्रतिष्ठा श्री बाबूलाल जी मोतीलाल जी पोरवाल परिवार सायरा–सूरत''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. श्री सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''श्री सुमतिनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री प्रेमसूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च जसवन्तलाल धर्मपत्नी पवन देवी पुत्र अनिल योगेश पलक पलाश दिक्षित महता नाई हाल– उदयपुर।

   वैशाख सुद 6 वि. सं. 2058 रविवारे''

2. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 6 X 4'' है। कोई लेख नहीं है।

   निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में 11'' ऊँची निर्वाणी देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री निर्वाणीदेवी प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च श्रीमती चन्द्र कला धर्म पत्नी मोहनसिंह जी पुत्र राजीव पौत्र चिराग सुराणा दलाल वै.शुद 6 वि.सं. 2058'' दीवार पर लिखा है ''प्रतिष्ठिता श्री रोशनलाल जी धर्म पत्नी मनोरमा देवी पुत्र राकेश कुशल बेटा पोता ताराचन्द्र जी पोरवाल सायरा वाला''

निज मंदिर के निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में 11'' ऊँची गरूड यक्ष की श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री गरूड यक्ष प्रतिष्ठितः तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च श्री सुखलाल जी की स्मृति में – धर्मपत्नी सनुदेवी पुत्र जयन्तीलाल सुरेन्द्र कुमार रोशन राजेश मेहता परिवार बडोदा बटपद्रक तीर्थ डूँगरपुर। ''दीवार पर लिखा हुआ है। ''प्रतिष्ठा श्री रोशनलाल धर्मपत्नी मनोरमा देवी पुत्र राजेश कुशल बेटा पोता ताराचन्द्र जी पोरवाल सायरा वाला''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर उत्तरी दीवार के आलिए में (सभा मंडप में)

1. मणिभद्र जी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''शासन देव मणिभद्र जी प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च संघवी बाबूलाल मोतीलाल जी धर्मपत्नी पानीबेन पुत्र हितेश बीना पौत्री साक्षी पोरवाल सायरा वैशाख सुद 6 वि.सं. 2058'' दीवार पर लिखा है प्रतिष्ठा श्रीमान् बंशीलाल जी धर्म पत्नी चन्द्रप्रभा सुपुत्र अशोक दिनेश पारिवाला उदयपुर वे. शु. 6 वि.सं. 2058''

2. इसी दीवार पर अन्य आलिए में सरस्वती देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री सरस्वती देवी प्रतिष्ठिता तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितच श्रीमती चोसरदेवी धर्म पत्नी स्व. श्री हजारीलाल जी पुत्र राजेन्द्र कुमार कान्ताबेन पौत्र अभिषेक पोरवाल उदयपुर।'' दीवार पर यह लेख लिखा है श्रीमती चोसर देवी धर्मपत्नी श्री स्व. हजारीलाल जी पुत्र राजेन्द्र कुमार पुत्र वधू कान्ताबेन पौत्र अभिषेक पोरवाल सिंघटवाड़िया परिवार उदयपुर।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में (दक्षिणी दीवार में) सभा मंडप में

3. श्री गौतम स्वामी की 27' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री गौतम स्वामी प्रतिष्ठतः संघवी भेरूतारक धाम तपा. आ. जितेन्द्र सूरि गुणरत्न सुरिभ्य कारितंच पिण्डवाडा वास्तव्य श्री भवरेश भूरमलजी पत्नी विजयाबेन पुत्र विराट चिन्तन पोरवाल दिनांक 29.4.01

4. इस दीवार पर अन्य आलिए में श्री पदमावती देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की

प्रतिमा है। इस पर लेख है श्री पद्मावती देवी प्रतिष्ठित तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच श्रीमती कुशलबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री भगवतसिंह जी पुत्र वीरेन्द्र प्रकाश, चन्द्र शेखर पौत्र हितेष प्रतीक शिखर निशु बोल्या उदयपुर।''

दीवार पर लिखा है प्रतिष्ठा :– ''श्री रोशनलाल जी शेषमल जी महात्मा केलवा वाले।''

भूतल पर मंदिर, जो शांतिनाथ भगवान के मंदिर के नीचे स्थित है, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 45'' ऊँची श्वेत पाषाण की (जिसमें परिकर व धर्णेन्द्र व पद्मावतीमाता की प्रतिमा सम्मिलित है) है। इस पर लेख है :–

   ''वि.सं. 2031 फाल्गुन कृष्ण 7 गुरै इद श्री पार्श्वनाथ बिंब भानपुरा वाला प्रागवाटज्ञातीय जैसलगौता राठौड़ गोत्रीय चन्दन मल गहरीलाल राकेश कुमार, तरूण कुमार, घीरजमलस्य पुत्र पौत्र प्रतिष्ठंत च केलवाडा श्री संघेन प्रतिष्ठित तपा. गच्छेश श्रीमद् विजय हीरसूरीश्वर सन्तान हितान्ते श्री हिमाचल सूरिभि श्री रस्तु।''

   दीवार पर लेख लिखा है :– ''श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा श्री गहरीलाल पुष्पाबेन राकेश सुनीता तरूण पायल हार्दिक दिक्षिता बेटा पोता स्व. श्री चान्दमल जी धीरजमल जी भानपुरा वाला वैशाख शुद 6 वि.सं. 2058''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. श्री आदिनाथ चौबीस तीर्थी प्रतिमा 12'' ऊँची है। इस पर लेख है श्री आदिनाथ चतुविशन्तिप्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेमभुवन भानुसूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च भानपुरा वास्तव्य गहरीलाल जी धर्मपत्नी पुत्र आदि परिवारेण हा. उदयपुर वि.सं. 2057 फाल्गुन शुक्ल 3 संघवी भेरूतारक धाम''
2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का है। इस पर लेख है :– श्री सिद्ध चक्र यंत्रं प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेमभुवन भानुसूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरि .....गुणरत्नसुरीश्वरभ्यां च भीमराज जी भगवान जी धारीवाल भेरूतारक धाम तीर्थ आबूरोड तलेटी अनादरा वि.सं. 2057 फाल्गुन शुक्ल 3''
3. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 5 X 3'' है। इस पर लेख है :–

   प्रतिष्ठितं भीमनगरें वि.सं. 2055 चेत्र कृष्णा 4 शनिवासरे शाह भीमराज भगवानचन्द्र धारीवाल गढ़ सिवाणा

   निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में सभा मंडप में श्री नाकोड़ा भैरवजी की 17'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''श्री नाकोड़ा भैरव प्रतिष्ठितः तपा. आ. श्री जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च सायरा निवासी सोलंकी गोत्रीय मोहनदेवी धर्मपत्नी स्व. संघवी ताराचन्द्र पु. तखतमल,

रोशनलाल गौतमकुमार, ख्यालीलाल पौत्र राकेश पडपौत्र कुशल पोरवाल वे. शुद 6 वि.सं. 2058''

इस दीवार पर लेख है :–

''श्री रमेश कुमार जी बारोला धर्मपत्नी श्रीमती शान्ता देवी रवि पुत्र रितिक, रोनक पौत्र उदयपुर।

मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में (दक्षिणी दीवार में) उत्तर मुखी भौमिया जी महाराज की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण प्रतिमा है।

इस पर लेख है :–

''श्री भोमिया जी प्रतिष्ठित तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच भानपुरा वास्तव्य गहरीलाल धर्मपत्नी पुष्पा बेन के पुत्र राकेश तरूण हार्दिक बेटा पोता स्व. चन्दनमल जी धीरजमल जी पोरवाल वे. शुद 6 वि.सं. 2058.''

दीवार पर लिखा है। प्रतिष्ठाः श्री कमल किशोर जी गोलचा धर्म पत्नी श्रीमती चन्द्रकला पुत्र मनीष, मितेश गोलचा परिवार''

इस मंदिर के लिये ट्रस्ट बना हुआ है जो श्री हिरण मगरी जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ के नाम से जाना जाता है। मंदिर ट्रस्ट के संरक्षक/अध्यक्ष, ध्वजा के लाभार्थी श्री मोहनसिंह जी सुराणा दलाल मंदिर की देख–रेख करते हैं। इस मंदिर के पास भव्य उपाश्रय प्रवचन हॉल है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, हिरण मगरी सेक्टर-13, (बाबेलों का मंदिर), उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर से ऋषभदेव तीर्थ जाने वाले राष्ट्रीय मार्ग के मुख्य सड़क के किनारे गोविन्द नगर नामक कॉलोनी में स्थित है।

यह श्री चतुरसिंह बाबेल द्वारा निर्मित है, जमीन भी उनकी निजी थी तथा वर्तमान में मंदिर की देख–रेख, लेखा कार्य श्री चतुरसिंह बाबेल की धर्मपत्नी द्वारा किया जाता है। इस शिखरबंद मंदिर का निर्माण करीब 16 वर्ष पूर्व हुआ है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा 29'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''श्री आदिनाथ बिंब का कारितं उदयपुर नगरीय वाशींदा बाबेल गोत्रे श्री जसकुवर गोविन्दसिंह जी वंशज चतुरसिंह दिलीप कुलदीप नरेन्द्र हेमन्त विक्रम किरणदेवी कुसुम चेतना, उर्मिला गरिमा रूपेल, हनी, तपा. गच्छे आ. प्रेमसूरिजी भुवन भानु सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरि णां सुदपदेशात प्रतिष्ठितं उमेदाबाद नगरे आ. रामचन्द्र सूरि पं. भद्रंकर वि.पू.आ. प्रद्योतन सूरि प. कल्याण विजय शिष्य मु. मुक्ति विजय जी वि.सं. 2045 ज्येष्ठ सुदि 10 शनिवार।''

2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री नमिनाथ भगवान की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

ओसवाल बाबेल गोत्रे श्री जसकुंवर गोविन्दसिंह जी वंशज चतुरसिंह दिलीप कुलदीप नरेन्द्र हेमन्त प्रतिष्ठितं उमेदाबाद नगरे आ. रामचन्द्र सूरि शिष्य जितेन्द्र सूरि सदुपदेशात् आचार्य रामचन्द्र सूरि शिष्य पं. भद्रंकर वि.वि.सं. 2045 ज्येष्ठ सुदि 10 शनिवार।''

3. मूलनायक के बाईं ओर महावीर स्वामी की प्रतिमा 18'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''ओसवाल गोत्रे बाबेल जसकुँवर गोविन्दसिंह जी वंशज चतुरसिंह दिलीप कुलदीप नरेन्द्र हेमन्त जितेन्द्रसूरि सदुपदेशात उमेदाबाद नगरे आ. रामचन्द्र सूरि शि. प. भदकर वि. सं. 2045 ज्येष्ठ शुदि 10 शनिवार।''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. चन्द्र प्रभस्वामी की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर निम्न लेख है :–

   ''गढ सिवाना वास्तव्य कूकूं चौपड़ा गौत्रीय बहादूरमल अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती सुहादेवी दम्पत्ति युगलेन शुभम (एक तरफ)

   वि. संवत् 2045 वैशाख सुदि 5 बुधवार लुणावा भद्रंकर नगरे चन्द्र प्रभ स्वामी जिन बिंब प्रतिष्ठित प्रद्योतन सूरि जितेन्द्र सूरिभ्यां कारितं।''.

2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इस पर लेख है :–

   ''वि.सं. 2045 वैशाख सुद 5 लूणावा भद्रकरनगरे सिद्ध चक्र जिन प्रतिबिंब प्रतिष्ठतं प्रद्योतनसूरि जितेन्द्र सूरिभ्यां कारितं ,गढसिवाणा वास्तव्य धारीवाल गोत्रीय केशरीमल अखण्ड सौभाग्यवती श्रीमती मीकू देवी दम्पत्ति युगलेन शुभम्।''

3. अष्टमंगल यंत्र 6'' X 4'' के आकार का है। इस पर लेख है :– ''वि.सं. 2045 वैशाख सुदि 5 बुधे अष्टमंगल पाटला अभिषित्त लुणावा भद्रंकर नगरे प्रद्योतनसूरि जितेन्द्र सूरि निश्राय कारितां च सिवाणा वास्तव्य ललवानी गौत्रे रघुनाथ मल जी सुत वरदीचन्देन स्व धर्मपत्नी... सौभाग्यवती श्रीमती बक्शु देवी श्रेयोर्थम्।

   निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर गोमुख यक्ष की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''प्रतिष्ठा तपा. आ. प्रेमसूरि भुवन भानु सूरि शिष्या बाबेल गोत्रे किरण देव्या उदयपुर वि.सं. 2046 कार्तिक सुदि 5''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमा 16'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''प्रतिष्ठा तपा आ. प्रेमसूरि भुवन भानु सूरि शिष्या बाबेल गौत्रे किरण देव्या उदयपुर वि.सं. 2046 कार्तिक सुदि 5''। इसके पास ही चौक परिसर में एक शिखरबंद शिव मंदिर है।

मंदिर के सामने निर्माणकर्ता श्री चतुरसिंह जी बाबेल की मूर्ति श्वेत पाषाण की स्थापित है। इस मंदिर की देख–रेख श्री चतुरसिंह जी बाबेल के वंशज करते है।

❑❑❑

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर
हिरण मगरी, सेक्टर-14, उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर से ऋषभदेव तीर्थ की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर उदयपुर से करीब 5 किलोमीटर दूर गोवर्धन विलास के बाईं ओर सामुदायिक भवन के सामने स्थित है।

इस शिखरबंद मंदिर का निर्माण हुए केवल एक वर्ष हुआ है।

यह मंदिर 50 x 25 फीट (1250 वर्गफीट) के क्षेत्र में बना है और पास ही में इतने ही क्षेत्रफल का एक भूखण्ड उपाश्रय के लिए है। दोनों ही भूखण्ड निजी रूप से व्यक्ति विशेष से करीब दो लाख में क्रय किए गए, जिसमें से उपाश्रय का भूखण्ड श्री अमृतलाल मूथा निवासी मण्डार (एल.के. ट्रेडिंग कम्पनी, मुम्बई) द्वारा क्रय कर समिति को भेंट किया।

इस मंदिर को संचालित करने के लिये श्री शांतिनाथ जैन मंदिर समिति बनी है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 31'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री शांतिनाथ बिंब प्रतिष्ठितं तपागच्छीय आ. जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी पट्ट परंपरा सिद्धान्त महोदधि आचार्य श्री प्रेमसूरीश्वर पट्टधर वर्तमान तपोनिधि आ. भुवन भानु सूरि शिष्य प्रतिष्ठाचार्य जितेन्द्र सूरि कारितंच अ. सौ. जयवन्ती बेन धर्मपत्नी नरेन्द्र कुमार जी पुत्र सिद्धार्थ केतन शा. स्व. पिता श्री मणिलाल जी मातु श्री हंसा बेन धर्म आराधना निमित्ते वतनधोता सकलाणा पालनपुर हाल सूरत गुजरात माघ कृष्णा 8 वि.सं. 2059 मरिलीनगरे। वेदी पर यह लेख है। प्रतिष्ठा :– ''स्व. नवीनदास चतुरभाई स्व. मणीलाल चतुरभाई शाह की स्मृति में नरेन्द्र मणिलाल हेमन्त मणिलाल नगीनदास भरत मणिलाल शाह''।

   मूलनायक के दाहिनी ओर वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– ''वासुपूज्य स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं तपागच्छीय आ. जगच्चंद्र

सूरीश्वरजी पट्ट परंपरा सिद्धान्त महोदधि आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी पट्टधर तपोनिधि आ. भुवन भानु सूरि शिष्य प्रतिष्ठाचार्य जितेन्द्र सूरिय कारितंच पिता उमरावमल जी माता शान्ता बेन सुपुत्र पवनकुमार अरूणकुमार विजयकुमार अरविन्द कमल श्रीमाल जयपुर हाल नवसारी''

वेदी पर लेख प्रतिष्ठा :– ''स्व. नवीनदास चतुरभाई स्व. मणिलाल चतुरभाई शाह की स्मृति में नरेन्द्र मणिलाल हेमन्त नगीनदास भरत मणिलाल शाह''

3. मूलनायक के बाईं ओर ऋषभदेव स्वामी की 21'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री आदिनाथ बिंब प्रतिष्ठितं तपागच्छाचार्य विजय प्रेम भुवनभानुसूरि शिष्य मेवाड़ देशोद्धारक जितेन्द्र सूरिभि कारितन्च पिता उमरावमल जी माता शान्ता बेन सुपुत्र पवन कुमार अरूण कुमार विजयकुमार अरविन्द कमल श्रीमाल जयपुर, हाल नवसारी''

वेदी पर लेख हे प्रतिष्ठा :– ''कन्हैयालाल पुत्र नरेश कुमार पौत्र कमलेश श्रेणिक आनन्द बेटा पौता देवीलाल जी धोका निवासी सायरा''

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. वासुपूज्य स्वामी की प्रतिमा 9'' ऊँची है। इस पर लेख है :–

–– वासुपूज्य स्वामी बिंब प्रतिष्ठितं तपागच्छ आचार्य श्री जितेन्द्रसूरिभिः कारितंच नवसारी निवासी मदन बेन मुल्तान दिनेश सन्तोष नवीन....भरत विक्रम श्रीमाल'' मरोली माघ कृष्ण 8 वि.सं. 2050।

2. धातु का सिद्ध चक्र यंत्र 6'' ऊँचा है। इस पर लेख है :–

''श्री सिद्धचक्रयंत्रं प्रतिष्ठितं तपागच्छ आ. श्री प्रेम भुवनभानुसूरीश्वरस्य शिष्य आ जितेन्द्रसूरिभि कारितंच सेवन्तीबेन मंगुभाई शाह जितेष भाई गौतम भाई निशा जैनी प्रीत गौतमभाई अनोखी हितेष भाई माघ कृष्ण 8 वि.सं. 2059 भरौली।

वेदी के बीच लक्ष्मीदेवी की मूर्ति स्थापित है। इस पर लेख है :– ''श्री दिलीप बिनोद शकुन्तला।'' बेदी पर लेख है :– प्रतिष्ठा – रोशनलाल प्रकाशचन्द जैन सेक्टर 14, उदयपुर''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में निर्वाणी देवी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :

''श्री निर्वाणी यक्षिणी प्रतिष्ठिता निर्मलचन्द्र पुत्र अभीष अनिल महात्मा से. 11, आलिए के नीचे दीवार पर लेख है :– प्रतिष्ठा रोशनलाल ताराचन्द सायरावाला।''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में मणिभद्र जी की 13'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री मणिभद्रः प्रतिष्ठितंः तपागच्छे आ. जितेन्द्र सूरिभिः स्व. श्री धनराजजी उत्तमचन्द्र रतनलाल राजेन्द्र कुमार फूलचन्द्र मितुलकुमार छाजेड़ देवगढ मदारिया हाल अहमदाबाद''

दीवार पर लेख है : – प्रतिष्ठा राजेन्द्र कुमार छाजेड़ निवासी देवगढ़ मदारिया।

सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर (दक्षिणी दीवार में) एक आलिए में श्री नाोड़ा भैरव जी की 15'' ऊँची पीत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– ''श्री नाकोडा भैरव प्रतिष्ठितं तपागच्छीय आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिभि सुरेशचन्द्र चंचल बेन पुत्र मनोज, हेमलता, धर्मेन्द्र, बनीता पौत्र आदिति, ऋषभ, लक्षिता, नमन महात्मा से. 14, उदयपुर वि.सं. 2060''

दीवार पर लेख है :–

''कन्हैयालाल देवीलाल जी धोका पुत्र नरेश कुमार मुकेश कुमार पौत्र कमल श्रेणिक आनन्द नि. सायरा।''

सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर (उत्तरी दीवार में) एक आलिए में श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है कि वि.सं. 2052 वै.शु. 6 श्री शांतिनाथ बिंब प्रतिष्ठितं तपागच्छी आ. प्रेम भुवन भानु सूरि शिष्य आ. जितेन्द्र सूरि सा. श्री..... रतन प्रभाश्री शिष्या साध्वी मोक्ष नन्द श्री जी प्रेरणया स्व. हरषीक भाई ध.प. सूरज बैन''

दीवार पर लेख है :– ''प्रतिष्ठा–सुरेश कुमार पुत्र मनोजकुमार, धर्मेन्द्रकुमार पौत्र ऋषभ नमन महात्मा नि. उदयपुर''

दीवार पर लेख है :– ''ध्वजा कलश के लाभार्थी माता पिता मांगीबाई हगामीलाल डॉ. सुरेश कुमार, चंचलबाई पुत्र पुत्रवधु मनोज हेमलता धर्मेन्द्र, वनिता पौत्र पौत्रीय आदिति ऋषभ अक्षिता नमन महात्मा खमनोर। हाल–उदयपुर''

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर
शिवाजी नगर, उदयपुर

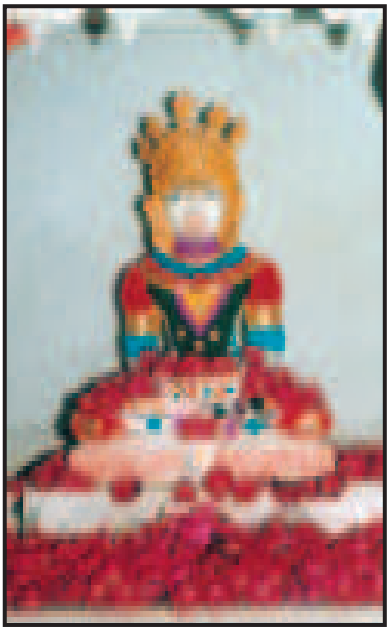

यह मंदिर सूरजपोल से उदयपुर सिटी स्टेशन की ओर जाने वाली मुख्य सड़क के दाहिनी ओर थोडी दूरी पर स्थित है, यह मंदिर घूमटबंद व पाँच वर्ष पुराना है।

इस मंदिर की भूमि नगर परिषद् सामुदायिक केन्द्र के लिये थी, लेकिन रास्ता होने के कारण दो भागों में विभक्त हो गया। एक हिस्से में पुस्तकालय बन गया और दूसरे हिस्से में कॉलोनी के सदस्यों ने हनुमान जी व शिवजी का मंदिर बनाया। इससे प्रेरित होकर पास की कॉलोनी के जैन बन्धुओं ने जैन मंदिर बनवाने का निर्णय लिया। इस प्रस्ताव को लेकर धन संग्रह कर आ. श्री. जितेन्द्र सूरि जी से सम्पर्क किया और शनैःशनैः मंदिर का कार्य पूर्ण हुआ और वि.सं. 2056 में द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल 7 को प्रतिष्ठा समारोह सम्पन्न हुआ।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :–

1. श्री आदिनाथ भगवान (मूलनायक) की प्रतिमा 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री आदिनाथ बिबं प्रतिष्ठित तपा. आ. प्रेम भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य आ. जितेन्द्र सूरिभिः नाई वास्तव्य महता गौत्रय श्री चान्दमल ख्यालीलाल पुन्य स्मृतो पुत्र जसवन्त सिंह धर्मपत्नी पवन बाई पौत्र अनिल योगेश प्रपौत्र पलाश इत्येन हाल मुकाम उदयपुर वि.सं. 2056 द्वितीय ज्येष्ठ शुदि 7 रविवासरे।

2. मूलनायक के दाहिनी ओर श्री शांतिनाथ भगवान की 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य आ. जितेन्द्र सूरिभिः जगच्चन्द्र सूरिभ्यां भद्रंकर नगरे कारितंच श्री हुल्लासी बेन पुखराजजी पुत्र शान्तिलाल अरूणा प्रणय नरेश भावित विमिता कश्यप गौत्रीय श्री शिवगंज वास्तव्य''

दीवार पर लिखा है :–

''स्वर्गीय पिता श्री ख्यालीलाल जी व माता श्रीमती मोहनबाई की स्मृति में पुत्र श्री सुन्दरलाल पत्नी तेजकुमारी दलाल ने श्री शांतिनाथ भगवान को विराजमान किया।

3. मूलनायक के बाईं ओर 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

''श्री महावीर स्वामी जिन बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र जगच्चंद्र सूरि कारितंच बेडा निवासी कारासिया गोत्रीय लक्ष्मीबाई चुन्नीलाल पुत्र केसरीमल भा. फेन्सीबाई पौत्र प्रमोद रणजीत वि.सं. 2051''

प्रतिष्ठा – स्व. श्री भूरीलाल जी व माता श्री प्रेम कुंवर की स्मृति में पुत्र बसन्तीलाल पुत्रवधू शारदा देवी पौत्र गजेन्द्र रविन्द्र धर्मेन्द्र सुराणा वि.सं. 2056 ज्येष्ठ सूदि 7 रविवार 20.6.1999 वेदी के नीचे लक्ष्मीदेवी की मूर्ति श्याम पाषाण की है। इस पर लेख है ''स्व. श्री गणेशलाल जी धुप्या की स्मृति में सोहनबाई पुत्र शांतिलाल जी जीवन देवी अरूण मंजु नरेश धुप्या परिवार

धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ :–

1. श्री महावीर स्वामी की चौबीस तीर्थी प्रतिमा 12'' ऊँची है। इस पर लेख है :– ''श्री महावीर जिन चतुर्विंशति प्रतिष्ठिंता तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि : वि.सं. 2051 चैत्र शुक्ला 4 शुक्रे कारितन्च तखतगढ़ वास्तव्य किरणकुमार भा. संगीताभ्या नागेश्वर तीर्थे।

2. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 6'' व्यास का है। इस पर यह लेख है :–

''वि.सं. 2045 वैशाख शुक्ला 5 बुधै लुणावा भद्रंकर नगरे सिद्धचक्र जिन बि. प्रतिष्ठितं प्रद्योतसूरि जितेन्द्र सूरिभ्यां कारितंच सिवाणा वास्तव्य घारीवाल भगवानचन्द्र सुतेन भीमराजेन स्वं. भार्या अ. सौ. चूकी देव्या श्रेयोर्थं''

3. अष्ट मंगल यंत्र जिसका आकार 6'' X 4'' है। इस पर लेख है :–

''वि.सं. 2054 वैशाख शुक्ला 5 बेधै अष्ट मंगल पाटली अभिषित्ता लुणावा भद्रंकर नगरे प्रद्योतसूरि जितेन्द्र सूरि निश्रायान् कारितंच गढ़ सिवाणा वास्तव्य धारीवाल गौत्रीय स्व. भगवानचन्द्र सुत स्व. पुखराज श्रेयोर्थ वत्पुत्रे गोतम हसंमुख दिनेश कुमार शुभं भूयात्।''

परिक्रमा परिसर की ओर उत्तरी दीवार के आलिए में गौमुख यक्ष की 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

1. श्री गोमुख यक्षः प्रतिष्ठतः तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच स्व. श्री ख्यालीलाल की स्मृति में पुत्र सुन्दरलाल दलाल। नीचे लिखा है प्रतिष्ठा स्व. पिता श्री गणेशलाल जी धुप्या की स्मृति में माता श्रीमती मोहनबाई पुत्र शान्तिलाल बसन्त कुमार।

2. श्री नाकोड़ा भैरव जी (पूर्वी दीवार के आलिए में) की प्रतिमा 15'' ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

   ''श्री नाकोड़ा भैरवः प्रतिष्ठितः तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितंच श्री सोहनलाल पुत्र भंवरलाल जी सुरेन्द्र पौत्र जितेन्द्र महता परिवार नाईवाला जेष्ठ सुदि 7 वि.सं. 2056''

   नीचे लिखा है :– ''प्रतिष्ठा श्री सोहनलाल पुत्र भंवरलाल जी सुरेन्द्र पौत्र जितेन्द्र भोपालसिंह पडपोत्र अपूर्व कार्तिक महता नाई वाला''

3. **पूर्वी दीवार के आलिए में** श्री मणिभद्र जी की प्रतिमा 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है श्री मणिभद्रः प्रतिष्ठतः तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच स्वर्गीय तेजसिंह जी की स्मृति में धर्मपत्नी बादामदेवी पुत्र लहरसिंह बोल्या बीना देवी, महेन्द्रसिंह चन्द्रकला बोल्या द्वारा जेठ सूदि 7 वि.सं. 2056

4. **दक्षिणी दीवार के आलिए में** 11'' ऊँची श्याम पाषाण की चक्रेश्वरीदेवी की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

   ''श्री चक्रेश्वरी बिंब प्रतिष्ठितं तपा. आ. श्री जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच स्व. श्री गणेशलाल की स्मृति में धर्मपत्नी सोहनबाई पुत्र शान्तिलाल बसन्त–

5. दक्षिणी दीवार में ही अन्य आलिए में श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की प्रतिमा 11'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं है।

दीवार पर लेख लिखा है :–

प्रतिष्ठा – स्वगीर्य पिता श्री ख्यालीलाल जी व माता श्री मोहनबाई की स्मृति में पुत्र श्री सुन्दरलाल पत्नी तेजकुमारी दलाल ने श्री पार्श्वनाथ को बिराजमान कराया वि.सं. 2056 जैठ सुदि 7

इस मंदिर की देख–रेख श्री आदिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर समिति, शिवाजी नगर, उदयपुर द्वारा की जाती है। मुख्य कार्यकर्त्ता बसन्तीलाल जी सुराणा है।

❑❑❑

श्री वासुपूज्य स्वामी का मंदिर (दादावाड़ी) सूरजपोल, उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर का प्रमुख स्थल सूरजपोल के पास ही दाहिनी ओर स्थित है।

यह मंदिर पुराना था। शिखरबंद 6 वर्ष पूर्व बना है, इस भूमि पर एक छतरी में पार्श्वनाथ भगवान की व चार गुरु पादुका की स्थापना संवत् 1855 में हुई थी। यह दो मंजिला खरतर गच्छीय मंदिर है।

इस मंदिर के लिये दोशी परिवार (कर्माशाह वंशज) ने 5.25 बीघा जमीन क्रय कर दो हिस्सों में रजिस्ट्री करायी और चरण पादुका स्थापित करा एक यति को मुकर्रर कर दिया बाद में श्री यति जी द्वारा जमीन को अलग–अलग चरण में बेचना प्रारम्भ कर दिया था। इस पर दोशी परिवार ने न्यायालय (महाराणा की न्यायालय) में वाद प्रस्तुत किया था। वाद का निर्णय दोशी परिवार के पक्ष में होने से यति को बेदखल कर एक ट्रस्ट बनाकर जमीन को ट्रस्ट को सुपुर्द कर दी। मंदिर परिसर में उपाश्रय दुकानें, धर्मशाला बनी हुई है। इसकी पत्रावली श्री दलपतसिंह जी दोशी के पास उपलब्ध है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री वासुपूज्य भगवान (मूलनायक) की प्रतिमा 41'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। परिकर की ऊँचाई 67'' है। इसके नीचे यह लेख है :– ''बृहत्खरतरगच्छे आचार्य श्री जिन कान्तिसागरसूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठापितं उदयपुर स्थित सूरजपोल दादावाडी श्री वासुपूज्य जिन बिंब स्वर्गीय श्री किशनलाल जी दलाल की पुण्य स्मृर्तो भार्या सागरबाई पुत्र पुत्रवधू शान्तिलाल सुशील, डॉ. बसन्तीलाल– आभा पौत्र गौरव दलाल परिवारेण कारापितं वि.सं. 2053 माघ शुक्ला 11 जैसलमेर नगरे अंजन कृते शुभम् भवतु श्री सघस्प अमरसागर दिनांक 17.12.1996.

दीवार पर प्रतिष्ठा लेख लिखा है :–

वि.सं. 2054 वै. शुक्ला 6 दिनांक 12.5.1997 सोमे उदयपुर परमात्मा श्री वासुपूज्य

भगवान बिंब प्रति. खरतरगच्छ आ. जिन कान्तिसागर सूरीश्वर शिष्य मणिप्रभ सागरेण स्व. श्री किशनलाल जी माता–पिता इन्द्रबाई मोतीलाल जी सागरबाई (पत्नी) शान्तिलाल–सुशीला डॉ. बसन्तीलाल– आभा पुत्र पुत्रवधू गौरव पौत्र दलाल परिवारेण कारापितं

2. श्री सुमतिनाथ भगवान (मूलनायक के दाएँ) की प्रतिमा 29'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''बृहत्खरतरगच्छे आ. कान्तिसागर सूरीश्वर शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठित उदयपुर स्थित दादावाडीस्य श्री सुमतिनाथ बिंबं पिता श्री ख्यालीलाल जी दलाल पुत्र सुन्दरलाल – तेज कुमारी – पुत्री स्नेहलता कावडिया तथा दलाल परिवारेण कारापितं वि.सं. 2053 माघ शुक्ला – 11 तारीख 17.12.1996 दीवार पर लेख लिखा है प्रतिष्ठा :–

''स्व. श्री अम्बालाल जी जीतबाई की पुण्य स्मृति में पुत्र तेजसिंह–कैलाशबाई पौत्र श्री सुरेन्द्र–प्रीति सुरेश–अनिता प्रपौत्र श्री हर्ष हितेष रॉची दोशी परिवारेण कारापिंत''

3. श्री कुंथुनाथ भगवान (मूलनायक के बाएँ) की प्रतिमा 29'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– बृहत् खरतरगच्छे आ. जिन कान्ति सागर सूरीश्वर शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठितं उदयपुर सूरजपोल दादावाड़ी श्री कुंथुनाथ स्वामी बिंब पिता श्री ख्यालीलाल जी दलाल पत्नी मोहनबाई की पुण्य स्मृति पुत्र सुन्दरलाल भार्या तेजकुमारी सुपुत्री प्रभा कटारिया अमिता दलाल परिवारेण वि.सं. 2053 माघ शुक्ला 11

दीवार पर लिखा है प्रतिष्ठा :– स्व. श्रीमती प्रेमलता की स्मृति में श्री बलवन्तसिंह करणसिंह सुरेन्द्रसिंह आशीष अनिता इन्दु निर्मला शिवानी पारख परिवारेण करापितं''

चल धातु की उत्थापित प्रतिमा व यंन्त्र :–

1. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है :– सेठ जेठमल भ्राता रूपचन्द्र – किशोर चन्द्र मीठालाल जी का अंजनशलाका स्वस्ति श्री वर्ष पोष विद 6 दिने सिंघवी बसन्तीलाल हस्तीमल बेटा पोता राजेन्द्र कुमार अशोक कुमार महावीर प्रसाद का रितु श्री कैलाश सागर सूरीश्वर आ. श्री कल्याण सागर सूरीश्वर आ. पद्मसागर सूरीश्वर प्रतिष्ठित।

2. महावीर स्वामी की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इसके पीछे यह लेख है :– ''महावीर जिन बिंब कारितं पिण्डवाड़ा वास्तव्य मूलचन्द्र जी सुत हजारीलाल जी तत्पुत्र रमण विनोद प्रतिष्ठितंच आ. श्री विजय प्रेम भुवन भानुसूरि शिष्य जितेन्द्रसूरिभि सादडी नगरे बाबूलाल रांका कारितं महोत्सवे वि.सं. 2049 मृग शुक्ला 10 शुक्रे शुभं''

3. गोलाकार सिद्धचक्र यंत्र 5'' व्यास का है। इसके पीछे यह लेख है :– ''वीर सं. 2519

वि.सं. 2049 वै. शु. 5 बुधवार प्रभाते इन्द्र सिद्ध चक्र यंत्रं संघरथवीर प.पू. आ. विजय सिद्धिमेघ मनोहरसूरीणां सकलागम रहस्यभेदी प.पू. आ. विजयदान प्रेम रामचन्द्र सूरीणां प्रासादात् प्रतिष्ठितं आ. विजय भद्रंकर हिमान्सु नवरत्न भुवन भानु जगच्चन्द्र सूरिभि परिवारेण राजनगरे बासणा मध्ये श्री जैन श्वेत. मूर्ति पूजक जैन संघ कारितं अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव कारापितं आ. जितेन्द्रसूरि उपदेशात् सिवाणा निवासी श्रेष्ठि भीमराज भगवानचन्द्र धारिवाल स्व. वर्षी तपस्य पूर्णाहुति प्रसंग शुभ भवतु''

4. श्री शांतिनाथ भगवान की पंच तीर्थी प्रतिमा 9'' ऊँची है। इसके पीछे यह लिखा है:– ''श्री शांतिनाथ पंच तीर्थी प्रतिष्ठं तपा. आ. जितेन्द्र सुरिभिः कारितन्च मोतीलाल जी, बसन्तीलाल धर्मपत्नी सुशीला बाई पौत्र मनोहर पवन तेजसिंह अनिता प्रपोत्र अरूण गौरव उदयपुर वि.सं. 2056 फाल्गुन कृष्णा 3 इसवाल, उदयपुर।

5. 6'' X 7'' आकार के अष्टमंगल यंत्र है। इसके पीछे लेख है :– ''वी.सं. 2519 वि.सं. 2049 वे.शु. 5 बुधवासरे इन्द्र अष्ठ मंगल यंत्र संघरथ वीर पं. पू. आ. विजय सिद्धि मनोहर सूरितस्य सकलागम रहस्य भेदी प. पू. आ. विजयदान प्रेमरामचन्द्र सूरितांच प्रासादात् प्रतिष्ठितं आ. विजय भद्रंकर हिमान्सु नवरत्न भुवन भानु जगच्चन्द्र सूरिभि सपरिवारेण राजनगरें वासणा मध्य श्री जैन श्वेत. मूर्ति पूजक जैन संघ कारित आंजन प्रतिष्ठा महोत्सव कारितं आ. जितेन्द्र सूरिभि उपदेशात सिवाणा निवासी श्रेष्ठि भीमाराज भगवानचन्द धारीवालेन स्व. वर्षी तपस्यपूर्णाहुति शुभ भवतु''

6. गोलाकार बीस स्थानक यंत्र 7'' व्यास का है। इसके पीछे लेख है :– श्री खुशालचन्द्र नानजी शाह ना धर्म पत्नी अ.सो. चन्द्र प्रभा बेन ना बीस स्थानक तप निमिते पुत्र जगनेश सचिन पुत्री मनीषा पुत्रवधु अंजु दोहित्री अमी आदि परिवार तरफ थी आ. बीस स्थानक यंत्र भराया छे। वि.सं. 2051.....इच्छलकरणजी हा. सांगली प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्रसूरिभि सं. 2053 माघ शुक्ला 13

7. तांबे का ऋषि मंडल यंत्र 5'' वर्गाकार है। इस पर लेख है :– ''ऋषिमंडल यंत्रं प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभिः कारितंच उदयपुर वास्तव्य बापना गोत्रीय बसन्तीलाल भार्या सुंशीलाबाई पुत्र मनोहरसिंह भा. पवनदे तेजसिंह मा. अनिता पौत्र अरूण कुमार गौरव कुमार वि.सं. 2051 चैत्र शुक्ल 4

निज मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर आलिए में :–

श्वेत पाषाण का गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र, जिसका आकार 31'' है।

इस पर लेख है :–

वि.सं. 2054 वैशाख शुक्ला 6 सोम उदयपुर नगरे श्री सिद्धचक्रयंत्र प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठिपितं उदयपुर स्थित दादावाड़ीना स्व. पिता श्री चतरसिंह जी माता नजरदेवी लोढ़ा स्मृतों पुत्र चन्द्रसिंह पौत्र राजेन्द्र सिंह आदित्यकुमार प्रवीण कुमार प्रपौत्र चिराग लोढा

परिवार कारापितं

निज मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर आलिए में गोलाकार 31'' व्यास का स्थानक यंत्र श्वेत पाषाण का है। इस पर लेख है :–

श्री बीस उदयपुर नगरे श्री बीस स्थानक यंत्र प्रतिष्ठित खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्ण मणिप्रभ सागरेण प्रतिष्ठितं उदयपुर स्थित दादावाडीमा स्व. पितामह मदनसिंह जी स्व. पितामहि प्यारबाई स्व. पिता जोरावरसिंह जी लघुभ्राता स्व. सुरेश कुमार स्मृतौ माता गुलाब बाई प्रेरणाय पुत्र भोपालसिंह पत्नी रोशनदेवी अनुज भार्या ललिता पुत्र राकेश पुत्र वधु सजना पत्नी राजेश रितेष पुत्री मोनिका पौत्री तनिषा अनुज पुत्र पवन आकाश दलाल परिवारेण कारितम्।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में प्रचण्डा देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :–

वि.सं. 2054 वै.शु. 6 उदयपुरे श्री प्रचण्डा यक्षिणी बिंब प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण श्री जसवन्त सिंह भा. पवनदेवी पुत्र अनिल योगेश महता उदयपुर निवासीय कारापितं।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में कुमार यक्ष की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके नीचे लेख है :– वि.सं. 2054 वै. शु. 6 उदयपुरे श्री कुमार यक्ष बिंब प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आचार्य जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण स्व. पिता भूरीलाल जी माता प्रेम बाई सुराणा स्मृतौ पुत्र बसन्तीलाल पुत्रवधू शारदा प्रपौत्र गजेन्द्र राजेन्द्र रवीन्द्र सुराणा

निज मंदिर से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर आलिए में पश्चिमी दीवार में अजितनाथ भगवान की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2054 वै. शुक्ला 6 उदयपुरे श्री अजितनाथ बिंब प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागरसूरि शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागरेण स्व. पिता श्री नन्दलाल जी पत्नी सौभाग्य देवी भ्राता स्व. लक्ष्मीलाल जी भार्या कमलादेवी पुत्र दलपतसिंह भा. निर्मला देवी गोवर्धनसिंह भा. मंजु देवी प्रपौत्र मनीष पराग दोशी (कर्माशाह दोशी वंशज) परिवारेण कारापितं।

इसी तरह निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर आलिए में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– वि.सं. 2054 वै.शु. 6 उदयपुरे श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं।

खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागरसूरि शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागरेण स्व. पिता श्री नन्दलाल जी पत्नी सोभाग्यदेवी भ्राता स्व. लक्ष्मीलाल जी भा. कमला देवी पुत्र दलपतसिंह भा. निर्मला देवी–गोवर्धनसिंह भा. मंजुदेवी पौत्र मनीष पराग दोशी (कर्माशाह दोशी वंशज) परिवारेण कारापितम्''

पार्श्वनाथ भगवान के आलिए के पास उत्तरी पश्चिमी कोने की ओर श्वेत पाषाण की 32'' वर्गाकार एक वेदी है। इस वेदी पर निम्न चरण पादुकाएँ स्थापित है :–

1. श्री हेमचन्द्राचार्य चरण पादुका
2. श्री हरिभद्रसूरि चरणपादुका
3. खरतर बिरूद धारक जिनेश्वर सूरि चरण पादुका
4. श्री जिन कान्तिसागर सूरि चरण पादुका
5. नवांगी वृतिकार श्री अभयदेव सूरि पादुका,

वेदी पर लेख है कि श्रीमती नानी बाई प्रतापसिंह गांधी पुत्र हेमन्त पुत्र वधू निर्मला पौत्र मनोज अजीत पौत्री लक्ष्मी गांधी परिवारेण

उत्तरी दीवार पर सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर आलिए में श्री पद्मावती देवी की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2054 वै. शुक्ला 6 उदयपुर नगरे श्री पद्मावती देवी बिंब प्रतिष्ठित खरतरगच्छे आ. श्री जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागरेण श्रीमती रमादेवी पुत्र श्री जगत राज सुरेश शेलेन्द्र विपिन लोढ़ा परिवार

निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाहिनी ओर (दक्षिणी पश्चिमी कोने के पास) श्वेत पाषाण की 22'' वर्गाकार एक वेदी है, जिस पर निम्न चरण पादुकाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री जिन हर्ष सूरि गुरुभ्यों नमः
2. ऊँ ह्री श्री .....
3. बीच में गोडी पार्श्वनाथ भगवान की चरण पादुका (गोडी पार्श्वनाथ तीर्थ वारे नमः)।
4. श्री जिनदत्त सूरि गुरुभ्यों नमः
5. श्री जिन कुशल सूरिगुरुभ्यों नमः

इसके नीचे लेख है :–

स्वस्ति वि. संवत् 1855 वर्षे शाके 1721 प्रवर्तमाने मासातमासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे एकादशीम तिथौं बुधवासरे श्री बृहद खरतरगच्छे पीपलिया गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरि शिष्य पं. गोकलचन्द्र श्री हर्षेण श्री पंच परमेष्ठि स्थापन करातं श्री जिनदेव सूरि आदेशात् उदयपुर नगरे घोब करापित श्री भीमसिंह जी विजयराज्ये पादुका सन्ते (ये पादुकाए पूर्व में एक गुम्बजनुमा छतरी में स्थापित थीं जो तोरण बावड़ी के नाम से जानी जाती है।

दक्षिणी दीवार पर (दक्षिणी पूर्वी कोने के पास एक आलिए में) श्री नाकोड़ा भैरव की प्रतिमा 21'' ऊँची पीत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2054

वै. शुकला 6 उदयपुर नगरे श्री नाकोड़ा भैरव बिंब प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आ. श्री जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागरेण श्रीमती रमादेवी पुत्र श्री जगत राज सुरेश शैलेन्द्र विपिन लोढ़ा परिवार

भूतल पर बने मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री दादा श्री जिनदत्तसूरिजी की खड़ी प्रतिमा 71'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– श्री उदयपुर नगरे वि.सं. 2054 वैशाख सुद 6 दादा गुरुदेव

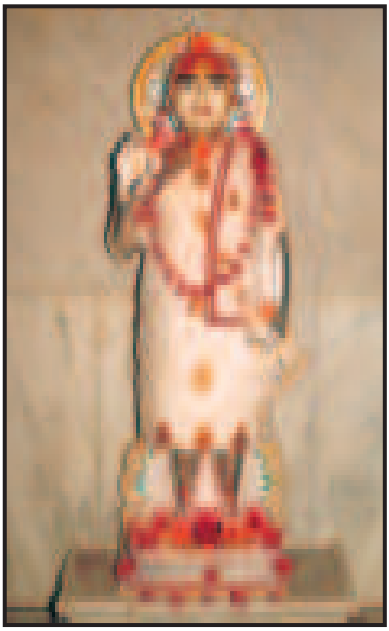

श्री जिनदत्त सूरि बिंब खरतरगच्छे जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण स्व. पिता श्री ख्यालीलाल जी माता मोहनबाई भगिनी पिस्ताबाई स्मृतौ पुत्र सुन्दरलाल मोहन सिंह चन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह इन्द्रसिंह नरेन्द्रसिंह पुत्री कौशल्या पौत्र राजीव विपुल कपिल नीरज अनुराग प्रतीक चिराग दलाल सुराणा परिवारेण कारापितं सोमवार दिनांक 12.5.1997

प्रतिष्ठा :– वि.सं. 2054 वैशाख सुद 6 तारीख 12 मई 1997 सोमवार उदयपुरे–युगप्रधान दादागुरुदेव श्री जिन दत्तसूरि विराजमान बिंब प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे आ. जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण स्व. श्रीमान् केशरीमल जी लोढ़ा की पुन्य स्मृति में धर्म पत्नी श्रीमती रमादेवी लोढा पुत्र पुत्रवधू जगत मंजु राज हर्षिला सुरेश–विमला शैलेन्द्र–आशा विपिन–भारती पौत्र पौत्रवधु कपित–शिल्पा आनन्द निखिश समीर अपूर्व हेमन्त पुत्रिया पुष्पा खमेसरा वीना भण्डारी पौत्री उर्वशी सेठिया विभा सीता नेहा निधी पडपोत्र कोशल लोढ़ा परिवारेण कारापितं।

निज मंदिर से बाहर निकलते समय (सभा मंडप में) दाहिनी ओर एक आलिए में गौर भैरव जी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2054 वैशाख शुक्ला 6 सोमे उदयपुरे गौर भेरू प्रतिष्ठित खरतरगच्छे आचार्य श्री जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण स्वर्गीय माता भूरबाई पिता सोहनलाल सिंघवी पुत्र अनिल स्मृते विजयसिंह–जतनबाई पुत्र शान्ति–वीनू, सुनिल, नीना पौत्र सिद्धार्थ सिंघवी, प्रशान्त, अनुभव, श्रद्धा परिवारेणं करापितं''

निज मंदिर से बाहर निकलते समय बाईं ओर एक आलिए में काला भैरवजी की 15'' ऊँची प्रतिमा श्याम पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :– ''वि.सं. 2054

वै. शुद 6 सोमे उदयपुर श्री काला भैरव प्रतिष्ठित खरतरगच्छे आचार्य श्री जिन कान्तिसागर सूरि शिष्य गणिवर्य मणिप्रभ सागरेण स्वर्गीय माता भूरबाई पिता सोहनलाल सिंघवी पुत्र अनिल स्मृतो विजयसिंह जतनबाई पुत्र शान्ति– वीनु सुनील–नीना पौत्र सिद्धार्थ प्रशान्त अनुभव श्रद्धा सिंघवी परिवारेण कारापितं।''

सभा मंडप में ही दक्षिणी दीवार के एक आलिए में (दक्षिणी पश्चिमी कोने की ओर) श्री जिन कान्तिसागर सूरि की प्रतिमा 35'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे लेख है :–

''स्वस्ति श्री खरतरगच्छाधिपति श्री जिन कान्तिसागर सूरि बिंब प्रतिष्ठितं कारितं तस्य शिष्य उपाध्याय मणिप्रभसागर मुनि मुक्तिप्रभसागर साधु मंडल तथैव साध्वी बहन महा. डा. विद्युत प्रभा श्री साधवी मंडल सहितेन जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य मंदिर ट्रस्टेन प्रवृत्त स्वर्गीय प्रमोद श्री शिष्य बहिन महा. डॉ. विद्युत प्रभा श्री प्रेरणया उदयपुर नगरे सूरजपोल वि.सं. 2059 जेठ सूदि 7 सोमवारे शुभं भूयात श्री संघेन।''

इस मंदिर की देख–रेख श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य महाराज का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री श्यामला पार्श्वनाथ मंदिर, सेठ जी की वाड़ी (दादावाड़ी), चेतक सर्कल, उदयपुर

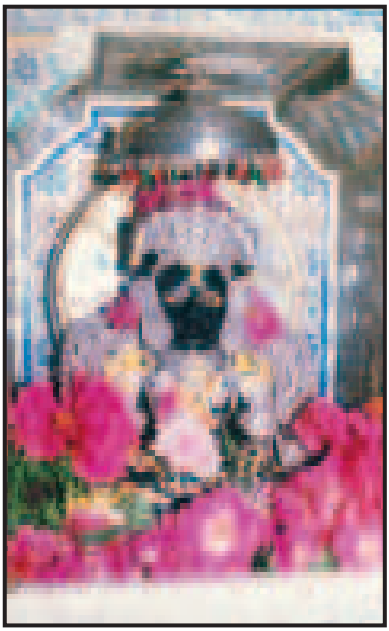

महाराणा भीमसिंह (द्वितीय)के समय में मेवाड़ राज्य की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब हो गयी थी। उसकी देख–रेख के लिए अंग्रेज सरकार ने मई 1818 में वि.सं. 1875 वैशाख माह में कर्नल टॉड को नियुक्त किया था।

कर्नल टॉड के सुझाव के अनुसार राज्य की स्थिति को सुधारने के लिये जैसलमेर के मूल निवासी जोरावरमल जी बापणा जो इन्दौर के अच्छे कुशल व धनी व्यवसायी थे, को बुलाया गया। श्री जोरावरमल बापणा ने उदयपुर आकर राज्य व्यवसाय प्रारम्भ किया और राज्य को अच्छी स्थिति में ले आये। इस पर उनको 26 मई 1827 (वि.सं. 1884 ज्येष्ठ वदि एकम्) को सेठ की उपाधि प्रदान की और बदनोर व परासोली ग्राम जागीर में दिए। इसी समय इस मंदिर का निर्माण करवाया और सन् 1834 (वि.सं. 1890–91) में यह चैत्यालय निर्मित हुआ। चैत्यालय निर्माण करने के बारे में मंदिर के सभा मंडप में खुदा शिलालेख इस प्रकार है :–

''एवं (190)?।। श्री सांवलीया पार्श्व समेत शिखरे सुगण सं सेव्ये। त्रिजगन्नाथ साधीन माम्पदं शुद्ध चित्तेन ।।1।। दादा जिनदत्तारव्यं यतीश्वरं योगिराज संपूज्य दादा जिन कुशल गुरुणां देह सर्वदा भत्तवत्या।।2।।? संघ (जोक) राजेन्द्र चन्द्र सुमिते सन्माघवे मासि च पक्षे शुक्ल मनोरमे विधिषणे घस्ये दशम्यां तिथौ। पादा रव्ये परमेद पर्व कलिते देशे च जैनान्विते अत्तुंगाद्रि जिनेन्द्र चैत्य सहिते रम्पोदया रव्ये पुरे।।3।। सीसोदिया वंश वरे श्री सिरदार सिंहजि राणानां विजयिराज्ये नीर्ति मार्ग प्रवर्त के ।।4।। भूपात्म जं सर्व्व कलाविज्ञो दुदयपुरे श्री मत्सरूप सिंघारव्यो युवराज पदे ।।5।। जेसलदुर्ग वास्तव्य बाफणा गोत्र दीपकः नाम्रा गुमान चन्दो भूनामदेम्यो गुरुभक्ति कृत् ।।6।। पुत्राः स्युः पंच तस्येते प्रभव चन्द्रेवोवमाः वहादरमल्लः श्रीमान् सवाई रामवः सुधीः।।9।। मुख्यो मगनीराम श्री जोरावर मल्ल जित्। प्रतापचंद्र प्रपुटर थैः तेषां सुतादयः।। चा विद्वान् वभूव सिघांरव्यो दक्षो हि दान मल्ल जित् श्यामसिथे भुवि ख्यातः प्रोणे हिम्मतराकः ज्येष्ठ मल्लः शास्त्र श्रोता प्राश्रश्चानण मल्लकः गंभीरमल्लेन्द्र मल्लौ सुज्ञौं च शील शालिनौ ।।9।। इत्यादि पुत्र पौत्राणां परिवृतैः समि सुर्धा

कर्मज्ञैः कृत सुकृत कार्य कैः।।10।। पुण्डरीकादि तीर्थाणां संघ यात्रादि कारकैः सिंघवी बिरुद प्राप्तैस्तैरा रामे प्रकारितम् ।।11।। श्री समेत शिखरादि चेत्यं चारुतरं महत् नखमित सर्वागारं चेतः प्रह्लाद कारकम्।।12।। प्रतिष्ठितं तत् श्री गणमृम्दि गुर्णान्वितैः बृहत्त्वर तर गच्छे श्वरैः भट्टारकैः स्वयम् ।।13।। श्री जिन हर्ष सूरीन्द्र पट्ट भास्कर सन्निभैः श्री जिन महेन्द सूरि सूरीशैः शास्त्र पारगैः ।।14।। यावत् क्षितौ श्री मेरु मुख्याः शैलाश्च सागराः सन्तीह चन्द्र सूयोश्च (तावन्नन्दीच्चेत्पराट्)?

निज मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमाएँ –

1. निज मंदिर में बीचों बीच श्री पार्श्वनाथ भगवान् की 9'' ऊँची श्याम पाषाण की सुन्दर प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इसके ऊपर चाँदी का मुकुट है। इस पर कोई लेख नहीं है। सामने की दीवार पर 24 तीर्थंकरों के चित्र बने है।

पाषाण व धातु की उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र :–

1. जिनेश्वर भगवान की 3'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
2. जिनेश्वर भगवान की 5'' ऊँची सप्त धातु की प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. जिनेश्वर भगवान् की आकृति का सप्त धातु का एक पतरा 3'' वर्गाकार का है। इस पर केवल सारतनश्री लिखा है।
4. पाश्वनार्थ भगवान की 3'' ऊँची सप्त धातु की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''बाफणा रायचंद सं. 1611 (?)
5. जिनेश्वर भगवान की आकृति 5'' वर्गाकार के सप्त धातु के पतरे पर है। इस पर भी कोई लांछन एवं लेख नहीं है।
6. पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची सप्त धातु की प्रतिमा है। इस पर भी कोई लेख नहीं है। केवल सर्प के फणों का छत्र है।
7. जिनेश्वर भगवान की 7'' ऊँची सप्तधातु की प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है, जो बिल्कुल घिस गया है।
8. श्री धर्मनाथ भगवान की 7'' की सप्त धातु की प्रतिमा है। इसके पृष्ठ भाग में यह लेख है :–

   ''संवत् 1710 वर्षे मार्ग सुदि 10 रवों उस ज्ञातीय कटारीया गोत्रे श्री हेमराज भार्या हेमादे पुत्र गुमानचंद भा. सीमादे पु मूल (समदा)? तत् पितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिम्बं कारितम् प्रतिष्ठितं रत्नपुरीय गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः।।''

10. श्री पार्श्वनाथ जी की 3'' ऊँची सप्त धातु की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :– ''सवत् 1710 फा. शु. 6 श्री देवेन्द्र''
11. चांदी के पतरे पर लक्ष्मीदेवी की आकृति बनी हुई स्थित है।

तांबे के यंत्र :–

1. तांबे का गोल सिद्ध चक्र यंत्र 23'' व्यास का है। इस पर यह लेख है :–

   ''संवत् 1898 रा. शा. 1764 रा वैशाखमासे शुक्ल पक्षे दशमी तिथौ गुरुवासरे श्री सिद्ध चक्र यत्रं पू बाफणा गुमानचन्द सुत जोरावरमल्ल चि. चानण मल्ल पौत्र गंभीर मल्लेन्द्र इन्द्र मल्लेन कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्परवरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः।

2. ऋषि मंडल यंत्र 23'' व्यास का है। लेख इस प्रकार है :–

   ''संवत् 1878 वर्षे मिति फाल्गुन वदि 5 दिने श्री ऋषि मंडल यंत्रं बाफणा बहादर मल्ल भ्रातृ जोरावर मल्लेन कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्परवरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः उदयपुर नगरे।''

3. ताम्बे का एक ऋषि मंडल यंत्र 23'' व्यास का है। उस पर लेख है :–

   ''संवत् 1899 रा वर्ष शाके 1764 माघ मासे शुक्ल पक्षे दशमी तिथौ गुरुवासरे दिन श्री ऋषि मंडल यंत्रं बाफणा जोरावर मल्ल चिरं चानण मल गंभीरमल इन्द मलेण कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्परवरतर गच्छे भट्टारक श्री मज्जिन महेन्द्र सूरिभिः श्री मदुयपुर नगरे।।''

4. ताम्बे का सिद्ध चक्र यंत्र 23'' व्यास का है। इस पर लेख है :–

   ''संवत् 1878 वर्षे मिति फाल्गुन वदि 5 दिने श्री सिद्ध चक्र यंत्रं बाफणा बहादर मल्ल भ्रातृ जोरावर मल्लेण कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत् खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः उदयपुर नगरे।।''

5. उक्त आकार से छोटा एक ऋषि मंडल यंत्र है।

6–7. दो चौकोर आकार के अष्ट मंगल यंत्र स्थापित है।

सभा मंडप में स्थापित प्रतिमाएँ :–

1. सभा मंडप में दाहिनी ओर एक आलिए (देवरीनुमा) में अधिष्ठायी देवी पद्मावती की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसके निम्न भाग में यह लेख है :–

   ''सवत् 1899 शाके 1764 प्र. मिति वैशाख शुक्ला छः षष्टम्यां गुरौ ज. युग प्रधान श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री पद्मावती मूर्तिः करापिता सा श्री जोरावर मल्लेन सपरिवारेण।।''

2. बाईं ओर के आलिए में श्री चक्रेश्वरी देवी की 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर यह लेख है :–

   ''संवत् 1899 शा. 1764 मिति शुक्ला षष्टम्यां गुरों श्री जिन महेन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्री चकेश्वरी मूर्तिः कारापिता सा श्री जोरावर मल्लेन सपरिवारेण।।''

3. सभा मंडप की पश्चिमी दीवार में (सभा मंडप में प्रवेश करते समय दाहिनी ओर)

लक्ष्मी देवी की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– सं. 2041 वर्षे मा.कृ. 3 बापना परिवारेण लक्ष्मी देवी का.प. जिन कान्तिसागर सूरिभिः।''

4. सभा मंडप में प्रवेश करते समय बाईं ओर सरस्वती देवी की 17'' ऊँची प्रतिमा श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''सं. 2041 वर्षे मा.कृ. 3 बापणा परिवारेण सरस्वती देवी का.प्र. जिन कान्तिसागर सूरिभि''

निज मंदिर का आकार 17 फुट X 7 फुट है, यह आयताकार है। इसकी दीवारों पर सुन्दर भित्ति चित्र बने है तथा सामने की दीवार पर श्री सम्मेद् शिखर की रचना सफेद पाषाण में खुदाई करके की है। दाहिनी ओर दक्षिणी दीवार पर सिद्धाचल का पट्ट बहुत ही सुन्दर बना हुआ है तथा बाईं ओर उत्तरी दीवार पर सिद्धचक्र व गिरनार तीर्थ का चित्र बहुत ही आकर्षक बना हुआ है। श्री सिद्धाचल के निर्माता तथा समय के सम्बन्ध में निज मंदिर के दक्षिण पश्चिम के कोने में यह लेख है :–

''श्री सिद्धाचल जी सहाय छैः ।।?।। संवत् 1899 रा वृषे मिती चैत्र वदि सप्तमी तिथौं/वार बुध/श्रीमत् बृहत्परवरतर भट्टारक गणाः (?) जंगमयुग प्रधान/भट्टारक/पुरंदर/भट्टारक शिरोमणि/भट्टारक/श्री श्री श्री श्री श्री 1008 श्री श्री श्री श्री श्री श्री जिन महेन्द्र सूरि जी महाराज जीनु श्री समेत शिखर जी री प्रतिष्ठा करण सारू बुलाया। सो प्रतिष्ठा/वैशाख सुदि 10 वार वृहस्पति रो कीनी। चतुरमास विण श्री जी महाराज जीनु ने जती साधु गणौ 51 तिंगधूप आदमी सिपाई जणा 25 संसु। मासू 12 रेष्या। बाफणा सिंघवी सेठजी श्री श्री जोरावर मल्ल जी। तत्पुत्र। श्री चांदणमल्ल जी तत्पौत्रा श्री गंभीरमल्ल जी इन्द्रमल्ल जी इणारी आज्ञासु खरतर भट्टारक गणना/प्राप्त श्री नेमिचन्द जी रे शिष्य पं. नगराज शिष्य पं. चन्द्रभाण सहितेन। श्री सेतु जै जीतो पट्ट भाव चित्र लिखित्वा भारवरात् श्री (भोजतना चौः) श्रीः श्री श्रीः पार्श्वे।।''

दादा सा. की पादुकाएँ :–

मूल मंदिर के बाएँ भाग में (उत्तर की ओर) एक देवरी में दादा गुरु श्री जिनदत्त सूरि तथा श्री जिन कुशल सूरि की पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं। यह देवरी गुम्बजाकार मंदिर के रूप में निर्मित है। देवरी में 21'' ऊँची तथा 21'' व्यास की कमलाकार श्वेत पाषाण की गोल वेदी पर बनी छोटी वेदी पर उपर्युक्त गुरुओं की पादुकाएँ स्थापित है। इसके ऊपर लेख है :–

''ऊँ नमः सिद्धां शुभ संवत् 1886 रा शा. 1751 प्रवर्त माने मासोत्तमें मासे आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे नवम्यां तिर्थो भृगुवासरे श्रीमदुदयपुर नगरे श्रीमत् बृहत्परवरतर गच्छे सूरीश्वर सकल सूरीश्वर गुरुजी जंगम युग प्रधान दादा साहिब जिनदत्त सूरि जी महाराज साहिब जंगमयुग प्रधान भट्टारक श्री जिनकुशल सूरीणां पादुका करापितं श्री समस्त श्री संघेन जैसलमेर वास्तव्य ऊसवाल वृद्धि शाखायां बाफणा गोत्रे सेठ गुमानचन्द पुत्र

बहादर मल्ल/सवाई सिंह/मगनीराम/जोरावर मल्ल/प्रताप मल्ल सपरिवारेण करापितं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतर गच्छे जंगमयुग प्रधान भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिजी विजय राज्ये श्री कीर्तिरतन सूरि शाखायां उपाध्याय श्री चारित्रोदय गणिवराणां तत् शिष्य पं. प्राज्ञ र्द्वि उपदेशात् भद्रं भूयात् श्रीस्तु।।''

पादुका के पीछे (पूर्व की ओर) दादा श्री जिनकुशल सूरि जी महाराज की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :– उदयपुरे ई.सन् 11.11.84 बापना परिवारेण जिन कुशलसूरि बिम्बं का प्र. जिनकांतिसागरसुरिभि। दादा सा. की देवरी को सम्पूर्ण रूप से स्वर्ण रेखा से रेखांकित कराया है। इसके पास ही उत्तरी दीवार में एक आलिए में श्री नाकोडा भैरव जी की प्रतिमा दिनांक 2.12.04 को स्थापित की है।

निज मंदिर व सभा मंडप के दक्षिण की ओर मंदिर को आगे बढ़ाकर नया मंदिर निर्माण कराया गया, जिसमें निम्न प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित है :–

1. आदेश्वर भगवान की प्रतिमा (प्राचीन) 41'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

''स्वस्ति श्री उदयपुर नगरे दादावाटिकायां सं. 2041 मार्ग कृ. 3 रवौ बाफना गौत्रीय सेठ जोरावरमल जी सतानीय सेठ छगनमल सिरेमल सुमेरमल संग्रामसिंह पुत्र पौत्रेः प्रतापसिंह केसरसिंह नरेन्द्रसिंह राजेन्द्रसिंह विजयसिंह डा. यशवंत सिंह अमरसिंह करणसिंह अभयसिंह राजेन्द्र सिंह तेजसिंह चन्द्रसिंह। हरनाथसिंह गिरिश कुमार महेन्द्र सिंह, उमरावसिंह। अजय, दीपक, विनय, उपेन्द्र, प्रमोद, नरेन्द्र, संदीप, अमीत, कमल, दीपक, ऋषभ, पीयूष,राहुलः। श्री केशरियानाथ प्रभोः प्राचीन प्रतिमा कारापित प्रतिष्ठापित खरतरगच्छाचार्य जिनकान्तिसागर सूरि मुनि मणिप्रभ्सागरादिभिः।

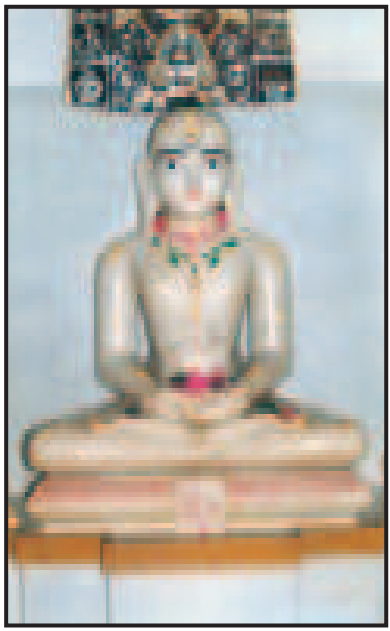

धातु की उत्थापित प्रतिमाएँ :–

1. श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा 9'' ऊँची है। चिह्न हरिण स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।
2. श्री आदेश्वर भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। ऋषभ का चिह्न स्पष्ट है। कोई लेख नहीं है।

निज मंदिर के बाहर :–

मंदिर में प्रवेश करते समय बाईं ओर एक आलिए में हाथी पर बिराजे हुए गौमुख यक्ष की प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर लेख है :– उदयपुरे सं. 2041 मार्ग कृ. 3 गौ मुख यक्षः (आगे अक्षर मिट गये है) और दाहिनी ओर एक आलिए में चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा 7'' ऊँची है। इस पर लेख है :– उदयपुरे सं. 2041 मार्ग कृ 3 चक्रेश्वरी देवी प्रतिमा का. प्र. कान्तिसागर सूरिभिः

बाहरी सभा मंडप में :–

बाईं ओर उत्तरी दीवार के एक आलिए में 17'' ऊँची श्याम पाषाण की पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा (मस्तकपर सर्प का छत्र है) है। दाहिनी ओर दक्षिणी दीवार के एक आलिए में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इन दोनों प्रतिमाओं पर लेख है :–

उदयपुर ई. सन् 11.11.1984 बापना परिवारेण पार्श्व जिन बिम्ब का.प्र. जिन कान्तिसागर सूरिभि। इसके पास ही इसी दीवार के आलिए में श्री घंटाकर्ण महावीर जी की प्रतिमा श्वेत पाषाण की स्थापित है। दिनांक 2.12.04 को भरायी।

शुचदास जी की छतरी

यह छतरी 24'' ऊँचे श्वेत पाषाण के चबूतरे पर श्री शुचदास जी की मूर्ति 23'' ऊँची है। हाथ जोड़े हुए प्रसन्न मुद्रा में आसान पर बैठी हुई हैं। आसन के आगे 2 सिंह बने है तथा छतरी के चारों कोनों पर 19'' ऊँची चार परिचारिकाएँ बनी हैं। छतरी के ऊपरी भाग में यह लेख है, जिसका कुछ अंश नष्ट हो गया है :–

''स्वस्ति श्री ।। ऊ ह्री.। विक्रम संवत् सोम तोनु गुणी से गुणपचास श्री बुध दसमी शुचदास मूर्ति सूत्रवान् मल्ल भक्ति गुणरवान प्रतिष्ठा प्रेमसु शिरदार मल्लः।।''

आँगन के बाहरी ओर (पश्चिम की ओर) एक बरामदा है, उसी में प्रवेश द्वार है। द्वार के पास ही एक बावड़ी है, जो अभी स्वच्छ पानी प्रदान करती है। बावड़ी के सामने (दक्षिण की ओर) एक शिव मंदिर भी है। इस मंदिर की देख–रेख बापणा वंश के श्री राजेन्द्रसिंह जी द्वारा की जाती है।

❑❑❑

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भुवाणा, उदयपुर

यह मंदिर उदयपुर नाथद्वारा सड़क मार्ग पर (राष्ट्रीय सड़क नम्बर 8) दाहिनी ओर स्थित है, जो उदयपुर से करीब 6 किलोमीटर दूरी पर है। यह शिखरबंद मंदिर है।

इस मंदिर के निर्माण–प्रतिष्ठा काल के बारे में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। स्थापित प्रतिमा प्राचीन है और संप्रति राजा के समय की है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान (मूलनायक) की प्रतिमा 19'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। प्रतिमा के नीचे कोई लेख नहीं है। स्थापत्य कला के आधार पर प्रतिमा प्राचीन है और लांछन स्वास्तिक भी बनावट के बाद का है ऐसा प्रतीत होता है। ऐसा भी प्रतीत होता है कि प्रतिमा के पार्श्व भाग में कुछ उत्कीर्ण है, लेकिन सीमेंट चूने में दब जाने के कारण पढ़ा नहीं जा सकता।
2. श्री सुविधिनाथ भगवान की प्रतिमा (मूलनायक के बाएँ) 17'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके पबासन पर लेख है :– ''श्री सुविधिनाथ बिंब''
3. जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा (मूलनायक के दाहिनी ओर) 23'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। इसके नीचे कोई लेख नहीं है। प्रतिमा काफी प्राचीन प्रतीत होती है।

वेदी के नीचे बीच में :–

4. श्री गोतम स्वामी की प्रतिमा 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की है। गोतम स्वामी के मस्तक पर भगवान की प्रतिमा विराजित है। जिसकी कुल ऊँचाई 15'' है। इसके नीचे व दोनों तरफ लेख है, जिसको सीमेंट चूने में दब जाने से सही पढ़ा नहीं जा सकता, जो पढ़ा जा सकता है, वह यह है :–

   ''श्री गोतम स्वामी की मूर्ति रियं महावीर जिन सहित कारितां भीलवाड़ा वास्तव्य .. ..नाहर गौत्रे. .....प्रतिष्ठिता तपा. आ. प्रेम सूरीश्वर शिष्य भुवन भानु सूरीश्वर शिष्य जितेन्द्र सूरीश्वर.....''

1. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र 4'6'' व्यास का है। इसके नीचे यह लेख है :–

स्वस्ति श्री सिद्ध चक्र यंत्र श्री हसंजिस तप हुडियार श्री भानिया नगरे प्रतिष्ठितं तपा. गच्छाधिपति सूरि सार्व भोभ आचार्य देव श्री मद विजय रामचन्द्र सूरीश्वरैः वि.सं. 2040 वीर सं. 2510 माघ मासे अक्षय तृतीया.....वासरे कारितंच उदयपुर निवासी हिम्मतमल देवीचन्द्र कोठारी विशाल गौत्रीय फेरवाड़ जातीय परिवारेण शुभलाभ।''

2. पंच तीर्थी पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा 8'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है :– वि.सं. 2043 ज्येष्ठ सुद शुक्रे खापर नगरे श्री पार्श्वनाथ जिन पंच तीर्थी कारापितां तपा. गच्छाधिपति आचार्य श्री देवेन्द्र सागर सूरीश्वर शिष्य पं. नरेन्द्र देव सागरेण एवमं शिष्य श्री चन्द्र कीर्ति सागर मुनि का. आ. श्री सुशील सूरि आज्ञाकित श्री मनोज कुमार हिरण द्वारा 1008 महापूजन पूर्णाहुति निमिते पुन्य सिघवीं वीरचन्द्र हुक्मा जी परिवारे कारापितं .....महोत्सव स्व. सुखीदेवी आत्मा/श्रेयोर्थ भीमराजन

3. पंच तीर्थी आदिनाथ भगवान की प्रतिमा 6'' ऊँची है। इसके पीछे लेख है :– सं. 2531 वर्षे प्रागवाट जाति शा. देवा भार्या देलु पुत्र मुगनुज शा. ठाकुरेण भार्या तेजु प्र. कुटुम्बर युतेन श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपा. श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः पाल ग्रामे

मंदिर के सभा मंडप में.....चारों ओर दीवारों पर श्री सम्मेत शिखर जी तीर्थ, राजगृही तीर्थ, श्री सीमन्धर स्वामी, श्री केशरियाजी, श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ, श्री घंटाकर्ण महावीर जी, मणिभद्र जी, जम्बूदीप महावीर स्वामी, नाकोड़ा भैरवजी व शंखेश्वर पार्श्वनाथ के चित्र (पट्ट) लगे हैं।

सभा मंडप से बाहर निकलते समय बाहरी सभा मंडप में दीवार पर दरवाजे के दोनों ओर श्री शत्रुन्जय महातीर्थ व श्री गिरनार जी महातीर्थ के पट्ट लगे हैं।

मंदिर में प्रवेश करते समय प्रथम दरवाजे के दाहिनी ओर एक आलिए में श्री पार्श्वयक्ष की व बाईं ओर के आलिए में श्री भैरवजी की प्रतिमा स्थापित है।

इस मंदिर की देख–रेख के लिये एक ट्रस्ट बना हुआ है, जिसके मुख्य ट्रस्टी श्री ऋषभलाल जी उदावत है।

❑❑❑

श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, बेदला, उदयपुर

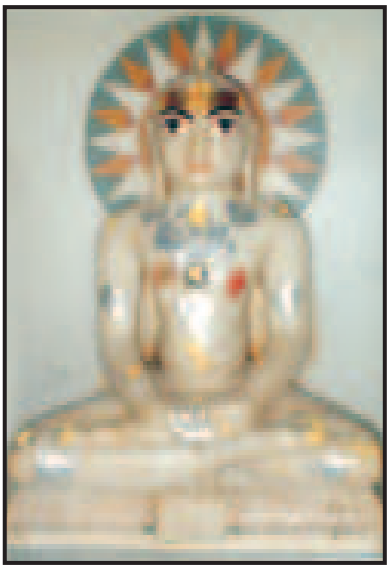

यह मंदिर ग्राम बेदला के महल (रावला) के पास (रावला के चार दीवार के पास) स्थित है।

मंदिर में शिलालेख नहीं है और प्रतिमाओं के नीचे उत्कीर्ण लेख के आधार पर भी निर्माण काल का पता नहीं लगता।

मंदिर की निर्माण कला के आधार पर यह मंदिर करीब 300 वर्ष पुराना है।

इतिहास के आधार पर देखा जाय तो बेदला ग्राम की जागीरी महाराणा अमरसिंह (1653–76) द्वारा राव बल्लू चौहान को दी। रावल (महाराणा) जैत्रसिंह ने फरमान जारी किया कि जहाँ पर भी किला बनेगा वहाँ आदिनाथ जी का मंदिर निर्माण भी किया जावेगा। उसी आधार पर सम्भवतया महल बनाते समय चारभुजा जी का मंदिर व जैन श्वेताम्बर मंदिर भी बने हो।

चारभुजा जी मंदिर के सामने दिगम्बर जैन मंदिर निर्मित है। दिगम्बर जैन मंदिर महाराणा राजसिंह (1709–1737) के समय में बना है। जैन श्वेताम्बर मंदिर इस काल के पहले अर्थात् (1653–76) का होना चाहिए, यदि इस तथ्य को स्वीकार न भी करें तो समकालीन तो मानना ही होगा। इस आधार पर भी यह मंदिर करीब 300 वर्ष पुराना है। जानकारी करने पर यह भी ज्ञात हुआ कि यह मंदिर उदयपुर बसने के पूर्व का है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :–

1. मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान 15'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। वेदी पर ऋषभ का लांछन स्पष्ट है। पबासन पर यह लेख है, जो अस्पष्ट हैं :– ''.....श्री ऋषभदेव बिंब ..... उस वंशीय शाखाया बोलीया गौत्रे सा. इन्द्रभाण जी भार्या मान बाई पुत्र वेलजी भार्या माल बाई कारापितं प्रतिष्ठित'' (सीमेंट में दब गया है)।
2. मूलनायक के दाहिनी ओर 10'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लेख बिल्कुल घिस गया है, पढ़ा नहीं जा सकता। यह प्रतिमा सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ मंदिर उदयपुर से सं. 1936 में इस मंदिर में पधरायी गयी है। इस प्रतिमा को नेमीनाथ भगवान की मानते है।

3. मूलनायक के बाईं ओर 11'' ऊँची श्याम पाषाण की प्रतिमा है। लांछन व लेख नहीं है। यह प्रतिमा भी सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ मंदिर, उदयपुर से सं. 1936 में इस मंदिर में पधरायी गयी है। इस प्रतिमा को पार्श्वनाथ भगवान की मानते है।

चल धातु की उत्थापित प्रतिमाएँ :–

1. पंच धातु की अभिनन्दन स्वामी की 6'' ऊँची पंच तीर्थी प्रतिमा है। ऊपर से खंडित है। इसके पृष्ठ भाग में लेख है :– संवत 1484 ज्येष्ठ सुदि 3 स जातीय वृद्ध गोत्रे हरीआ भा. पालू पुत्र अर्जन मातु पितु श्रेयोर्थ आत्म श्रेयान्ति श्री अभिनन्दन बिंब कारितं संघदत्त सूरिभिः।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3'' ऊँची पीतल की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– सं. 753 वर्षे .....घरमदास।
3. गोलाकार सिद्ध चक्र यंत्र पीतल का 4'' व्यास का है। इसके किनारे पर लेख है :– वि.सं. 2042 वैशाख सुदि 5 सिद्ध चक्र यंत्र सादडीवाले चुन्नीलाल धर्मपत्नी लहरी देव्या का प्र. श्री संघ ने हिमाचल सूरि प. विद्यानन्द विजय गणिभि।

4–5. श्री धर्मनाथ जी की पंचतीर्थी प्रतिमा व सिद्ध चक्र यंत्र पीतल का (ये दोनों प्रतिमाएँ श्री जोरावरमल जी जैन ने अस्थायी रूप से पूजा के लिये मंदिर में पधरायी)।

सभा मंडप में :–

पश्चिमी दीवार पर श्री सिद्धाचल जी (आदेश्वर भगवान) व श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ के चित्र है। उत्तरी दीवार पर श्री गौतम स्वामी श्री शत्रुन्जय तीर्थ, व शांतिनाथ भगवान के चित्र हैं।

पूर्वी दीवार पर श्री महावीर स्वामी व श्री नेमिनाथ भगवान के चित्र है।

दक्षिणी दीवार पर यति श्री अनूपचन्द, अष्टापद तीर्थ व नागेश्वर पार्श्वनाथ के चित्र है।

पूर्व में इस मंदिर की देख–रेख श्री बोहतलाल जी धाकड़ करते थे। आज भी उनके वंशज इसकी आमदनी व खर्च का हिसाब रखते हैं।

निज मंदिर के बाहर निकलते समय दाहिनी ओर एक आलिए में गौमुख यज्ञ की 11" ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

गौमुख यक्ष प्रतिष्ठितं तपा आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च स्व. पिता श्री रोशनलालजी माता गुलाब कुँवर भ्राता भंवरलालजी महेन्द्र बहिन मीना बोल्या स्मृतौ पुत्र मोहनलाल सुशीला बोल्या वै.कृ. 12 वि.सं. 2062.

इसी प्रकार बायें आलिए में – चक्रेश्वरी देवी की 11" ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :–

चक्रेश्वरी दिव्या प्रतिष्ठितं तपा आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च स्व. बसन्त कुंवर श्रेयोर्थ मोहनलाल सुशीला बोल्या नीलम अशोक मादविया नीता सुरेन्द्र धुप्या निशी अशोक खमेसरा नीना किशोर पगारिया नीरू राजेन्द्र लोढ़ा वै.कृ. 12 वि.सं. 2062.

सभा मंडप से बाहर निकलते समय दाहिनी ओर गोखड़े में नाकोड़ा भैरव जी की प्रतिमा 11" ऊँची पीत पाषाण की है। इस पर लेख है :–

नाकोड़ा भैरव प्रतिष्ठितं तपा.आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च मोहनलाल सुशीला बोल्या।

इसी प्रकार बाईं ओर गोखड़े में पद्मावती देवी की 11'' ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इस पर लेख है :– ''पद्मावनी दिव्या प्रतिष्ठितं तपा. आ. जितेन्द्र सूरिभि कारितं च मोहनलाल सुशीला बोल्या, नीरू राजेन्द्र लोढ़ा (पुत्री–दामाद) वैशाख कृष्णा 12 वि.सं. 2062. इस मंदिर की देख–रेख जैन श्वेताम्बर महासभा द्वारा की जाती है।

❑❑❑